HISTORY 18

by anubhav

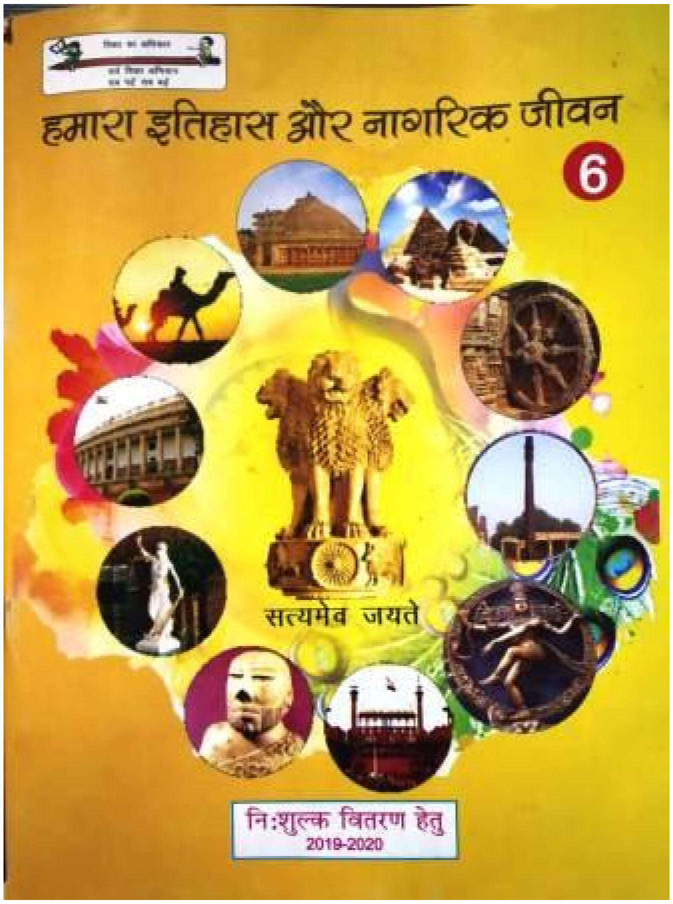

E-BOOKS DEVELOPED BY

1. Dr.Sanjay Sinha Director SCERT,U.P,Lucknow
2. Ajay Kumar Singh J.D.SSA,SCERT,Lucknow
3. AlpaNigam (H.T)Primary Model School,TilauliSardarnagar,Gorakhpur
4. Amit Sharma(A.T)U.P.S,Mahatwani ,Nawabganj, Unnao
5. Anita Vishwakarma (A.T)Primary School ,Saidpur,Pilibhit
6. Anubhav Yadav(A.T)P.S.Gulariya,Hilauli,Unnao
7. Anupam Choudhary(A.T)P.S,Naurangabad,Sahaswan,Budaun
8. Ashutosh Anand Awasthi(A.T)U.P.S,Miyanganj,Barabanki

9. Deepak Kushwaha(A.T)U.P.S,Gazaffarnagar,Hasanganz,unnao
10. Firoz Khan (A.T) P.S,Chidawak,Gulaothi,Bulandshahr
11. Gaurav Singh(A.T)U.P.S,FatehpurMathia,Haswa,Fatehpur
12. HritikVerma (A.T)P.S.Sangramkheda,Hilauli,Unnao
13. Maneesh Pratap Singh(A.T)P.S.Premnagar,Fatehpur
14. Nitin Kumar Pandey(A.T)P.S, Madhyanagar, Gilaula , Shravasti
15. Pranesh Bhushan Mishra(A.T) U.P.S,Patha,Mahroni Lalitpur
16. Prashant Chaudhary(A.T)P.S.Rawana,Jalilpur,Bijnor
17. Rajeev Kumar Sahu(A.T)U.P.S.Saraigokul, Dhanpatganz ,Sultanpur
18. Shashi Kumar(A.T)P.S.Lachchhikheda,Akohari, Hilauli,Unnao
19. Shivali Jaiswal(A.T)U.P.S,Dhaulri,Jani,Meerut
20. Varunesh Mishra(A.T)P.S.GulalpurPratappurKamaicha

पाठ-१

DAYCG6

कैसे पता करें क्या हुआ था और क्या नहीं ?

(इतिहास जानने के स्रोत)

बच्चों क्या आपको अपने परदादा और परदादी का नाम मालूम है ? वे क्या काम करते थे ? वे कैसे रहते थे ? वे कैसे दिखते थे ? इन सबके बारे में आपको कैसे पता चलेगा ?

लिखिए ---

इसी प्रकार यदि हमें आज से हजारों वर्ष पहले के लोगों के बारे में जानना हो तो ? उनके बारे में जानने के लिए हम इतिहास का अध्ययन करते हैं। इतिहासकार अतीत से प्राप्त तथ्यों और साक्ष्यों के

आधार पर, बीते समय की जानकारी देते हैं। इतिहास, बीते हुए समय और उस समय के लोगों को समझने और जानने का एक साधन है।

अतीत में एक ऐसा भी युग था, जब लोग लिखना नहीं जानते थे। उन लोगों के जीवन के विषय में हमें जानकारी उनके द्वारा छोड़ी गई वस्तुओं जैसे- मिट्टी के बर्तन, खिलौने, हथियारों तथा औजारों द्वारा मिलती है। कभी-कभी इन वस्तुओं को जमीन के अन्दर से खोदकर भी निकालना पड़ता है। ये वस्तुएँ ऐतिहासिक जानकारी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वह समय जिसके लिए कोई भी लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है, पूर्व (प्राक्) ऐतिहासिक काल कहलाता है।

जब मानव ने लिखना शुरू किया उसे कागज का ज्ञान नहीं था। वह लेखों को ताड़पत्रों, भोजपत्रों और ताम्रपत्रों पर लिखता था। कभी-कभी लेख बड़ी शिलाओं, स्तम्भों, पत्थरों की दीवारों, मिट्टी या पत्थर के छोटे-छोटे फलकों (टुकड़ों) पर भी लिखे जाते थे। ताड़पत्र-वृक्ष के चौड़े पत्ते, भोजपत्र-एक प्रकार के वृक्ष की छाल, ताम्रपत्र-ताँबे के टुकड़े होते थे

जिन पर लेख लिखे जाते थे। स्तम्भ लेख पत्थर के खम्भों पर लिखे लेख, शिलालेख-पत्थर की बड़ी चट्टानों पर लिखे लेख होते थे। आधुनिक इतिहास के विषय में हमें लिखित और मुद्रित दस्तावेजों से जानकारी मिलती है जिस काल (समय) के इतिहास के विषय में हमें लिखित और मुद्रित सामग्री से जानकारी मिलती है, एवं उसे पढ़ा भी जा सकता है उसका काल को ऐतिहासिक काल कहते हैं। इतिहास की जानकारी के लिए कई प्रकार के स्रोत (साधन) हैं ।

ऊपर दिये चित्र में बताए गये स्रोतों की सूची बनाओ

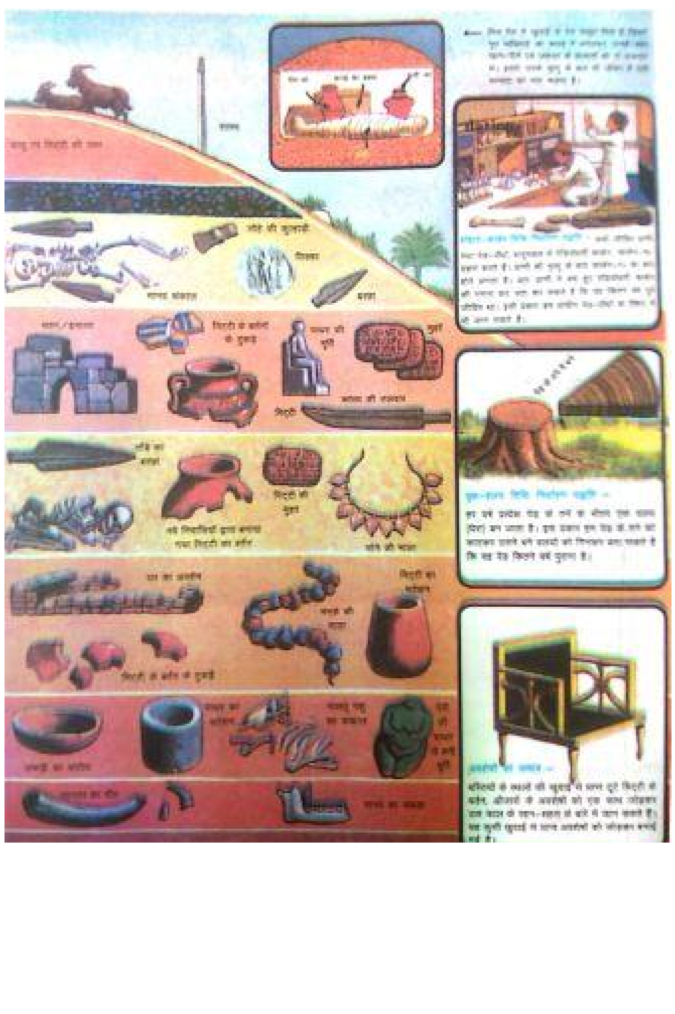

मुद्रा और अभिलेख

मुद्राओं से तत्कालीन शासक का नाम, उसका समय तथा मुद्रा के आकार प्रकार से उस समय की कला तथा धातु से आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही सिक्कों के प्राप्ति स्थल से शासक के साम्राज्य विस्तार का भी पता चलता है।

गुप्तशासक कुमारगुप्त प्रथम को इस मुद्रा पर घुड़सवारी करते हुए दिखाया गया है, जिससे हम कह सकते हैं कि वह एक अच्छे घुड़सवार थे। इस प्रकार मुद्राएँ भी इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

इस सिक्के को देखकर आप और क्या पता कर सकते हैं ? बताइए

साहित्यिक श्रोत :

लुम्बिनी अभिलेख (अशोक)

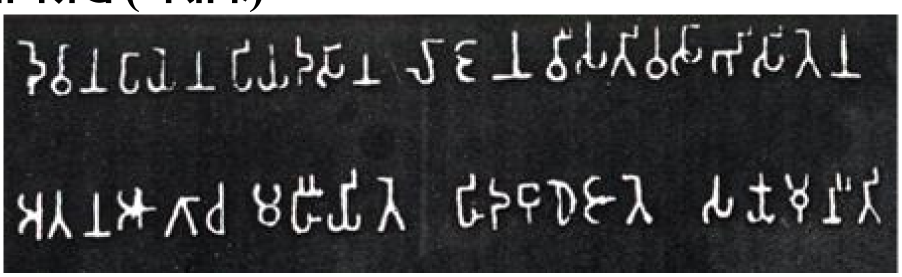

यह अशोक के रुम्मिनदेई अभिलेख का अंश है। जो लुम्बिनी (नेपाल) से प्राप्त हुआ है। इस अभिलेख में अशोक ने यह घोषणा की है कि लुम्बिनी में उपज का आठवाँ भाग कर के रूप में लिया जाएगा। आइए इसके कुछ अक्षर पहचानें

ब्राह्मी लिपि

देवनागरी लिपि दे अ गा

साहित्यिक श्रोत

ताड़पत्रों, भोजपत्रों, ताम्रपत्रों, चमड़े एवं लकड़ी के पट्टों पर लिखित लेखों के साथ-साथ कुछ साहित्यिक ग्रंथों से भी हमें लोगों के रहन-सहन, विचारों, खान-पान इत्यादि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। जैसे-

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	काल का विवरण
धार्मिक साहित्य		
१. वेद	–	* आर्यों के सम्बन्ध में
२. रामायण एवं महाभारत	वाल्मीकि एवं वेदव्यास	* तत्कालीन समाज के विषय में
३. जैन एवं बौद्ध साहित्य, जातक कथा	–	* तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति
धर्मेत्तर साहित्य		
४. अर्थशास्त्र	चाणक्य	* तत्कालीन समाज की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति
५. राजतरंगिणी	कल्हण	* कश्मीर के इतिहास के विषय में
विदेशी यात्रियों के वृत्तांत		
६. इण्डिका	मेगस्थनीज (यूनानी राजदूत)	* चन्द्रगुप्त मौर्य कालीन समाज की झलक
७. यात्रा विवरण	फाह्यान (चीनी यात्री)	* गुप्त काल से सम्बन्धित
८. यात्रा विवरण	ह्वेनसांग (चीनी यात्री)	* हर्ष के शासन काल का विवरण

इस प्रकार पुरातात्विक एवं साहित्यिक दोनों स्रोतों से हमें इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। विदेशी यात्रियों के विवरणों से भी हमें तत्कालीन इतिहास की जानकारी मिलती है।

इतिहासकार इन्हीं स्रोतों से उस समय की कृषि, पशु-पालन, कामगार/शिल्प, काम-धन्धे, व्यापार, नाप-तौल, लेन-देन, कर आदि के आधार पर आर्थिक, घर-परिवार, स्त्रियों की स्थिति, शिक्षा, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, मनोरंजन, त्यौहार, मेले आदि के आधार पर सामाजिक, राजा, प्रजा, प्रशासन, सुरक्षा व सैन्य व्यवस्था के आधार पर राजनीतिक और कला, आचार-विचार, ज्ञान-विज्ञान की मान्यताएँ, धार्मिक विश्वास, देवी-देवता, पूजा-पाठ एवं परम्पराओं के आधार पर धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का वर्णन करते हैं ।

और भी जानिए

महाभारत विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है।

लंदन स्थित ब्रिटिश म्यूजियम विश्व का सबसे बड़ा संग्रहालय है।

. शब्दावली

संग्रहालय-ऐतिहासिक वस्तुओं को सुरक्षित रखने का स्थान।

धर्मेत्तर साहित्य-धार्मिक साहित्य से भिन्न साहित्यिक ग्रन्थ।

अभ्यास

1. उत्तर लिखिए-

(क) प्राचीन काल के मानव किस-किस पर अपने अभिलेख लिखते थे और क्यों?

(ख) पाठ में आपने सम्राट अशोक के किस अभिलेख के बारे में जाना?

(ग) इतिहास लेखन में सिक्के एवं अभिलेख किस प्रकार सहायक होते हैं ? लिखिए।

(घ) मेगस्थनीज की पुस्तक का नाम क्या था?

(ङ) इतिहास जानने के पुरातात्विक व साहित्यिक साधनों (स्रोतों) का वर्णन कीजिए।

2. अन्तर स्पष्ट कीजिए-

(क) प्राक् ऐतिहासिक काल

(ख) आद्य ऐतिहासिक काल

(ग) ऐतिहासिक काल

3. निम्नलिखित से आप क्या समझते हैं ?

(अ) पुरातत्ववेत्ता

(ब) इतिहासकार

4. सही कथन पर सही (झ्) का निशान एवं गलत कथन पर गलत (´) का

निशान लगाइए-

(क) प्राक् (पूर्व) इतिहास जानने के लिए हमारे पास लिखित सामग्री है। ( )

(ख) प्राचीन काल के मानव कागज पर लिखते थे। ( )

(ग) सिक्कों एवं अभिलेख से भी ऐतिहासिक जानकारी मिलती है। ( ) (घ) राजतरंगिणी कौटिल्य (चाणक्य) की रचना है। ( )

(ङ) वेद धार्मिक साहित्य है। ( )

(च) फाह्यान मौर्य काल में भारत आया था। . ( )

5. आप सारनाथ स्तूप देखने जा रहे हैं। स्तूप के बारे में आप क्या-क्या जानना चाहेंगे? अपनी जानकारी के लिए कुछ प्रश्न बनाइए।

प्रोजेक्ट वर्क

वर्तमान में प्रचलित सिक्कों के चित्र बनाइए, और उनकी विशेषताएँ भी लिखिए।

अपने शहर/क्षेत्र/गाँव के विषय में अपने बड़ों/स्थानीय संग्रहालयों एवं कार्यालय से निम्नलिखित जानकारी प्राप्त कीजिए-

आपके गाँव अथवा शहर का नाम कैसे पड़ा ?

यहाँ की कौन-कौन सी वस्तुएँ प्रसिद्ध हैं ?

यहाँ के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय क्या है ? प्राप्त जानकारी पर एक संक्षिप्त लेख लिखकर सूचना बोर्ड पर लगाएँ।

पाठ-2

DIY4AB

पाषाण काल (आखेटक, संग्राहक एवं उत्पादक मानव)

घर हमें जाड़े से, गर्मी से, तथा बारिश से सुरक्षा प्रदान करता है। इसमें रहकर हम अपने सभी कार्यों को भली-भाँति कर लेते हैं किन्तु एक समय ऐसा भी था जब मनुष्य के पास घर नहीं थे। वे जंगलों में रहते थे। जंगली जानवरों से अपनी सुरक्षा तथा उनका शिकार करने के लिये उनके पास केवल पत्थर के ही औजार थे।

मानव में परिवर्तन

मानव शास्त्रियों के अनुसार आज से लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व मानव विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इस समय उसमें कुछ महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन आए। जैसे-

- खड़े होकर सीधे चलना।
- अँगूठे के कारण वस्तुओं को पकड़ने की क्षमता का पैदा होना जिससे महत्वपूर्ण कार्यों को कर लेना।
- मस्तिष्क के आकार एवं क्षमता में विस्तार।

मानव के विकास, विभेद आदि की जानकारी देने वाले मानव-शास्त्री कहलाते हैं।

मानव के शारीरिक विकास की यह प्रक्रिया चलती रही तथा उसमें धीरे-धीरे विकास होता गया जैसा कि नीचे के चित्र से स्पष्ट होता है-

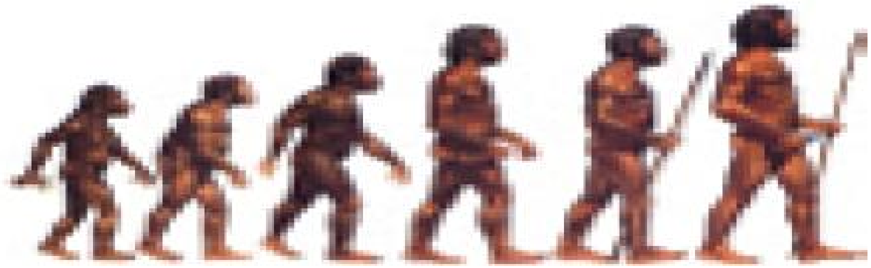

मानव का विकास क्रम

इन महत्वपूर्ण बदलावों के कारण मानव अपने आस-पास के वातावरण एवं परिस्थितियों के साथ सामंजस्य करने लगा। अब उसने हाथ एवं मस्तिष्क का अधिक प्रयोग करना सीख लिया था और वह अपनी जरूरतों के लिए पत्थर के औजारों या उपकरणों का निर्माण करने लगा। इन्हीं पत्थर के उपकरणों से हमें उसके होने का पता चलता है।

पाषाण काल

पाषाण अर्थात् पत्थर, काल अर्थात् समय। मानव ने अपनी रक्षा और अपनी भूख मिटाने के लिए सर्वप्रथम पत्थर के औजरों का ही सबसे अधिक उपयोग किया इसलिए इस युग को पाषाण काल कहते हैं। पत्थर से बने औजारों में समय-समय पर परिवर्तन हुए हैं। इसलिए पाषाण युग को तीन भागों में बाँटा गया है।

1. पुरापाषाण काल2. मध्य पाषाण काल3. नव पाषाण काल

पुरापाषाण काल

पुरापाषाण काल में मानव पहले खुले आकाश के नीचे, नदियों के किनारे या झील के पास रहता था। इससे उसे शिकार करने में आसानी होती थी। वह पत्थर के औजारों से पशुओं का शिकार करता था। शिकार से प्राप्त माँस ही उसका मुख्य भोजन था। कन्दमूल तथा फल भी उसके भोजन में सम्मिलित थे। थोड़े समय बाद मानव ने गुफाओं में रहना प्रारम्भ कर दिया क्योंकि उसे तब तक घर बनाना नहीं आता था। शिकार की खोज में वह लगातार घूमता रहता था। इस प्रकार उसका कोई स्थायी आवास नहीं था। इसी समय उसने आग के प्रयोग की जानकारी प्राप्त की। साथ ही उसने अपने मृतकों को कब्र में दफनाना प्रारम्भ कर दिया। पुरापाषाण काल के आखिरी दौर में उसने चित्र बनाना भी सीख लिया। उस समय की गुफाओं में उसके द्वारा बनाए गए चित्र मिलते हैं। इन चित्रों में

शिकार के दृश्य बनाए गए हैं। इसी समय मानव ने हड्डी के औजार भी बनाना प्रारम्भ किया। यह औजार उसके ज्ञान में वृद्धि विकास को दर्शाते हैं।

इस युग में मानव झुण्ड बनाकर ही शिकार करता था। जिसे वह आपस में बाँटकर खाते था। मानव यह समझ चुका था कि वह तभी जीवित रह सकता है जब वह दूसरों के साथ मिलकर चले। इस प्रकार एक दूसरे का सहयोग करने की भावना इस युग में विकसित हो चुकी थी।

कैसे करते थे शिकार ?

आदि मानव के पास न ही जंगल के जानवरों जैसे पैने नाखून थे, न ही नुकीले दाँत, न जबड़े और न ही सींग। उसकी बड़ी समस्या अपने से ज्यादा ताकतवर जंगली जानवरों से रक्षा करने व उनका शिकार करने की थी। इसके लिए उसने पत्थर के औजारों का निर्माण व प्रयोग किया, क्योंकि उस युग में पत्थर आसानी से प्राप्त हो जाता था।
इस युग के पत्थर के औजार आकृति में सुडौल नहीं थे। ये बेडौल एवं भौड़ी आकृति वाले थे।

आग का पता कैसे चला ?

औजार बनाने के लिए वे एक पत्थर पर दूसरे पत्थर से चोट मारते थे। एक पत्थर से दूसरा पत्थर टकराने पर चिनगारी निकली। निकलने वाली चिनगारी से उन्हें आग का ज्ञान हुआ। इससे वह सूखी पत्तियों, लकड़ी की टहनियों आदि को जलाने लगे।

पुरापाषाण कालीन पत्थर के औजार

सोचिए और लिखिए कि आग का ज्ञान होने के बाद उनके जीवन में क्या परिवर्तन आया होगा ?

आग की खोज इस युग की महान उपलब्धि थी।

मध्य पाषाण काल

मध्य पाषाण काल के औजार (उपकरण) पुरा पाषाण काल की अपेक्षा आकार में छोटे हो गए। इस समय प्रकृति में अनेक परिवर्तन हुए जिसका प्रभाव मानव जीवन पर पड़ा। नई परिस्थिति से तालमेल बैठाने में ही उसने उपकरण छोटे बनाना प्रारम्भ किया। जलवायु पहले की अपेक्षा गर्म हुई फलस्वरूप जहाँ-जहाँ बर्फ जमी थी वह पिघल गई। पृथ्वी की उर्वरक शक्ति का विकास हुआ तथा घास एवं वनस्पतियों के मैदान विकसित हुए। घास को खाने वाले छोटे जानवर जैसे हिरण, खरगोश, भेड़, बकरी आदि पैदा हुए। मानव अपने आप उगी घासों को एकत्र करने लगा। इन घासों में कई आज के अनाजों की पूर्वज थीं। इनका प्रयोग मानव ने अपने भोजन में किया। इस प्रकार वह अब 'संग्राहक' बन गया। मानव ने इसी समय कुत्ते को पालतू बनाया। कुत्ता मानव का प्रथम पालतू पशु है।

कैसे हुआ खेती का ज्ञान ?

विद्वानों का मत है कि अपने आप उगे हुए अनाजों को मानव ने एकत्रित करना शुरू किया। अनाज के कुछ दाने गीली मिट्टी में अथवा इधर-उधर गिरे होंगे। इन स्थानों पर फिर से वही अनाज उगे। जब मानव ने इसे देखा तब उसे ज्ञात हुआ कि इन अनाज के दानों से बार-बार अनाज उगाया जा सकता है। अपने इस ज्ञान का उसने परीक्षण भी किया। तब जाकर उसे खेती का ज्ञान हुआ।

आप गेहूँ के कुछ दानों को गीली मिट्टी या गोबर के ढेर में डालिए कुछ दिन बाद देखिए क्या होता है?

पत्थर से पत्थर पर प्रहार करना

नव पाषाण काल

पुरातत्वविदों का यह मानना है कि मानव ने जब से भली-भाँति खेती करना प्रारम्भ कर दिया तभी से नवपाषाण काल प्रारम्भ होता है। खेती के कारण मानव अब भोजन संग्राहक से भोजन उत्पादक बन गया। इस समय उसके पत्थर के उपकरण अधिक उपयोगी एवं सुडौल थे क्योंकि उन्हें अधिक कुशलता से बनाया गया था। यह उपकरण घिसकर चमकदार बनाए गए थे। हत्थेदार कुल्हाड़ी एवं हँसिया इस समय के महत्वपूर्ण औजार थे। खेती के

साथ पशुपालन भी प्रारम्भ हुआ। पशुआंे का प्रयोग मांस व दूध प्राप्त करने में किया जाता था।

मानव अब अपने खेतों के आस-पास मिट्टी के घरों एवं घास-फूस के छप्पर वाले घरों में रहने लगा। धीरे-धीरे ये बस्तियाँ गाँव बन गए।

मध्यपाषाण कालीन औजार

कुल्हाड़ी एवं हँसिया से क्या-क्या किया जा सकता है सोचिए और लिखिए।

अब ये मिट्टी के बर्तन बनाना भी जान गए थे। पहिये का आविष्कार भी हुआ। इसका प्रयोग मिट्टी से बर्तन बनाने तथा सामान ढोने में किया जाने लगा। बर्तनों पर नक्काशी एवं चित्रकारी में रंगो का प्रयोग होने लगा। खेती के कारण लोग एक ही जगह रहने लगे। फलस्वरूप नये-नये कौशलों का विकास हुआ जैसे- मूँज की टोकरी व चटाइयाँ बनाना, कताई करना, जानवरों के बालों से कपड़ा बनाना आदि।

शवों को दफनाने के ढंग से इनके धार्मिक विश्वास के विषय में जानकारी मिलती है। शवों (मृत व्यक्तियों) के साथ खाने-पीने की चीजें, बर्तन, हथियार आदि भी दफनाए जाते थे। इन लोगों का विश्वास था कि मरने के बाद भी व्यक्ति इनका उपयोग करेगा।

धातुकाल

नवपाषाण युग का अन्त होते-होते पत्थर के साथ-साथ धातुओं का इस्तेमाल शुरू हो गया। धातुओं में सबसे पहले ताँबे का प्रयोग हुआ जिसके कारण इस युग को ताम्र-पाषाण युग कहा गया।

मानव ने ताँबे की खानों का पता लगाकर, उससे ताँबा खोदकर निकालना शुरू किया। उच्च तापमान में ताँबे को पिघलाना तथा साँचे की सहायता से धातु-द्रव को विविध रूप देना भी उन्होंने सीख लिया। यह मानव विकास की एक और महत्वपूर्ण खोज थी।

धीरे-धीरे मानव ने ताँबे व जस्ते को मिलाकर मिश्रित धातु काँसा बनाना सीख लिया।

नव पाषाण कालीन कृषि उपकरण नव पाषाण कालीन मिट्टी के बर्तन

नव पाषाण कालीन औजार

मानव जीवन उसकी प्रगति एवं संघर्ष की कहानी है। प्रारम्भिक मानव ने अपनी समस्याओं से जूझते हुये अपने को जीवित रखा, अपनी उन्नति की एवं अपने को सभ्य बनायाA

अभ्यास

1. रिक्त स्थान भरिए-

(क) आग की खोज.................................... युग में हुई।

(ख) पुरा पाषाण कालीन पत्थर के औजार................................ वाले थे।

(ग) पहिए का आविष्कार.. काल में हुआ।

2. उत्तर लिखिए-

(क) पाषाण युग को किसकी विशेषताओं के आधार पर बाँटा गया है ?

(ख) मानव ने आग जलाना कैसे सीखा ?

(ग) पुरातत्वविद् नवपाषाण काल का प्रारम्भ कब से मानते है ?

(घ) पाषाण युगीन मानव अपने औजार किन-किन वस्तुओं से बनाते थे ?

(ड.) प्रारम्भिक मानव अपना भोजन किस प्रकार प्राप्त करते थे ?

(च) मध्यपाषाण काल में हुए प्राकृतिक परिवर्तन का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

3. सही कथन के आगे सही (झ्) का और गलत कथन के आगे गलत (´) का निशान लगाएँ-

(क) मानव ने अपनी जरूरतों के लिए पत्थर के औजारों का निर्माण नहीं किया। ( )

(ख) पाषाण युग को तीन भागों में बाँटा गया है। ( )

(ग) मध्यपाषाण कालीन पत्थर के औजार आकार में बड़े थे। ( )

(घ) कुत्ता मानव का प्रथम पालतू पशु है। ( )

(ङ) हत्थेदार कुल्हाड़ी एवं हँसिया नव पाषाणकाल के महत्वपूर्ण औजार नहीं थे। ( )

(च) मानव ने ताँबे व जस्ते को मिलाकर मिश्रित धातु काँसा बनाना सीख लिया। ( )

4. मानव ने इधर-उधर घूमने के बजाय एक ही स्थान पर रहना प्रारम्भ कर दिया क्योंकि-

(क) उन्हें एक ही स्थान पर जरूरत भर का पानी उपलब्ध था।

(ख) उनके पशुओं के लिये चारा पर्याप्त था।

(ग) उन्होंने खेती करना शुरू कर दिया था।

(घ) जंगली जानवर पर्याप्त मात्रा में मिलने लगे।

उपर्युक्त में जो सही हो उससे सम्बन्धित गोले को काला करिए।

प्रोजेक्ट वर्क -

घर बनाने में हम किस-किस सामग्री का प्रयोग करते हैं ? सूची बनाइए।
पाषाण कालीन मानव तथा वर्तमान मानव के रहन-सहन में क्या-क्या समानता है और क्या असमानता सूची बनाइए।

पाठ-3

DJ7ZBY

नदी घाटी की सभ्यताएँ

आज कुछ लोग गाँवों में रहते हैं तो कुछ नगरों (शहरों) में। दोनों ही जगह के रहन-सहन में कुछ-कुछ समानताएँ होती हैं तो कुछ अन्तर भी। क्या आपको पता है कि आज से लगभग

ढाई हजार वर्ष पूर्व भी भारत में नगर थे। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इन प्राचीन नगरों का निर्माण लगभग आजकल की सुनियोजित नगर-निर्माण योजना की तरह होता था। ऐसा उस समय के अवशेष बताते हैं।

विश्व की प्राचीन नगर सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ। नदी के किनारे होने के कारण खेती के लिए पानी की उपलब्धता ने अधिक अन्न उत्पादन में मदद की जिससे नगरों का विकास सम्भव हो सका। व्यापार के लिए जलमार्ग सुलभ था। नदी मार्ग से व्यापार सस्ता, आसान तथा सुरक्षित था। नगरीय जीवन में कृषि की अपेक्षा काम-धन्धों को अधिक महत्व मिला। इन कामधन्धों के विकास के लिए प्राकृतिक कच्चे माल की उपलब्धता तथा उससे निर्मित वस्तुओं ने नगरीय जीवन को और उन्नत बनाया।

हड़प्पा सभ्यता (लगभग 2500 ई0पू0-1520ई0पू0)

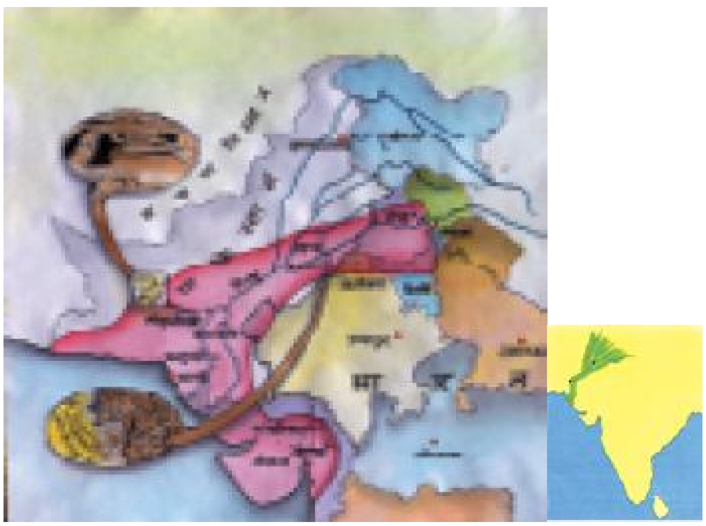

पुराने शहर की खोज

सन् 1921 की बात है जब भारत में अंग्रेजों का राज था। इसी वर्ष पुरातत्वविदों ने पंजाब प्रांत में हड़प्पा नामक स्थल से एक खण्डहर की खोज की। इस खण्डहर के अवशेषों के अध्ययन से पुरातत्वविदों को ज्ञात हुआ कि यह एक नगरीय सभ्यता के अवशेष हैं। इसी प्रकार सिन्ध प्रान्त में एक और गाँव मिला जिसको लोग मोहनजोदड़ो कहते थे। मोहनजोदड़ो का मतलब है - मृतकों का टीला। यहाँ से भी नगरीय सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए क्योंकि यह अवशेष सिन्धु नदी घाटी में प्राप्त हुए थे इसलिए इस सभ्यता को सिन्धु नदी घाटी की सभ्यता भी कहते हैं। हड़प्पा नामक स्थल से इस संस्कृति के अवशेष सबसे पहले मिले थे इसलिए इसे हड़प्पा संस्कृति कहते हैं।

सड़क एवं गलियाँ

पुरातत्वविदों ने इन स्थलों की विस्तृत खुदाई की तो नीचे दबा हुआ पूरा का पूरा शहर निकल आया। लोग नीचे उतर कर उसकी गलियों में घूमने लगे।

उन्होंने देखा कि घरों में उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हैं। मानो आज के घर हों, और शहरों के बीच बनी चौड़ी सड़कें ऐसी हैं जैसे आज शहरों में बनती हैं। इतना बड़ा शहर, यहाँ कितने लोग रहते होंगे ? जब खोजबीन की गई तो पता चला कि यह दबा हुआ शहर बहुत ही पुराना है। आश्चर्य तो तब हुआ जब पता लगा कि यह शहर चार-पाँच हजार साल पुराना है। उस समय यह माना जाता था कि चार पाँच हजार साल पहले लोग खेती करके, पशु पालकर या शिकार आदि करके जीवन यापन करते थे। क्या इतने पुराने समय में भी शहर बन गए थे ? उनके बचे-खुचे निशान देखकर हमें यह जरूर पता लग जाता है कि शिकारी मानव और शुरू के गाँवों की तुलना में शहर के लोगों का जीवन बदल गया था।

शहर ही शहर

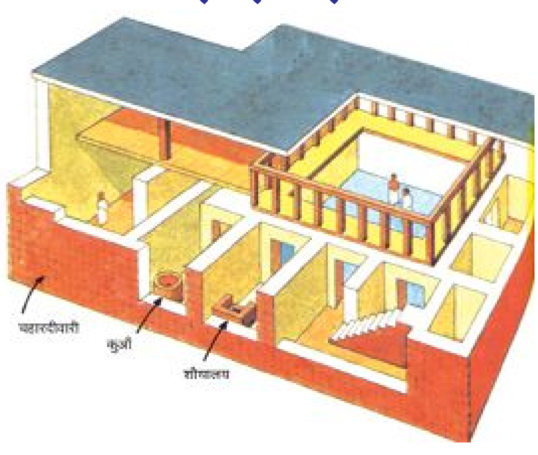

धीरे-धीरे आगे और खोज हुई। कई जगहों पर खुदाई की गई तो पता चला कि उस समय एक नहीं, दो नहीं, कई शहर थे। वे खासकर एक बड़ी नदी और उसमें

मिलने वाली दूसरी छोटी नदियों की घाटी में बसे हुए थे।
इस सभ्यता के कुछ क्षेत्र आज पाकिस्तान देश में आते है लेकिन रोपड़ नाम की जगह भारत के पंजाब राज्य में है, कालीबंगा भारत के राजस्थान राज्य में और लोथल भारत के गुजरात राज्य में है।

सिन्धु घाटी के शहरों की इमारतें

खुदाई करने पर शहरों में कई तरह की बड़ी-बड़ी इमारतें मिलीं, जो आयताकार थीं। कई दो मंजिला घर थे, अमीरों की कोठियाँ थीं, गरीब कारीगरों के छोटे-छोटे घर थे।
चित्र में उन इमारतों की दीवारें देखिए। कितनी ऊँची दीवारें हैं। इन्हें किसी मिस्त्री ने बनाया होगा। दीवारें पकी ईंटों की बनी हुई हैं। इससे पता चलता है कि उस समय ईंट पकाने की भट्टियाँ रही होंगी।
शहर की सड़के गाँव की गलियों की तरह टेढ़ी-मेढ़ी नहीं थीं। बिल्कुल सीधी-सीधी थीं। पूरा शहर व्यवस्थित था। सड़कों के किनारे पक्की नालियाँ बनी थीं। हर घर की नाली बड़े नालों से मिल जाती थी।
सिन्धु घाटी के शहरों की खुदाई में पक्के घरों के अलावा बड़े-बड़े गोदाम मिले हैं। आसपास के गाँवों से अनाज इकट्ठा करके इन्हीं गोदामों में रखा जाता रहा होगा।

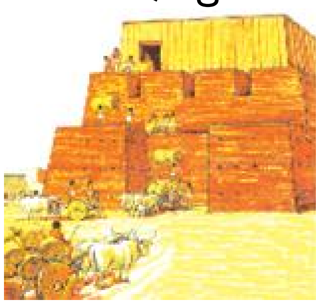

गोदाम, मोहनजोदड़ो नालियाँ साफ करते हुए

सशहर के लोगों को बड़े गोदामों में अनाज भर कर रखने की जरूरत क्यों पड़ी होगी ? सोचें।
घरों और गोदामों के अलावा मोहनजोदड़ों में एक बड़ा सा पक्का स्नानागार मिला है। इसके चारों तरफ कमरे बने हुए थे। इससे पता चलता है कि मोहनजोदड़ों के लोग सफाई और स्वच्छता के प्रति जागरूक थे।

स्नानागार, मोहनजोदड़ो
सोचिए और बताइए
**ऐसा क्यों लगता है कि सिन्धु घाटी के नगर बहुत सोच-विचार कर बनाए गए थे **

काम धंधे

सोचिए ! पत्थर का भाला उन्होंने कैसे बनाया होगा \

पत्थर का भाला

जब लोग पत्थर से औजार व हथियार बना लेते थे तो उन्होंने धातु की चीजें बनाना क्यों शुरू किया होगा ?

खुदाई में ताँबे और काँसे की बनी हुई कुल्हाड़ी, दर्पण, आरी, कंघियाँ, उस्तरा प्राप्त हुए हैं। इसका मतलब यह हुआ कि सिन्धु घाटी के लोग जमीन में से धातु निकालने और उसे साफ करने तथा गला कर चीजें बनाने के तरीके से परिचित थे।

काँसा- ताँबा और जस्ता को मिलाकर बनाई गई धातु है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि धातु की चीजें बनाने के साथ-साथ लोग पत्थर के औजार भी बनाया करते थे। इसका कारण शायद यह था कि ताँबा व काँसा जैसी धातुएँ, पत्थर की तुलना में बहुत ज्यादा मजबूत नहीं थीं। ये धातुएँ हर जगह आसानी से मिल भी नहीं पाती थीं इसीलिए लोग कई औजार पहले की तरह पत्थर के ही बनाते रहे।
खिलौने की बैलगाड़ी देखिए- लगता है इस समय की बैलगाड़ी है।

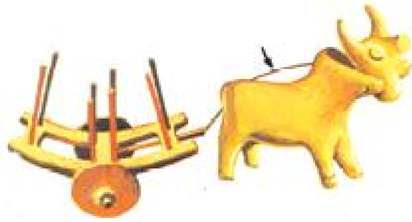

इस तार को खींचने से बैल का सिर हिलता है।

जो भी हो, इस बैलगाड़ी में दो बड़ी खोज छिपी है- एक है पहिया व दूसरा है बैलगाड़ी।

सोचकर बताइए कि सिन्धु घाटी के नगर के लिए बैलगाड़ी एक जरूरी चीज क्यों रही होगी ?

आप अपने आसपास किस-किस काम में पहिए या चक्के का प्रयोग देखते हैं ? लिखिए।

उस समय चक्के का इस्तेमाल मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए भी होने लगा था। इसलिए पहले की तुलना में बहुत अच्छे किस्म के बर्तन बनाए जाने लगे थे।

इन चित्रों में दिख रही चीजों से आप अनुमान लगा सकते हैं कि सिन्धु घाटी के नगरों में बहुत से कारीगर रहते थे। नगर के लोग अपनी जरूरत की सब चीजें घर पर नहीं बनाते थे। अलग-अलग चीजों को बनाने वाले अलग-अलग कारीगर थे जो अपनी चीजें बनाकर दूसरों को बेचते थे।

उपर्युक्त चित्रों को देखकर उस समय के कारीगरों की सूची बनाइए ......

व्यापार

सिन्धु घाटी के नगरों से पत्थर, हाथी दाँत, धातु एवं मिट्टी की बनी वस्तुएँ मिली हैं। कुछ विद्वान सोचते हैं कि ये वास्तव में व्यापारियों की मुहरें थीं। ये विभिन्न आकार की हैं। व्यापारी जब एक जगह से दूसरी जगह सामान भेजते थे तो सामान बाँधकर उस पर गीली मिट्टी छापते होंगे और गीली मिट्टी पर अपनी मुहर से छाप बना देते रहे होंगे ताकि उनके सामान की पहचान बनी रह सके। तौल और नाप के लिए बटखरे और पैमाने का प्रयोग करते थे।

ऐसी मुहरें दूसरे देशों में भी पाई गई हैं- खासकर मेसोपोटामिया (इराक) देश में। लगता है कि उन दिनों इराक और सिन्धु घाटी के शहरों के बीच व्यापार होता था।

आइये जानें व्यापार से होने वाले लाभ -

एक दूसरे की जरूरत की और सुंदर, नई-नई चीजें आसानी से मिल जाती हैं।

विचारों का आदान-प्रदान होता है।
दूसरे देशों के विषय में जानकारी होती है।
अतिरिक्त उत्पादन से ही व्यापार सम्भव है।

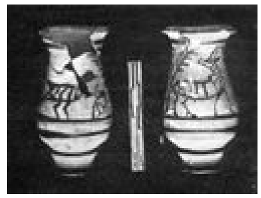

मोहनजोदड़ो में प्राप्त बर्तन

सिन्धु घाटी के लोथल क्षेत्र में मिले बन्दरगाह के अवशेषों से पता चलता है कि ये लोग नदी या समुद्र से व्यापार करते थे। लोथल मुख्यतः व्यापारिक नगर रहा होगा क्योंकि यहाँ से बंदरगाह (गोदी), मुहरें तथा गोदाम के अवशेष मिले हैं।

मोहनजोदड़ो से प्राप्त काँसे की बनी नर्तकी की मूर्ति

वस्तु विनिमय

बच्चों ! जब आप बाजार से कोई वस्तु खरीदते हैं तो दुकानदार को इसके बदले में पैसे देते हैं ? है, ना। अगर दुकानदार पैसा लेने से मना कर दे और कहे कि वह इसके बदले में 1 किलो गेहूँ चाहता है तो आप क्या करेंगे ? सोचिए और लिखिए-

सेलखड़ी में बनी मूर्ति

सिन्धु घाटी के लोग एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तुओं को ले-देकर व्यापार करते थे। वे इसके लिए रुपये या सिक्कों का प्रयोग नहीं करते थे। उस समय रुपये-पैसे का प्रचलन नहीं थाA

मुहरें

वस्तु विनिमय - वस्तु के बदले दूसरे की वस्तु का लेना और देना

लिखावट

सिन्धु घाटी के नगरों से जो मुहरें प्राप्त हुई हैं उन पर आदमी की आकृतियाँ, कुछ पर जानवरों की, पौधों की और कुछ पर बर्तनों की आकृतियाँ बनी हुई हैं।

इन आकृतियों के अलावा इन मुहरों पर क्या बना है ? इसे अपनी कॉपी पर उतारिए। आपके अनुसार यह क्या संकेत हो सकता है? आप भी मिट्टी की मुहरें बनाइये।

इन मुहरों पर संकेत के रूप में लेख लिखे हैं जिससे उनके अक्षर चित्रों जैसे लगते हैं। विद्वान आज भी इस लिखावट को नहीं पढ़ पाए हैं इसलिए सिन्धु घाटी सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक युग के अन्तर्गत रखते हैं। खुदाई से मिले अवशेषों के आधार पर ही हम इस सभ्यता के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

देवी-देवता

मातृदेवी

इस मूर्ति को देखिए सम्भवतः यह मिट्टी की मूर्ति उन लोगों की देवी की मूर्ति थी। पत्थर के चौकोर पट्टे पर एक आकृति के सिर पर भैंसे के सींग का चित्र है। उसके चारों तरफ कई जानवर बने हैं। यह कोई देवता होगें। सम्भवतः सिन्धुवासी इन्हें पशुओं का देवता मानकर पूजते थे।

गहनें

इस मुहर पर कौन से जानवर दिख रहे हैं? बताइए। इसके अलावा कुछ मुहरों पर पीपल की पत्तियाँ और साँप की आकृतियाँ जैसी भी बनी मिली हैं। शायद वे इन सबकी पूजा करते थे। इन बातों का हम अन्दाजा लगा सकते हैं, पक्की तरह से नहीं कह सकते।

ऊपर बताई गई किन-किन चीजों को आज भी लोग मानते हैं ? इन चीजों को मानने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं ? सोचिए।

शहरों का खत्म होना

देवता

आज से चार-पाँच हजार साल पहले सिन्धु घाटी में नगर बने हुए थे। ये नगर लगभग एक हजार साल तक बने रहे, फिर किसी कारण से नष्ट हो़ गए और मिट्टी

में दब गए। क्या कारण हो सकते हैं- बाढ़, भूकम्प, महामारी, आक्रमण, आग या फिर आर्यों का आना।

सिन्धु घाटी के नगरों के खत्म होने के बाद कई सौ सालों तक भारत में कोई नगर नहीं बसे।

और भी जानिए

हड़प्पा सभ्यता के निवासी बहुत शान्तिप्रिय थे क्योंकि यहाँ से लड़ाई के अस्त्र-शस्त्र बहुत ही कम संख्या में मिले हैं।

यह सभ्यता काँस्य युगीन सभ्यता थी।

सिन्धु सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है तथा यह भारत की पहली नगरीय सभ्यता थी।

सबसे पहले कपास पैदा करने का श्रेय सिन्धु सभ्यता के लोगों को है। सिन्धु घाटी के लोग सूती कपड़ों का प्रयोग किया करते थे।

सभी भारतीय लिपियाँ बाएँ से दाएँ लिखी जाती हैं लेकिन हड़प्पा की लिपि दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।

सभ्यता-मानव सभ्य तब कहा जाता है जब वह अपने जीवन के तरीके को बदल देता है और पुराने रीति-रिवाजों से आधुनिक रीति-रिवाजों को अपनाकर नयी स्थिति में पदार्पण करता है|

योजना-किसी कार्यक्रम को सम्पन्न करने से पूर्व उसकी रूपरेखा तैयार करना।

व्यापार-उत्पादित वस्तुओं को एक जगह से दूसरे जगह भेजकर अतिरिक्त लाभ कमाना जिससे उत्पादन में और अधिक वृद्धि हो सके।

ई0पू0-ईसामसीह के जन्म से पहले का समय।

शताब्दी-सौ वर्ष का समय। जैसे सन् 2002 को 21वीं शताब्दी कहेंगे।

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ

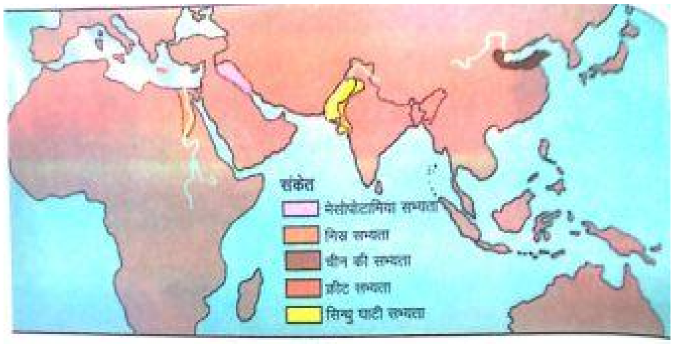

मेसोपोटामिया सभ्यता–

५०००ई०पू०–२०००ई०पू० यह सभ्यता दजला–फरात नदी के किनारे विकसित हुई। जिगुरत में इनके प्रमुख देवता निवास करते थे। इनकी लिपि चित्रात्मक थी।

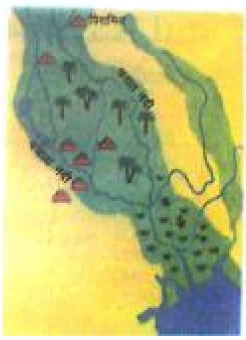

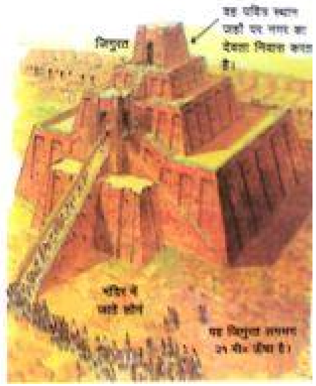

मिस्र सभ्यता–

नील नदी का वरदान (५०००ई०पू०–२०००ई०पू०) मिस्रवासी शवों के शरीर पर नाइट्रोन नामक पदार्थ का लेप लगाकर उसे पतले एवं मुलायम कपड़े से ढक देते थे। इस प्रकार के शरीर को ममी कहते हैं। इनको पिरामिड के अन्दर रखा जाता था।

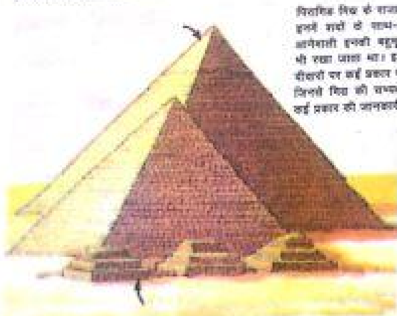

पिरामिड मिस्र के राजाओं के मकबरे हैं इनमें शवों के साथ–साथ प्रयोग में आनेवाली इनकी बहुमूल्य वस्तुओं को भी रखा जाता था। इन पिरामिडों की दीवारों पर कई प्रकार के सुन्दर चित्र हैं जिनसे मिस्र की सभ्यता से सम्बन्धित कई प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है।

क्रीट सभ्यता–

महान द्वीप सभ्यता ३०००ई०पू० ७५०००ई०पू० यह सभ्यता भूमध्य सागर के किनारे विकसित हुई थी। सुन्दर चित्रकारी के कारण यहाँ के बर्तनों की माँग दूसरे देशों में भी थी।

चीन सभ्यता– लगभग २५०० ई०पू०

यह सभ्यता ह्वांगहो नदी के किनारे विकसित हुई। सॉटन के कपड़े तथा बाँस पर लिखना सबसे पहले चीन ने शुरू किया। कागज का आविष्कार सर्वप्रथम चीन में हुआ।

चीनी लोग कांस्य के बने बर्तनों में भोजन करते थे।

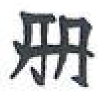

चीनी अक्षर में लिखा हुआ शब्द, किताब

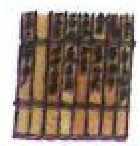

बाँस की बनी चीनी किताब

अभ्यास

1. **निम्नलिखित में सही विकल्प पर सही का निशान (√) लगाइए :**

(अ) सिन्धु घाटी की सभ्यता थी–

क. ग्रामीण सभ्यता।

ख. नगरीय सभ्यता।

ग. अर्द्धनगरीय सभ्यता।

(ब) मोहनजोदड़ो के नगर बसे थे–

क. आजकल के गाँवों की तरह।

ख. टेढ़ी–मेढ़ी गलियों में।

ग. एक निश्चित योजना के अनुसार।

2. रिक्त स्थान भरिए–

क. मोहनजोदड़ो का अर्थ .... है।

ख. रोपड़ भारत के .... राज्य में, कालीबंगा .... राज्य में है।

ग. व्यापार .... और सिन्धु घाटी के शहरों के बीच होता था।

3. सही जोड़ बनाइए–

(क)	रोपड़	गुजरात
(ख)	कालीबंगा	महाराष्ट्र
(ग)	लोथल	राजस्थान
(घ)	दायमाबाद	पंजाब

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए–
   (क) कांसे की बनी नर्तकी की मूर्ति कहाँ से प्राप्त हुई है ?
   (ख) हड़प्पा के लोगों का विदेश व्यापार किस देश के साथ होता था ?
   (ग) कागज का अविष्कार सर्वप्रथम कहाँ हुआ ?
   (घ) कौन सी सभ्यता नील नदी का वरदान नाम से प्रसिद्ध है ?
5. मानचित्र देखकर हड़प्पा कालीन पुरास्थलों की सूची बनाइए।
6. टिप्पणी लिखिए–
   - हड़प्पा कालीन नगर निर्माण योजना
   - हड़प्पा कालीन व्यापार
   - हड़प्पा कालीन रहन–सहन
   - हड़प्पा कालीन देवी–देवता
7. सिन्धु घाटी के नगरों के बारे में लोगों को कैसे पता चला ? हड़प्पा सभ्यता के नष्ट होने के क्या कारण हो सकते थे ?
8. किस कारण सभी प्राचीन सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ ? (नदियों से विशेष लाभ क्या थे ?)
9. निम्नलिखित तालिका पूरी करिए–

सभ्यता का नाम	नदी/सागर का नाम	मुख्य योगदान
मेसोपोटामिया सभ्यता		
मिस्र की सभ्यता		
क्रीट सभ्यता		
चीन की सभ्यता		
सिन्धु घाटी की सभ्यता		

10. सिन्धु घाटी के नगरों से मिलने वाली मुहरों के बारे में चार मुख्य बातें बताइए।

प्रोजेक्ट वर्क

- नदियों से क्या–क्या लाभ होते हैं ? अपने प्रदेश की मुख्य नदियों के किनारे बसे नगरों की सूची बनाइए।
- आपके घर में मिट्टी से बनी भिन्न–भिन्न वस्तुओं का प्रयोग होता होगा। उन वस्तुओं की सूची बनाएं। यह भी पता करें कि उन वस्तुओं को कौन बनाता है ?

पाठ-4

DJGVDL

वैदिक काल

(1500 ई0पू0 से 600 ई0पू0)

सिन्धु घाटी के नगर जब नष्ट हो गए तो उन नगरों के घर ढहकर मिट्टी के नीचे दब चुके थे। इन स्थानों पर नए लोगों ने रहना आरम्भ किया। ये लोग गाँवों में रहते थे। उन गाँवों में किसान खेती करते थे, कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाते थे और दूसरे कारीगर ताँबे और काँसे की वस्तुएँ बनाते थे। धीरे-धीरे इनके आस-पास कुछ और लोग आकर बसे जो अपने आप को ''आर्य'' कहते थे। जिसका अर्थ ''श्रेष्ठ'' या ''उत्तम'' था।

आर्य सम्भवतः काला सागर और कैस्पियन सागर के पास के मैदानों में रहते थे। वहाँ से वे फैलते गए और नयी-नयी जगह बसते गए। आर्य गाय, बैल, घोड़ा, भेड़, बकरी आदि पशुओं को पालते थे। उनके पास हजारों की संख्या में पालतू पशु होते थे।

चारे-पानी की खोज में

आर्यों के पास पालतू जानवरों की सख्ंया अधिक होने के कारण वे जहाँ चारा-पानी मिल जाता वहीं बस जाते थे। जब चारा-पानी कम पड़ने लगता था तो कुछ लोग जानवरों को लेकर आगे निकल जाते थे। जहाँ चारा मिलता आर्य वहाँ बस जाते थे। इस प्रकार आर्य कई समूहों में यहाँ आए और अपने पशुओं के साथ नई-नई जगहों पर बसते गए। वे एक अनोखा जानवर, तेज दौड़ने वाला घोड़ा भी लाए थे। आर्य पशुओं से सम्बन्धित व्यवसाय जैसे- ऊन कातना व बुनना, घोड़े से रथ-जोतना तथा लकड़ी की वस्तुएँ बनाना आदि कार्य करते थे। लगभग 1200 ईसा पूर्व से 1000 ईसा पूर्व तक आर्य-सिन्धु, सतलज, व्यास और सरस्वती नदियों के किनारे आ बसे।

चर्चा कीजिए

क्या उपर्युक्त क्षेत्रों में पहले से रह रहे लोगों ने आर्यों का विरोध किया होगा ? कैसे ?

आर्यों का भारत में आगमन एवं फैलाव

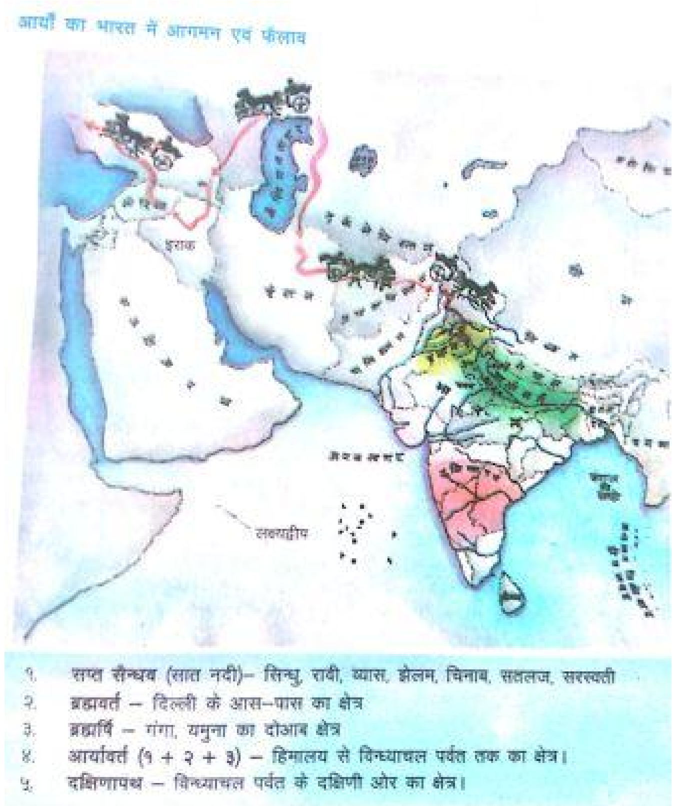

आर्यों की भाषा

यह कहना कठिन है कि सारे आर्य लोग एक ही नस्ल के थे। वे इण्डो-यूरोपियन परिवार की भाषा संस्कृत बोलते थे। अब भी यह अपने बदले हुए रूपों में यूरोप, ईरान व भारत में बोली जाती है। यह तथ्य इन भाषाओं के बोलने के ढंग की समानताओं पर आधारित है। बोल कर देखिए-

संस्कृत फारसी लातिन अंग्रेजी
पितृ पिदर पाटर फादर
मातृ मादर माटर मदर

आइये कुछ करें

(क)खाली जगह भरिए:-

आर्य सम्भवतः .... में रहते थे। जहां... मिल जाता वहीं बस जाते। वे एक .... लाए थे। आर्य पशुओं से .... वस्तुएँ बनाना आदि कार्य करते थे।

पशुपालक आर्यों की बस्ती

आर्य लोग जहाँ बसते थे, वहाँ अपने कबीले के मुखिया के नाम से वंश चलाते थे। प्रमुख वंश थे- पुरु और अनु। आर्यों ने अपनी बस्ती में घास-फूस, लकड़ी और मिट्टी के बने घरों के

अलावा कई गौशालायें बना लीं। आर्य लोग गाँव में रहने वाले किसानों को पणि नाम से पुकारते थे। आर्यों और पणियों के बीच अक्सर लड़ाई हुआ करती थी। आर्य उनको ”दस्यु“ कहा करते थे। आर्य एवं पणि लोग रंग-रूप, बनावट, काम-धंधे, बोलचाल, रहन-सहन में एक-दूसरे से भिन्न थे। आर्यों के जानवरों की संख्या कम होने पर उनकी शंका पणियों द्वारा इनको चुरा लेने पर होती थी। इस कारण उनमें आपसी संघर्ष होता था। धीरे-धीरे आर्यों और पणियों के बीच आपस में वस्तुओं का लेन-देन शुरू हो गया। पणि लोग गेहूँ उगाते थे। ये आर्यों को गेहूँ देकर उनसे घी-दूध ले जाते थे।

धीरे-धीरे एक दूसरे के रीति-रिवाजों का मेल-मिलाप शुरू होने लगा। आर्य जौ भी उगाने लगे थे। आर्यों का मुख्य भोजन, दूध और दूध से बनी चीजें, जौ की रोटी, मक्खन, फल, सब्जी, छाछ और शहद था।

वाक्य पूरा कीजिए

आर्य लोग जहाँ .... चलाते थे। आर्य गाँव में रहने वाले .... पुकारते थे। आर्यों का मुख्य भोजन .... था।

चर्चा कीजिए

अलग रीति-रिवाज वालों के साथ आपका व्यवहार कैसा होना चाहिए ?

आर्यों के जन

वैदिक काल में कई परिवार मिलकर गोत्र का निर्माण करते हैं और कई गोत्र विश का निर्माण करते थे। इसी प्रकार कई विश मिलकर जन बनाते थे हमें कई जनों के नाम जैसे पुरुजन की जानकारी वैदिक साहित्य से मिलते है। किसी समस्या को सुलझाने के लिए एक सभा होती थी। सभा में सत्तर-अस्सी लोग बैठते थे, उनमें से पाँच-छः लोग विशेष आसन पर बैठते थे। आसन पर बैठने वाले प्रमुख लोग राजन्य होते थे। वे या तो अपनी उम्र, अनुभव, शक्ति, योगदान के कारण प्रमुख थे अथवा अन्य लोगों की अपेक्षा उनके पास अधिक गाय, घोड़े व रथ होते थे। प्रमुख लोगों के अलावा बाकी लोग ‘विश’ कहलाते थे। सभा में समस्या रखी जाती थी। सभी लोग मिलकर समस्या को सुलझाते थे।

सूझ-बूझ

अपने गाँव की समस्या को सुलझाने के लिए आप क्या करेंगे ?

हमारे समाज में किन लोगों की सलाह को ज्यादा महत्व दिया जाता है ? क्यों ?

युद्ध और राजा

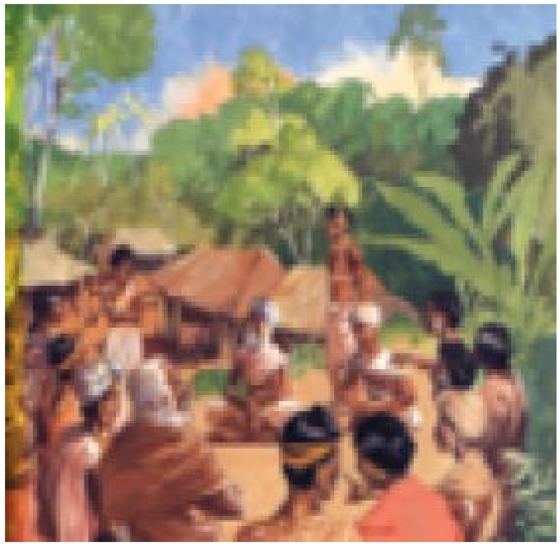

सभा

आर्यों के समय से गाय को महत्व दिया जाने लगा था। जन के लोग हमला करके एक दूसरे की गायों को भगा ले जाते थे। यही आर्य जनों के बीच होने वाले युद्धों का मुख्य कारण था। पशु-पालक आर्यों के पास अलग से सेना नहीं थी। युद्ध के समय जन के सभी लोग मिलकर लड़ने जाते थे। युद्ध की अगुवाई करने के लिए जन का राजा चुना जाता था। जन को युद्ध में विजय दिलाना राजा का काम था। इसके साथ-साथ वह कबीले में रहने वालों और उनकी सम्पत्ति की भी सुरक्षा करता था। उसका पद वंशानुगत नहीं था।

यज्ञ और वेद

आर्य लोग प्रारम्भ में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए देवताओं को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपाठ करते थे। बाद में यज्ञ करने लगे। यज्ञ का कार्य पुरोहित करवाता था। यज्ञ सामूहिक हुआ करते थे जिसमें पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की भी सहभागिता होती थी। यज्ञ में कार्य की सफलता के लिए भेंट व चढ़ावे के साथ-साथ देवताओं की प्रशंसा में वेद के मंत्र गाए जाते थे।

इन्द्र आर्यों के सबसे प्रिय देवता थे, जो उन्हें युद्ध में विजय दिलाते थे।

यज्ञ के समय ब्राह्मण वेद-मंत्रों का सस्वर पाठ करते हुए आग में घी डालते जाते थे। ये मंत्र संस्कृत भाषा में थे जिन्हें मंत्र या ऋचा कहा जाता है। ये मंत्र ”ऋग्वेद“ में मिलते हैं। बहुत समय तक ये मन्त्र लिखे नहीं गए। इन्हें बोल-बोलकर याद रखा जाता था और दूसरों को सिखाया जाता था। बाद में इन्हें लिख दिया गया। आज हम ऋग्वेद के मंत्रों को पढ़कर आर्यों के जीवन की कई बातों को जान सकते हैं। वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद बाद में रचे गए। इन वेदों में यज्ञों और मंत्रों का

उल्लेख है। वेदों में ईश्वर से प्रार्थना भी किए जाने का वर्णन है। ईश्वर से प्रार्थना की जाती थी कि अच्छी वर्षा हो तथा अच्छी धूप खिले जिससे फसल अच्छी हो।

ऋग्वेद में ही प्रसिद्ध गायत्री मंत्र है जो आज भी हिन्दू यज्ञों में उच्चारण किया जाता है। ी”हे विश्व निर्माता, तुम्हारे पापनाशक ज्योतिपुंज से हमारा उद्धार हो। तुम्हारे आलोक स्पर्श से हमारी बुद्धि सही दिशा में संचालित होती रहे।“

राजा का चुनाव

जन की एक सभा होती थी। सभा में सब लोग चुने गये राजा को बधाई देते थे। जन के लोग नये राजा के बनने से खुश होते थे। वे अपने घर से उसके लिए कुछ भेंट व चढ़ावा लाते थे। कोई एक घड़ा घी, कोई दो गायें तथा कुछ सोने के जेवर देते थे। इस तरह राजा के पास काफी भेंट जमा हो जाती थी। ऐसी भेंट या चढ़ावे को आर्य लोग बलि कहते थे। इस भेंट को राजा कबीले के सभी लोगों में उनकी जरूरत के अनुसार बाँट देता था। इससे कबीले को आपस में जोड़ने में मदद मिलती थी।

युद्ध के बाद सभा

युद्ध के बाद भी एक सभा होती थी। सभा में जन के राजा जीत में मिली गायों, घोड़ों, रथ, हथियार, सोना, दास-दासियों को जन के कई लोगों के बीच बाँटते थे लेकिन सबसे बड़ा हिस्सा राजा अपने पास रखता था, फिर राजन्यों और ब्राह्मणों को हिस्सा मिलता था। कुछ गायें, भेड़ें, बकरियाँ, अनाज आदि जन के साधारण लोगों को भी दी जाती थीं। इससे राजन्यों के पास गायें, घोड़े, हथियार, सोना, दास-दासियों की संख्या ज्यादा हो जाती थी और वे पहले से ज्यादा ताकतवर बन जाते थे।

वर्ण व्यवस्था-

आरम्भ में आर्य तीन वर्णों में विभाजित थे- राजा, पुरोहित तथा अन्य जन। यह विभाजन उनके व्यवसाय पर आधारित था परन्तु कठोर नहीं था किन्तु धीरे-धीरे जो यज्ञ करवाते थे, वे ब्राह्मण कहलाए। जो युद्ध करते थे, वे क्षत्रिय कहलाए। जो व्यापार करते थे वे वैश्य कहे जाते थे। बाद में शूद्र नामक चौथा वर्ण भी मिलता है जिसमें युद्ध में हारे लोग शामिल किए गए। धीरे-धीरे वर्ण व्यवस्था कठोर हो गयी। अब कार्य रुचि के आधार पर न होकर वंश (पिता के कार्य) के आधार पर हो गए।

राजा को बलि देते हुए

अब खेती का महत्व बढ़ा

पशुपालक आर्य अपनी बढ़ती हुई जरूरतों के लिए सिर्फ युद्ध से प्राप्त सम्पत्ति पर ही हमेशा निर्भर नहीं रह सकते थे। अतः उन्हें अपनी आवश्यकताओं के लिए कृषि पर ध्यान देना पड़ा। अब वे गंगा, यमुना के दोआब क्षेत्र में फैलने लगे। इन्होंने लोहे के औजारों से जंगलों को काटकर कृषि योग्य बनाया। पशुपालक आर्य पहले केवल जौ ही उगाते थे। अब इन नदियों के किनारे वे गेहूँ, धान, दाल व तिलहन भी उगाने लगे। अब उनके लिए खेती प्रमुख हो गई। खेती के साथ-साथ वे पशु भी पालते रहे। धीरे-धीरे वे आत्मनिर्भर होने लगे और अन्य कौशलों के विकास का समय उन्हें मिलने लगा जिससे वे धातुकर्म, बढ़ईगीरी, हस्तशिल्प, चमड़े का काम, आभूषण, मिट्टी के बर्तन आदि बनाने लगे जिससे उनका व्यापार भी बढ़ने लगा।

आश्रम व्यवस्था

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को व्यवस्थित करने के लिए आर्यों ने जीवन को चार अवस्थाओं में बाँट दिया था। पहली अवस्था ब्रह्मचर्य की थी। इसमें बच्चा आश्रम में रहकर शिक्षा पाता था। दूसरी अवस्था गृहस्थ थी।

यह अवस्था पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित थी। तीसरी और चौथी अवस्थाएँ वानप्रस्थ और सन्यास की थीं जिसमें व्यक्ति वन में जाता था और आत्म-चिन्तन द्वारा ईश्वर को प्राप्त करने की कोशिश करता था।

महिलाएँ घर में ही रहकर घरेलू कार्यों, संगीत व नृत्य की शिक्षा प्राप्त करती थीं। यद्यपि महिलाओं की स्थिति पुरुषों के बराबर नहीं थी किन्तु घर में उनको उचित सम्मान एवं आदर प्राप्त था।

युद्ध के बाद सभा

आज महिलाओं को समाज में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं चर्चा कीजिए।

इसे भी जानिए

महाकाव्य रचना- रामायण और महाभारत दो प्रसिद्ध महाकाव्य हैं। रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत में की गयी है। इस ग्रन्थ में कोशल के राजा दशरथ के पुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्श जीवन और कार्यों का वर्णन किया गया है। आज भी रामचन्द्र जी के जीवन पर आधारित रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है।

महाभारत की रचना महर्षि वेदव्यास ने की। इस महाकाव्य में कुरु वंश के कौरवों तथा पांडु वंश के पांडवों की कथा मुख्य रूप से दी गयी है।

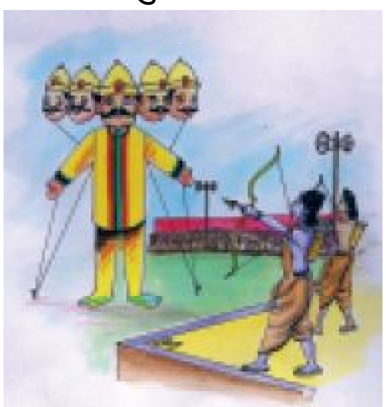

बुराई पर अच्छाई की जीत

और भी जानिए

इस समय से ''लौह युग'' की शुरुआत हो गयी क्योंकि अब अस्त्र-शस्त्र लोहे के बनने लगे थे।

वैदिक कालीन संस्कृति भारतीय संस्कृति का आधार बनी, जिसका प्रभाव समाज, धर्म और कला पर आज भी है।

वैदिक काल से पूर्व चित्रात्मक लिपि थी। अब ध्वनि के आधार पर अक्षरों का विकास होने लगा। अक्षरों को मिलाकर शब्द और शब्दों को मिलाकर वाक्य बनने लगे थे।

राजा-पुरोहित, राजमंत्री, पथ प्रदर्शक, दार्शनिक और योद्धा भी था।

वेतन, सोने-चाँदी, अन्न, वस्त्र या पशुधन के रूप में दिया जाता था।

शब्दावली

अध्न्या - जिसका वध न किया जाए।
दोआब - दो नदियों के बीच का उपजाऊ क्षेत्र
वंशानुगत - पिता के बाद पुत्र को प्राप्त होने वाला अधिकार।

अभ्यास

1. आर्यों के बारे में आप क्या जानते हैं? लिखिए।

2. वैदिक सभ्यता को आर्य सभ्यता क्यों कहते हैं?

3. खेती का विकास हो जाने के बाद आर्यों के जीवन में क्या परिवर्तन हुआ?

4. आर्यों की सामाजिक व्यवस्था कैसी थी?

5. वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था का वर्णन कीजिए?

6. संक्षिप्त उत्तर लिखिए-

(क) आश्रम व्यवस्था (ख) सभा एवं समिति (ग) आर्यावर्त (घ) राजा के कर्तव्य

7. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

(क) प्रसिद्ध गायत्री मंत्र ....वेद में है।

(ख) सप्तस्वर स, रे, ग, म का उल्लेख....................................में मिलता है।

(ग) आर्यों की भाषा .... थी।

(घ) ....की रचना महर्षि वेदव्यास ने की है।

8. निम्नलिखित वाक्यों में सही (इ) और गलत (ˊ) का निशान लगाइए।

(क) ब्रह्मचर्य आश्रम में बालक शिक्षा ग्रहण करता था। ( )

(ख) लोहे की खोज उत्तर वैदिक काल में हुई। ( )

(ग) अथर्ववेद सबसे प्राचीन वेद है। ( )

(घ) आर्यों की भाषा वैदिक संस्कृत थी। ( )

प्रोजेक्ट वर्क

* आधुनिक समय के विद्यालय तथा वैदिक कालीन विद्यालय (गुरुकुल) में क्या समानताएँ तथाअसमानताएँ हैं। शिक्षक की सहायता से सूची बनाइए।

* निम्नलिखित वस्तुओं से दैनिक उपयोग की क्या-क्या समान बनाए जाते हैं।

वस्तु समान

लोहा

लकड़ी

ताँबा

कच्ची मिट्टी

पाठ 5

DJZHG4

छठी शताब्दी ई0पू0 का भारत

धार्मिक आन्दोलन

छठी शताब्दी ई0पू0 में छोटे-छोटे जनपद बड़े राज्य बनने की होड़ में संघर्ष करते रहते थे। इससे प्रजा अपने को असुरक्षित महसूस करने लगी थी। पुराने समय में जन के लोग एक दूसरे की मदद एवं आपस में भरोसा करते थे। ऐसी बातें अब समाप्त हो चली थीं। अब ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने के लालच में लोग एक दूसरे से झूठ बोलने, एक दूसरे को ठगने व धोखा देने लगे थे।

वैदिक काल के अन्त तक धार्मिक क्रियाकलाप धीरे-धीरे कठोर एवं खर्चीले होते गए। अब यज्ञों में पशुओं की बलि भी दी जाने लगी थी। चमत्कार और ढोंग-ढकोसला का बोलबाला था। वेदों की संस्कृत भाषा जन सामान्य के समझ में नहीं आती थी। वर्ण व्यवस्था अब कठोर जाति व्यवस्था का रूप ले चुकी थी। पुरोहितों के द्वारा पूरे समाज को ऊँची तथा नीची जाति में विभाजित कर दिया गया। इन कारणों से समाज में पूर्णतः असंतुलन की स्थिति आ गई थी। ऐसी बदलती परिस्थितियों में लोगों के विचारों में बड़े-बड़े बदलाव आ रहे थे। सभी के मन में तरह-तरह के सवाल उठ रहे थे। जैसे-

सयज्ञ क्यों करना चाहिए ? क्या चढ़ावा चढ़ाने से मोक्ष प्राप्त होता है ?

सक्या वास्तव में सब कुछ पूर्व निश्चित है तथा ईश्वर ने तय किया है ? क्या अपनी स्थिति बदली नहीं जा सकती है ?

सऐसा क्या है जो कभी नहीं मरता ? मरने के बाद क्या होता है ? क्या तपस्या करने से तपस्वी अमर हो जाते हैं ?

इन जिज्ञासाओं के लिए उन दिनों कई लोग जंगलों में आश्रम बनाकर रहते थे। उन आश्रमों में वे तरह-तरह के प्रश्नों पर चिन्तन-मनन करते थे। वहाँ आने वालों से वे चर्चा करते थे और अपने पास बैठाकर दूसरों को सिखाते थे। जो लोग आश्रमों में रहते थे वे ऋषि, मुनि

कहलाते थे। इन ऋषियों ने मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में चिन्तन कर बताया कि आत्मा या ब्रह्म कभी भी नष्ट नहीं होती है। आत्मा ही बार-बार जन्म लेती है। कठोर तपस्या के द्वारा ही इसका ज्ञान होता है। आत्मा जब ब्रह्म से मिल जाती है तब मानव को संसार के कष्टों से मुक्ति मिल जाती है। आत्मा का ज्ञान ही परम ज्ञान है। ऋषियों के यह विचार उपनिषदों (पास बैठना) में मिलते हैं। उनमें से छान्दोग्य उपनिषद की एक कहानी आगे पढ़िए-

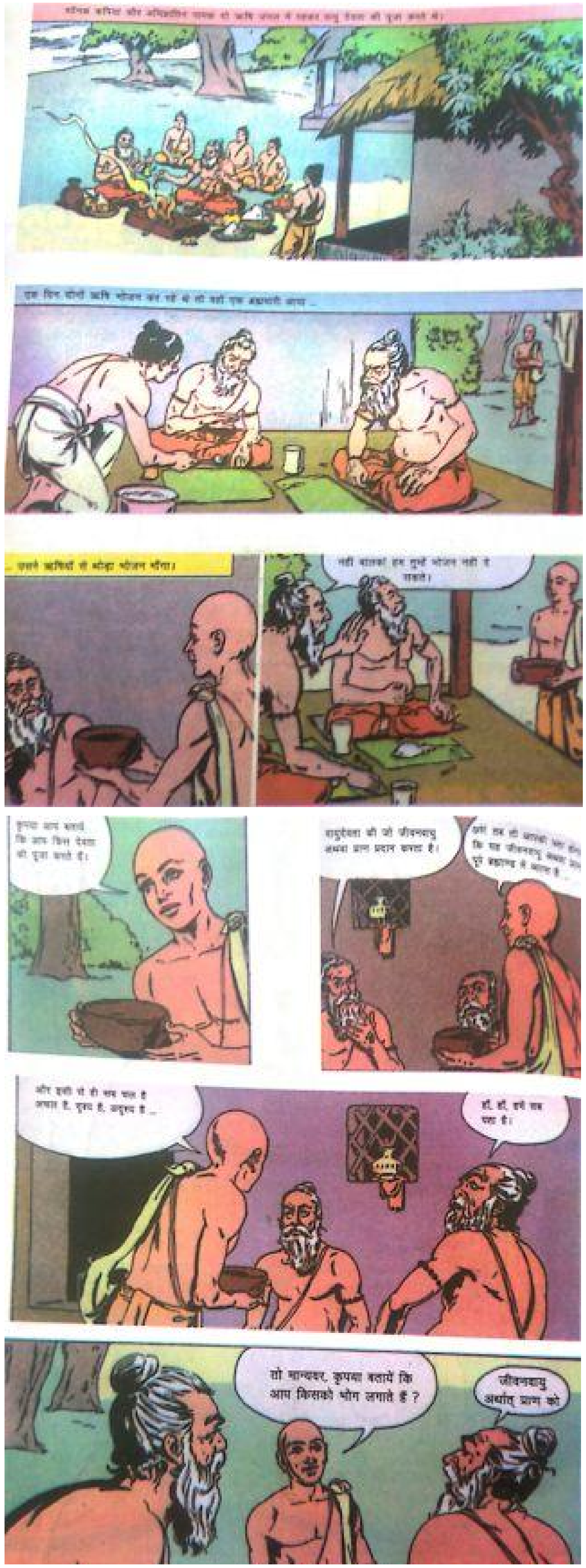
तो मान्यवर, कृपया बतायें कि आप किसको भोग लगाते हैं ?
जीवनवायु अर्थात् प्राण को

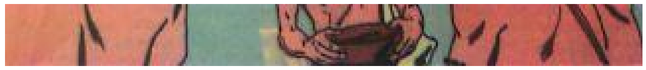

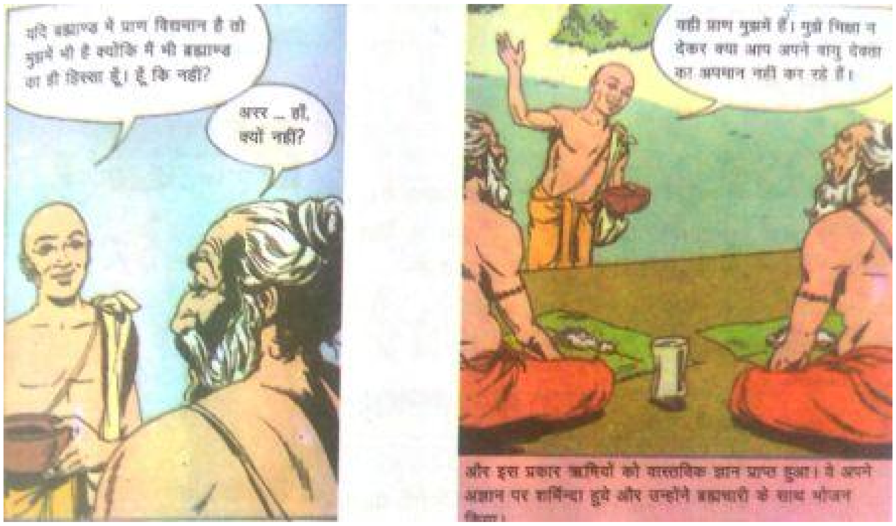

ऋषियों, मुनियों के अलावा कुछ और लोग भी ज्ञान की खोज में लगे थे, जो एक स्थान पर नहीं रहते थे। कई राजा भी इन ऋषियों की तरह चिन्तन में आगे थे। वे घर त्यागकर गाँव-गाँव, जंगल-जंगल, शहर-शहर, घूमते रहते थे। ऐसे लोगों में महावीर और गौतम बुद्ध बहुत प्रसिद्ध हुए।

महावीर (वर्धमान)

महावीर स्वामी जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर (महापुरुष) थे। इनके बचपन का नाम 'वर्धमान' था। इनका जन्म एक राजपरिवार में वैशाली (वर्तमान में बिहार राज्य) के निकट 540 ईसा पूर्व में हुआ था। सत्य और शान्ति की खोज में इन्होंने कठोर तप करने का मार्ग अपनाया। तीस वर्ष की अवस्था में घर छोड़कर कठिन तपस्या की और अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेने के कारण वे 'महावीर' और 'जिन' अर्थात् 'विजेता' कहे गए। स्वयं ज्ञान प्राप्त करने के बाद दूसरों की भलाई के लिए उन्होंने अपने सिद्धान्तों का प्रचार प्राकृत भाषा में किया, जो उस समय आम लोगों की बोलचाल की भाषा थी। महावीर स्वामी के अनुसार मनुष्य का सबसे बड़ा लक्ष्य जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करना है।

महावीर जैन

जीवन के विकास के लिए उन्होंने मन, वचन और कर्म से शुद्ध रहकर, तीन बातों को मानने पर विशेष बल दिया।

1.सही बातों में विश्वास।

2.सही बातों को ठीक से समझना।

3.उचित कर्म।

जैन धर्म में इन्हें 'त्रिरत्न' (तीन रत्न) कहा जाता है।

महावीर स्वामी ने अच्छे व्यवहार व आचरण के लिए पाँच 'महाव्रतों' का पालन करने के लिए कहा। ये महाव्रत हैं-

1.जीवों को न मारना।

2.सच बोलना।

3.चोरी न करना।

4.अनुचित धन न जुटाना।

5.इन्द्रियों को वश में रखना।

‘श्वेताम्बर’

महावीर स्वामी के निर्वाण के लगभग दो शताब्दियों बाद उनके जैन अनुयायी दो सम्प्रदायों में बँट गए - (सफेद कपड़े पहनने वाले) और ‘दिगम्बर’(निर्वस्त्र रहने वाले)।

गौतम बुद्ध

महात्मा बुद्ध ‘बौद्ध धर्म’ के संस्थापक थे। इनका जन्म ईसा से 563 वर्ष पूर्व नेपाल में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी नामक स्थान में हुआ था। उनके पिता शुद्धोधन शाक्य गणराज्य के राजा थे। गौतम बुद्ध के बचपन का नाम ‘सिद्धार्थ’ था।

एक बार जब 'सिद्धार्थ' अपने रथ पर बैठकर घूमने जा रहे थे तो रास्ते में एक वृद्ध को देखकर अपने सारथी से उसके बारे में पूछा।
चन्ना, यह कौन है? इसके बाल सफेद हैं। यह कमजोर दिखाई देता है। इसके शरीर में झुर्रियाँ क्यों हैं?
यह एक वृद्ध है अधिक आयु होने की वजह से यह ऐसा है। हर प्राणी एक न एक दिन वृद्ध होता है।
और आगे जाने पर ..
यह लोग इस व्यक्ति को ऐसे क्यों ले जा रहे हैं।
इस व्यक्ति की मृत्यु हो चुकी है। जो भी इस संसार में पैदा होता है। उसकी एक न एक दिन मृत्यु अवश्य होती है।
वापस लौटने पर ...
रुको, चन्ना ! यह कौन है ? यह बहुत शान्त दिखाई देता है। यह एकदम अलग दिखाई देता है उन लोगों से जिन्हें मैंने अभी देखा था।
यह एक साधु है। इसने अपने जीवन के यथार्थ को समझने के लिए सारे सुःखों और दुखों का त्याग कर दिया है।

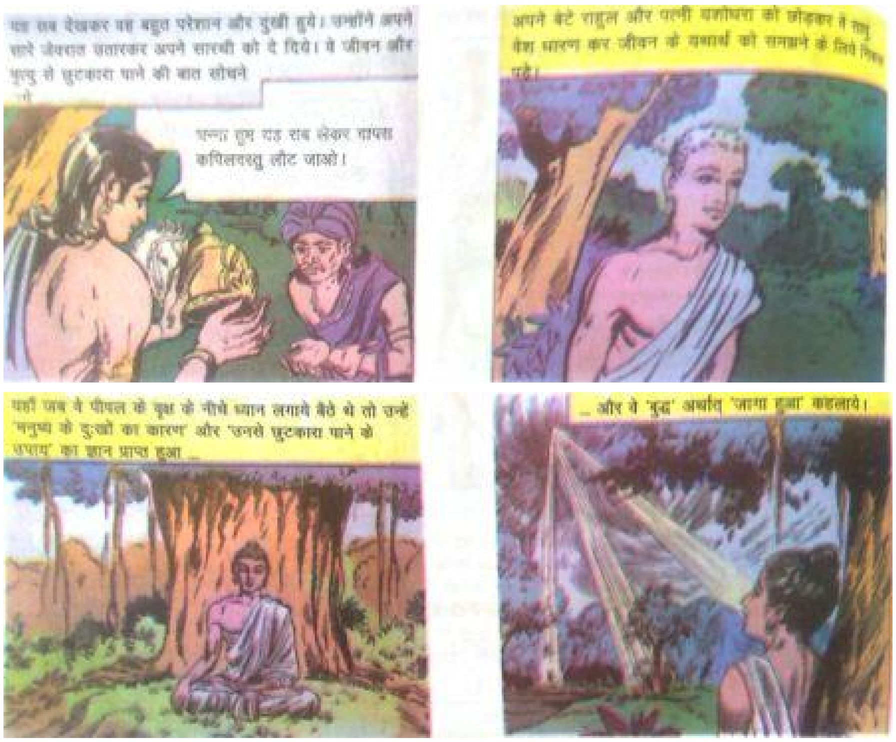

सच्चे ज्ञान और शान्ति की खोज के लिए उन्होंने काफी दिनों तक कठिन तपस्या की परन्तु उनको इससे शारीरिक कष्ट ही हुआ और उन्होंने इस रास्ते को छोड़ दिया। वे बहुत दिनों बाद बिहार प्रान्त के 'गया' स्थान पर ऋषियों के साथ पहुँचे जहाँ उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।

उन्होंने 'मध्यम मार्ग' (बीच का रास्ता) अपनाने की शिक्षा दी, जिसका अर्थ होता है - 'न तो विलासिता' और 'न तो अधिक कठोर तप'। गौतम बुद्ध ने 'चार आर्य सत्य' को माना है-

1.दुःख है। 3.दुःख दूर करने का उपाय भी है।

2.दु:ख का कारण है। 4.दु:खों के दूर करने का उपाय अष्टांगिक मार्ग है।

ये अष्टांगिक मार्ग सरल मानवता पूर्ण व्यवहार के नियम हैं -

-जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए सही सोच होना।

सही बात और कार्य करना।

-सत्य बोलना।

-अच्छा कार्य करना।

-अच्छे कार्य द्वारा जीविका अर्जित करना।

-मानसिक और नैतिक उन्नति के लिए प्रयास करना।

-अपने कार्य व्यवहार पर हमेशा नजर रखना।

-ज्ञान प्राप्ति के लिए ध्यान केन्द्रित करना।

सरल मानवतापूर्ण नियमों में से आप किन-किन बातों को अपनाते हैं। चर्चा करें।

महात्मा बुद्ध ने दु:ख से छुटकारा पाने को निर्वाण कहा है। उनके उपदेशों से मानव सोच में बहुत बड़ा बदलाव आया। उनके उपदेश सरल पाली भाषा में थे। उन्होंने बताया कि व्यक्ति का अच्छा या बुरा होना उसके व्यवहार पर निर्भर करता है न कि उसकी जाति पर।

''मुझे प्यास लगी है कृपया थोड़ा पानी दें, बहन'' महात्मा बुद्ध के शिष्य आनन्द ने प्रार्थना की।

''क्या आपको पता नहीं है कि मैं एक शूद्र हूँ ?'' उसने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

''मुझे यह नहीं जानना है कि तुम किस परिवार से हो या तुम्हारी क्या जाति है। यदि तुम्हारे पास पानी है तो कृपया मुझे पीने के लिए दें।'' आनन्द ने कहा।

इन घटनाओं व उनके सदाचरण से आम लोग अति प्रभावित हुए और दूर-दूर तक उनके अनुयायी हो गए। दो हजार वर्ष बीत जाने के बाद भी महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध के विचारों का अनुकरण आज भी हो रहा है। सोचो यदि वे कहते कुछ और करते कुछ तो क्या उनके ज्यादा अनुयायी होते?

गौतम बुद्ध के निर्वाण के कुछ शताब्दियों बाद उनके बौद्ध अनुयायी दो सम्प्रदायों में बँट गए- हीनयान (कट्टरपंथी) और महायान (उदारवादी)।

और भी जानिए

भारत की अहिंसावादी छवि इन्हीं के कारण हुई। इन धर्मों के आने से शाकाहारी संस्कृति को बढ़ावा मिला।

ये धर्म लोकतांत्रिक एवं उदार थे। संगठित धर्म पर जोर बढ़ने लगा जिसके कारण इन धर्मों का प्रचार दूर-दूर तक बढ़ा। संचार साधनों का अभाव होते हुए भी विदेशी नागरिकों ने इन धर्मों को अपनाया जैसे चीन व दक्षिण-पूर्वी एशिया।

इनके संघों में महिलाओं के प्रवेश के साथ-साथ उन्हें ऊँचा स्थान दिया गया।

बुद्ध के पूर्व जन्म से सम्बन्धित जातक एवं हितोपदेश ने कहानियों के माध्यम से उपदेशों को सरल भाव से लोगों तक पहुँचाया।

राष्ट्रध्वज के मध्य में बना चक्र बौद्ध प्रतीक 'धर्म चक्र परिवर्तन' है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित के विषय में लिखिए -

विवरण महावीर स्वामी गौतमबुद्ध

1. जन्म का समय

2. जन्म का स्थान

3. बचपन का नाम

4. माता का नाम

5. पिता का नाम

6. उपदेश की भाषा

2. त्रिरत्न और अष्टांगिक मार्ग क्या हैं ? यह किनसे सम्बन्धित हैं ? लिखिए।

3. जैन और बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों को लोगों ने क्यों अपनाया ?

4. महावीर स्वामी द्वारा बताए गए पाँच महाव्रतों के बारे में लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क

*महात्मा बुद्ध एवं महावीर स्वामी की शिक्षाओं को मोटे अक्षरों में दफ्ती पर लिखकर अपनी कक्षा में टाँगिए।

* सरल मानवतापूर्ण नियमों की सूची बनाइए।

पाठ 6

DJQRF9

महाजनपद की ओर

आप जानते हैं कि आपका जनपद (जिला) कई तहसीलों से मिलकर बना है। कई जनपदों से मिलकर आपका प्रदेश बना है। इसी प्रकार प्राचीन काल में छोटे-छोटे जनपद मिलकर महाजनपद बन गए।

जन से जनपद एवं महाजनपद

जन- वैदिक काल में जन एक राजनैतिक इकाई थी।

लगभग 600ई0पू0 में महाजनपदों का विकास हुआ। इस समय वैदिक काल के जन का स्वरूप बदल गया और ये जनपद से महाजनपद बन गए।

ये कैसे बने ?

ीकुछ जनों (समूह) ने विकास किया, फलस्वरुप महाजनपद का स्वरूप प्राप्त कर लिया।

ीकुछ जनपदों के क्षेत्र बड़े थे। साथ ही दूसरे जनपदों की तुलना में ज्यादा शक्तिशाली भी थे। यही जनपद महाजनपद कहलाये। 600ई0पू0 में 16 महाजनपद थे। इन महाजनपदों में से चौदह में राजतन्त्र तथा दो में गणतंत्र था।

इनके अतिरिक्त कुछ गणराज्य और भी थे जिनका प्रशासन भी गणतन्त्रीय था जैसे- कपिलवस्तु के शाक्य, वैशाली के लिच्छवि, पावा के मल्ल आदि।

राजतन्त्र में शासन का प्रधान वंशानुगत राजा होता था।

प्राचीन कालीन गणतंत्र में शासन की शक्ति सम्पूर्ण जनता के हाथों में न होकर किसी कुल अथवा गण विशेष के प्रमुख व्यक्तियों के हाथों में होती थी।

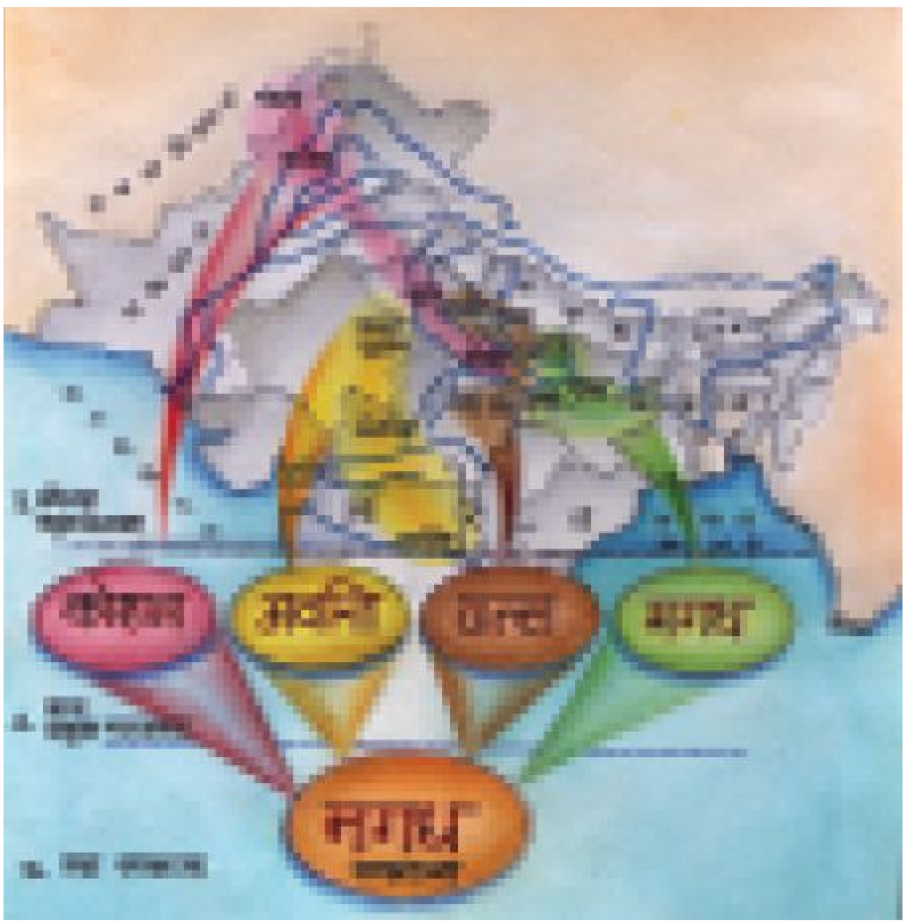

महाजनपद से साम्राज्य तक

16 महाजनपदों में से निम्नांकित 4 प्रमुख महाजनपद -

1. मगध (गया, मंुगेर)
2. कोशल (फैजाबाद)
3. वत्स (इलाहाबाद)
4. अवन्ति (मालवा)

प्रशासन, समाज और लोगों के जीवन में बदलाव

महाजनपद काल में राजा की शक्ति बढ़ गई थी। अब वह एक अतिविशिष्ट व्यक्ति बन गया था और वह समाज का रक्षक था। उसका मुख्य कर्तव्य दुश्मनों से प्रजा की रक्षा व राज्य में शांति व्यवस्था, कल्याण और न्याय करना था। शासन के कार्य में मदद हेतु अनेक अधिकारी और कर्मचारी भी नियुक्त किए गए।

राजाओं की प्रकृति अपने राज्य को बढ़ाने में थी इसलिए उन्हें बड़ी-बड़ी सेनाएँ भी रखनी पड़ती थी। राजा सेना का प्रमुख होता था तथा वही युद्ध में सेना का संचालन करता था। राज्य की आय के लिए प्रजा से कर वसूला जाता था। व्यापार के द्वारा भी आय प्राप्त होती थी। इस समय वस्तुओं की खरीद एवं बिक्री रुपये-पैसे द्वारा होने लगी थी। बड़ी-बड़ी सड़कों से व्यापार में काफी वृद्धि होने लगी थी। ईरान, मध्य एशिया, और दक्षिण पूर्व-एशिया से व्यापारी भारत आते थे। शिल्पकार और व्यापारियों ने व्यापार के विकास के लिए समूह और संगठन भी बनाए।

फिर बने शहर

शहरों का जीवन

इस युग में पहले की अपेक्षा एक और बड़ा बदलाव देखने को मिलता है, वह था शहरों का विकास। इन शहरों का विकास प्रायः शिल्प केन्द्रों, व्यापारिक-केन्द्रों और राजधानियों के आस-पास हुआ। प्रारम्भ में कुछ गाँव ऐसे थे जिनमें शिल्प कार्य अधिक विकसित अवस्था में था। धीरे-धीरे ये कुशल शिल्पी एक स्थान पर एकत्र होने लगे और ये स्थान गाँव एवं शहर के रूप में बदलते गए। इन कुशल शिल्पियों ने एक स्थान पर रहकर काम करना इसलिए पसंद किया, क्योंकि इन्हें कच्चा माल प्राप्त करने और तैयार की हुई चीजों को बेचने में अधिक सुविधा होती थी। विभिन्न व्यवसायों को पुत्र अपने पिता से सीखता और व्यवसाय करता था। विभिन्न प्रकार के शिल्प कार्य करने वालों के अलग-अलग वर्ग बन गए। धीरे-धीरे इनका कार्य वंशानुगत हो गया और समाज में अधिक जटिलता एवं कठोरता व्याप्त हो गई।

वह कौन सी विशेषताएँ हैं जो शहरों में होती हैं किन्तु गाँवों में नहीं होतीं। चर्चा कीजिए-

मगध साम्राज्य

इन छोटे-छोटे राज्यों में एकता का अभाव था। एक राज्य दूसरे राज्य से अधिक शक्तिशाली बनना चाहता था। इस कारण इनमें आपस में संघर्ष होता रहता था। बड़े राज्य छोटे राज्यों को हड़पते चले गए। बिल्कुल वैसे ही जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है। वे अपना राज्य क्षेत्र तथा प्रभाव बढ़ाने के लिए कई तरीके अपनाते थे। जैसे दूसरे राज्यों से मित्रता करना, शादी से रिश्ते बनाना, संधि करना या फिर सीधे आक्रमण करना। इस प्रकार एक राज्य दूसरे राज्यों में मिलते चले गए। अन्त में मगध सबसे शक्तिशाली साम्राज्य हो गया।

साम्राज्य- जब राजा अपने राज्य की सीमा का अत्यधिक विस्तार कर लेते हैं तो उनके राज्य को साम्राज्य कहा जाता है।

छठी शताब्दी ई0पू0 से नन्दों के साम्राज्य की स्थापना तक मगध में क्रमशः तीन राजवंशों का शासन हुआ - हर्यक वंश, शिशुनाग वंश एवं नन्द वंश। इनका शासनकाल लगभग 220 वर्षों तक रहा। घननन्द नंदवंश का अन्तिम शासक था जिसके समय में सिकन्दर भारत आया। मगध साम्राज्य के शासकों ने अपने साम्राज्य के और अधिक विस्तार की नीति अपनायी। उनके पास एक विशाल सेना थी, जिसमें हजारों घुड़सवार और हाथी भी थे। यही कारण है कि मगध राज्य एक विशाल साम्राज्य बन सका।

सिकन्दर और पुरु में युद्ध

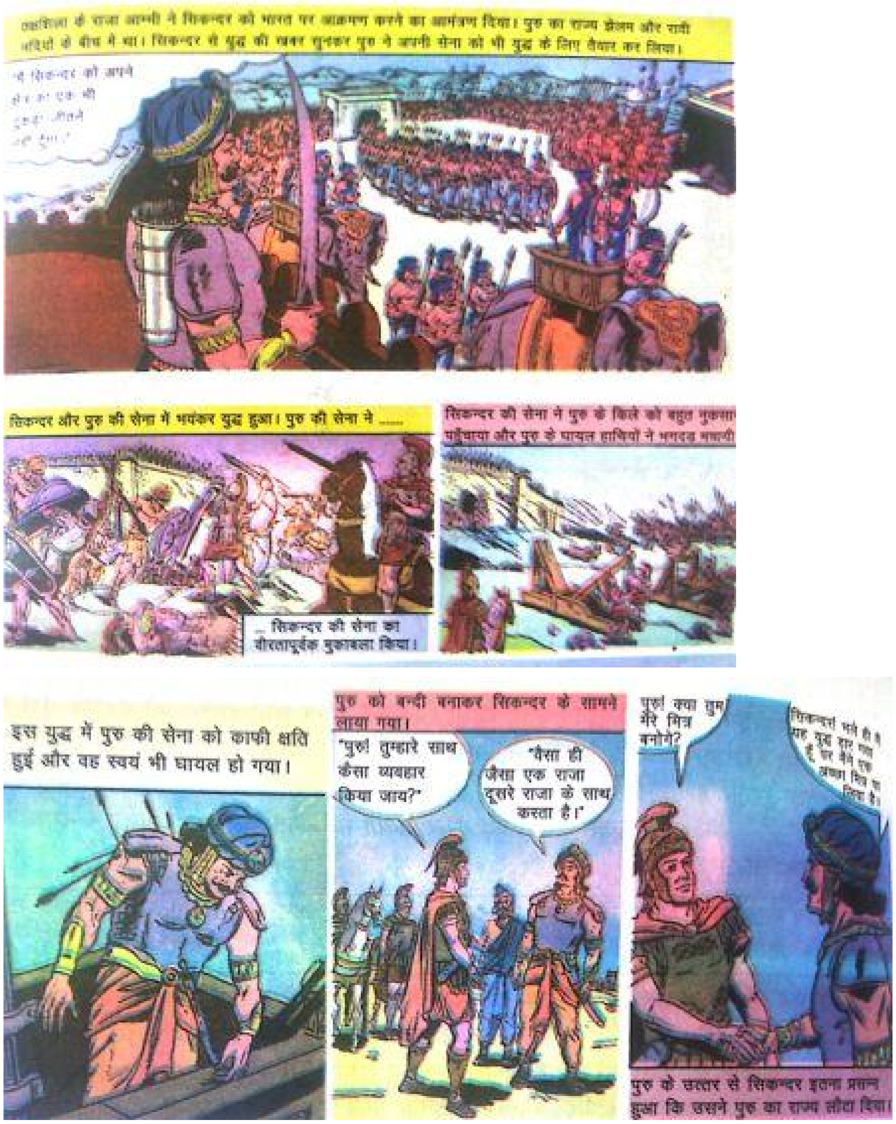

विरोधियों से भी क्या सीखा जा सकता है ? चर्चा करें-

सिकन्दर का आक्रमण

उन दिनों यूरोप महाद्वीप के यूनान देश में मेसिडोनिया नाम का एक राज्य था। वहाँ का राजा सिकन्दर अपनी विशाल सेना लेकर दुनिया जीतने के इरादे से चला। वह पारसीक (हखमनी) साम्राज्य के सम्राट व अन्य बहुत से राजाओं को हराता हुआ सिन्धु नदी के किनारे पहुँचा। वहाँ उसने बहुत से छोटे-छोटे राज्यों को हराया। इनमें से एक राजा था पुरु जिसकी कहानी चित्रकथा के रूप में आपने पढ़ी।

अब सिकन्दर की सेना लड़ते-लड़ते थक चुकी थी। जब उसने मगध के राजा धननन्द की विशाल सेना के बारे में सुना तो उसने मगध की सेना से लड़ने से इंकार कर दिया और वे मेसिडोनिया लौट गए।

सिकन्दर के आक्रमण का प्रभाव

राजनैतिक क्षेत्र से ज्यादा सिकन्दर के आक्रमण का प्रभाव सांस्कृतिक क्षेत्र में पड़ा जैसे-

- ीसिकन्दर ने भारत पर 326ई0पू0 में आक्रमण किया था। सिकन्दर के भारतीय आक्रमण के विवरण से भारतीय इतिहास की तिथि निर्धारण में सहायता मिलती है।
- ीसिकन्दर के आक्रमण ने भारत के द्वार यूनानी सम्पर्क और प्रभावों के लिए खोल दिए।
- ीइस घटना के बाद विदेशों से घनिष्ठ व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हुए।
- ीभारतीय शिल्पकला और ज्योतिष विज्ञान के क्षेत्र पर यूनानी लेखकों का गहरा प्रभाव पड़ा।
- ीभारतीय सिक्कों पर यूनानी सिक्कों की निर्माण शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

मगध राज्य के वंश

हर्यक वंश
(544-492 ई0पू0)

शिशुनाग वंश
(492-344 ई0पू0)

नंद वंश
(344-323 ई0पू0)

अभ्यास

उत्तर लिखो-

1. महाजनपद कैसे बने ?

2. सोलह महाजनपदों में से प्रमुख चार महाजनपदों के नाम लिखिए।

3. राजतंत्र एवं गणतंत्र का अन्तर बताइए ?

4. अपने राज्य को शक्तिशाली बनाने के लिए राजाओं ने क्या प्रयास किया ?

5. सिकन्दर ने राजा पुरू के साथ कैसा व्यवहार किया ?

6. रिक्त स्थान भरिए-

अ. राज्य की सीमा का अत्यधिक विस्तार करने वाले राज्य को .... कहा जाता है।

ब. महाजनपद काल में राजा .... का रक्षक था।

स. .... के समय सिकन्दर भारत आया।

द. आम्भी .... का राजा था।

गतिविधि

शिक्षक की सहायता से अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए कि निम्न महाजनपद वर्तमान के किस राज्य में स्थिति थे -

मगध काशी मत्स्य

अंग शूरसेन मल्ल

प्रोजेक्ट वर्क

*आप जिस स्थान में रहते हैं पता करें कि 16 महाजनपदों में से आपका क्षेत्र किससे सम्बन्धित था।

* वर्तमान में उत्तर प्रदेश में कुल कितने जिले हैं, सूची बनाइए।

पाठ 7

DK9IIJ

मौर्य साम्राज्य

आप आजकल के प्रचलित सिक्कों को ध्यान से देखिए। इसके एक ओर पीठ से पीठ सटाए हुए चार सिंह बैठे हैं। ये सिंह अशोक के सारनाथ स्तम्भ से लिए गए हैं। अशोक जिस वंश का शासक था वह वंश था- मौर्य वंश।

सिकन्दर ने 326 ई0पू0 में पश्चिमोत्तर भारत में आक्रमण किया। इस समय यहाँ नन्दवंश के शासक घननन्द का शासन था। वह बहुत ही क्रूर शासक था। चन्द्रगुप्त नामक व्यक्ति उसकी सेना में नौकरी करता था। चन्द्रगुप्त ने राजा के दुर्व्यवहार से ऊबकर राजा के खिलाफ विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह के कारण उसे मृत्युदण्ड दिया गया लेकिन चन्द्रगुप्त इससे बचकर मगध से भाग निकला। उसने नन्दवंश के विनाश के लिए मन में ठान लिया।

चन्द्रगुप्त और चाणक्य

इसी समय चन्द्रगुप्त की भेंट चाणक्य (कौटिल्य) से हुई जिसकी मदद से चन्द्रगुप्त ने मगध पर आक्रमण कर दिया तथा नन्द राजवंश का तख्ता पलटकर 322 ई0पू0 में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

यूनानी सेनापति सेल्यूकस ने 305 ई0पू0 में पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण किया जिसे चन्द्रगुप्त ने परास्त कर दिया। सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त से एक संधि करनी पड़ी जिससे चन्द्रगुप्त को हिन्दुकुश पर्वत तक के प्रान्त उपहार में मिले। सेल्यूकस ने मेगस्थनीज नामक राजदूत चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा। इस प्रकार चन्द्रगुप्त ने भारत में प्रथम बार एक केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत विशाल साम्राज्य स्थापित कर लिया।

मौर्य प्रशासन

मेगस्थनीज की इण्डिका और कौटिल्य के अर्थशास्त्र पुस्तकों से मौर्यों के विशाल प्रशासन तंत्र की जानकारी मिलती है। चन्द्रगुप्त सारे अधिकार अपने ही हाथों में रखे हुए था। राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद गठित थी। बुद्धिमान लोग इसके सदस्य थे जो राजा को सलाह देते थे।

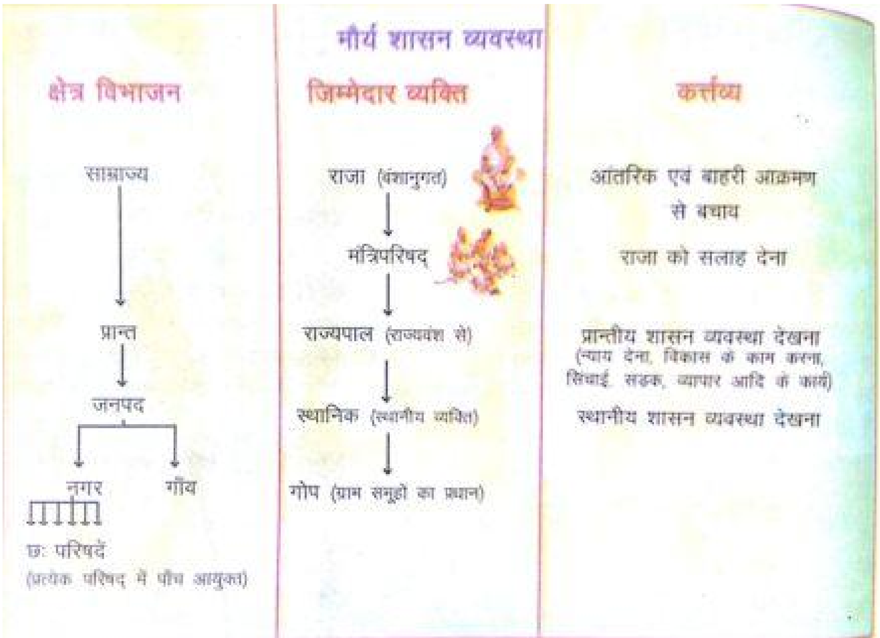

इतने बड़े साम्राज्य के अच्छे प्रशासन के लिए तीन स्तरों की शासन व्यवस्था थी - प्रान्त, जनपद और नगर/गाँव।

1.इस समय नौकरशाही व्यवस्था थी। वेतन राजकोष से दिया जाता था।

2.प्रान्त से लेकर गाँव तक की वस्तुस्थिति को राजा समय-समय पर दौरा करके स्वयं भी देखता था।

3.गुप्तचर पूरे साम्राज्य की सूचना राजा को देते थे।

4.बाहरी आक्रमण व आन्तरिक विद्रोह को दबाने के लिए थल (पैदल, हाथी, घोड़े) व जल की एक विशाल सेना राजा के पास थी।

5.इतनी बड़ी व्यवस्था चलाने के लिए धन की आवश्यकता थी जिसके लिए राजा की नीति खजाने को हमेशा भरा रखने की थी। इस समय राजस्व व्यवस्था बहुत ही थी।

6.कृषिकर, सिंचाईकर, व्यवसायी संगठनों पर बिक्रीकर आय के मुख्य स्रोत थे। इन करों को बड़ी सावधानी से इकट्ठा किया जाता था। इन करों का लेखा-जोखा रखा जाता था।

7.राज्य में आने वाले जंगलों एवं खानों पर राजा का स्वामित्व होता था। राज्य अपनी सेना के लिए हथियारों का निर्माण करता था।

8.लगभग 2500 वर्ष पहले के शासन का ढाँचा, आज भी हमारे देश के शासन के ढाँचे से मिलता है।

उपयुर्क्त बिन्दुओं के आधार पर बताओ कि हमारे आज के शासन व मगध के शासन में क्या-क्या समानताएँ व भिन्नताएँ है?

बूझो तो जानें

मेगस्थनीज ने अपनी भारत यात्रा विवरण में उन चीजों के बारे में जिक्र किया है जो उसे आश्चर्यजनक लगी थीं। क्या आप बता सकते हैं कि उसने किनके बारे में लिखा होगा ?

1.इसकी जड़ें तनों से उगती हैं। इसकी छाया में 400 लोग एक साथ रह सकते हैं।

2.बिना मधुमक्खी के शहद निकलता है।

3.ऊन पेड़ों से उगती है।

4.पक्षी जो मनुष्य जैसे बोलते हैं।

मेगस्थनीज की नजर में -

लोग सभ्य थे। वे अपने घरों में ताला नहीं लगाते थे।

वे अपनी कही बातों का पालन करते थे।

वे झूठी गवाही नहीं देते थे।

उनके महल सोने-चाँदी से बने थे।

मगध साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र का क्षेत्रफल 9 मील लम्बा डेढ़ मील चौड़ा था।

तक्षशिला से पाटलिपुत्र तक की सड़कों के दोनों ओर छायादार वृक्ष तथा जगह-जगह पर कुएँ थे।

चन्द्रगुप्त के बाद, उनका बेटा बिन्दुसार, मगध की गद्दी पर बैठा। उनकी मृत्यु के बाद उनका बेटा अशोक मगध की गद्दी पर बैठा। अशोक युद्धप्रिय था। उसने कई राज्यों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। अब कलिंग (वर्तमान में उड़ीसा राज्य में) पर विजय करना शेष था।

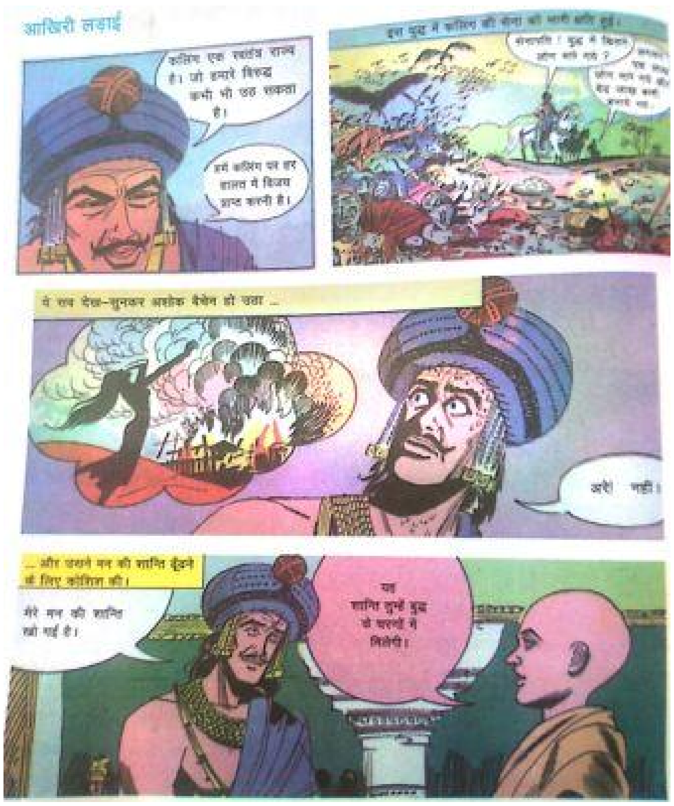

अशोक ने ऐसा फैसला किया जो आमतौर पर कोई राजा नहीं करता। उसने कलिंग को युद्ध में हराने के बाद तय किया कि वह भविष्य में कोई युद्ध नहीं लड़ेगा।

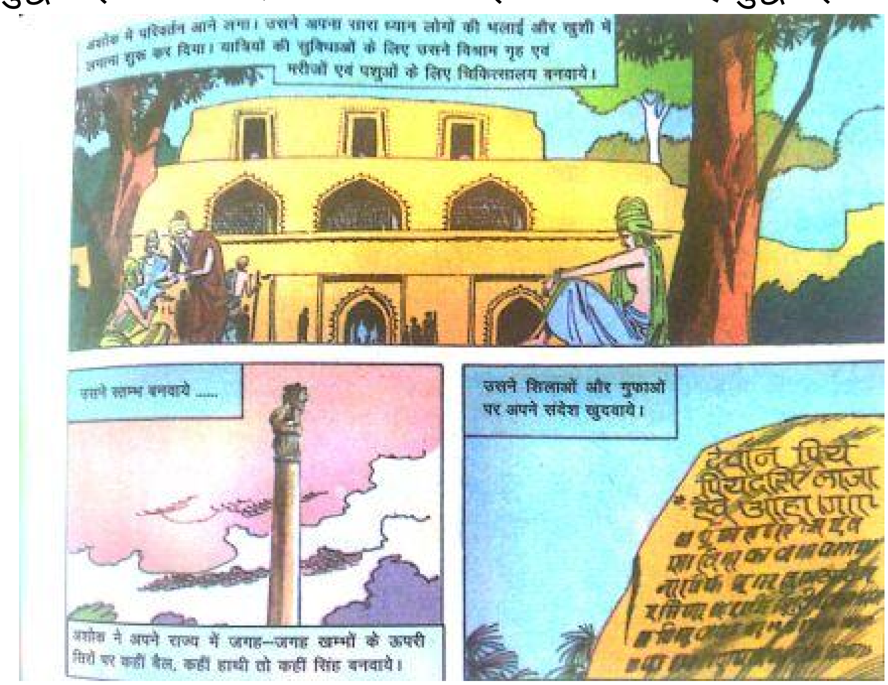

अशोक का धम्म (धर्म को पाली भाषा में धम्म कहते हैं।)

अशोक स्वयं राज्य में दूर-दूर की जगहों का दौरा करता था। अशोक ने अपने राज्य में जगह-जगह चट्टानों पर लम्बे, सुन्दर, चमकाए हुए पत्थरों से बने खम्भे गड़वाए। इन खम्भों पर वहाँ के अधिकारियों व लोगों के लिए अपने संदेश भी खुदवाए ताकि लोग उसकी बातों पर ध्यान दे सकें। उसने यह संदेश लोगों की बोलचाल की भाषा यानि प्राकृत भाषा में लिखवाए। चट्टानों व खम्भों पर खुदे उसके संदेशों से हम अशोक के समय की कई बातें जान सकते हैं।

''हर किस्म के लोगों पर युद्ध का बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे मैं बहुत दुःखी हूँ। इस युद्ध के बाद मैंने मन लगाकर धर्म का पालन किया है और दूसरों को यही सिखाया है।''

''मैं मानता हूँ कि धर्म से जीतना युद्ध से जीतने से बेहतर है। मैं यह बातें खुदवा रहा हूँ ताकि मेरे पुत्र और पौत्र भी युद्ध करने की बात न सोचें और धर्म फैलाने की बात सोचें।''

उसने जीवन के बारे में प्रजा को सही राह दिखाने के लिए अलग से अधिकारी रखे जिन्हें धम्म महामात्र कहा गया। उनका काम था कि वे गाँव-गाँव, नगर-नगर जाकर लोगों को सही व्यवहार की बातें बताएं।

आइये अशोक का संदेश पढ़ें:

''यहाँ किसी जीव को मारा नहीं जायेगा और उसकी बलि नहीं चढ़ाई जाएगी।''

''लोग तरह-तरह के अवसरों पर तरह-तरह के संस्कार करते हैं।''

''ऐसे धार्मिक संस्कारों को करना तो चाहिए पर इनसे मिलने वाला लाभ कम ही है। कुछ संस्कार ऐसे होते हैं जिनसे ज्यादा फल मिलता है। वे क्या हैं ? वे हैं, दास

और मजदूरों से नम्रता का व्यवहार करना, बड़ों का आदर करना, जीव-जन्तुओं पर दया करना, गरीबों को दान देना आदि।"

साँची स्तूप

आपको यह भी जानना चाहिए -

अशोक प्राचीन भारत का एक महान शासक है। अशोक को इसलिए महान नहीं कहा जाता है कि उसने प्राचीन भारत के सबसे बड़े साम्राज्य पर शासन किया था बल्कि विश्व को शांति, अहिंसा का संदेश देने एवं उसकी जनकल्याण की भावना के कारण महान कहा गया है।

अशोक की बातें आज भी कहाँ तक सार्थक हैं। चर्चा कीजिए।

अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र और बेटी संघमित्रा को अपने संदेश के प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा। अशोक ने बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों में एकरूपता लाने के लिए पाटलिपुत्र में एक बड़ी सभा की जिसे तीसरी बौद्ध सभा भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त अशोक ने बौद्ध स्तूपों (धार्मिक स्मारक) एवं बौद्ध विहारों (भिक्षुओं के रहने का स्थान) का निर्माण कराया। साँची स्तूप के निर्माण की शुरुआत उसी ने कराई थी। पीठ से पीठ सटाकर बैठे हुए चार सिंह हमारा राजचिह्न है इसे अशोक के सारनाथ स्तम्भ से लिया गया है। विश्व के इतिहास में अशोक के समान उदार व मानवतावादी सम्राट आज तक नहीं हुआ है।

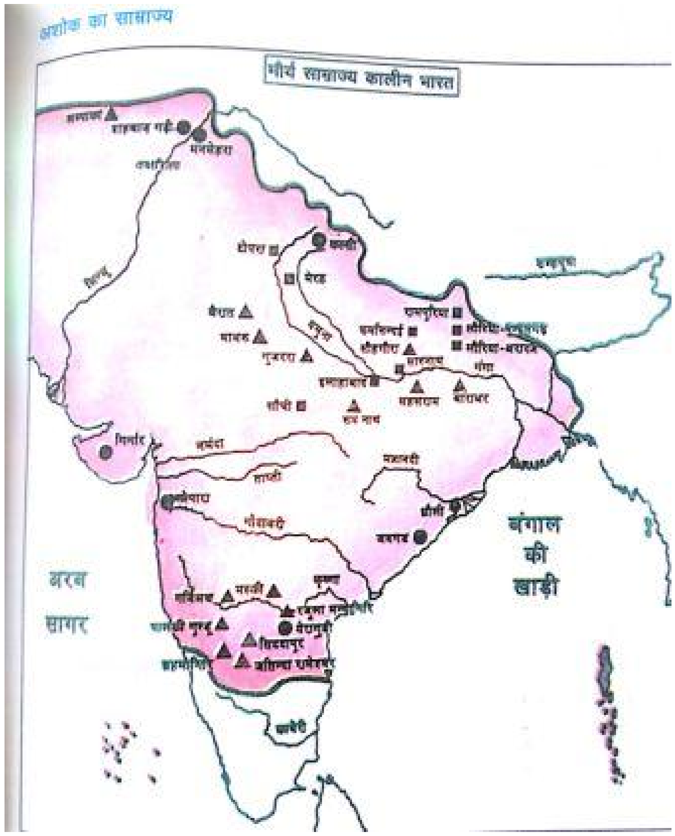

मौर्य साम्राज्य का पतन

वंशानुगत साम्राज्य तभी तक बने रहते हैं जब तक योग्य शासकों की कड़ी बनी रहती है। अशोक के दुर्बल उत्तराधिकारियों के कारण दूरस्थ प्रान्त स्वतंत्र होने लगे। देश में विदेशी आक्रमण होने लगे।

धीरे-धीरे साम्राज्य की शक्ति कमजोर होती गई। पुष्यमित्र शुंग जो मौर्य साम्राज्य में सेनापति था, ने मौर्य साम्राज्य पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।

संगम साहित्य

मौर्य साम्राज्य के समकालीन सुदूर दक्षिण में तीन राज्य चोल (कारोमण्डल तट), चेर (केरल) एवं पांड्य (दक्षिण छोर) थे। इन राज्यों के इतिहास की जानकारी तमिल भाषा के प्राचीनतम साहित्य ''संगम साहित्य'' में मिलती है, जो प्रथम शताब्दी में लिखा गया था। इससे इन राज्यों के जीवन एवं युद्धों का पता चलता है।

मौर्य वंश कितने वर्ष चन्द्र गुप्त मौर्य (322 से 298 ई0पू0)(........ वर्ष) बिन्दुसार (298 से 273 ई0पू0)(........ वर्ष) अशोक (273 से 236 ई0पू0)(........ वर्ष) वृहद्रथ (अन्तिम शासक)

***अभ्यास**

1. शुंगवंश का संस्थापक कौन था?

2. कण्व वंश के अन्तिम शासक का नाम बताइए।

3. सिमुक किस वंश का शासक था?

4. सातवाहन कालीन धर्म की क्या विशेषता थी?

5. भारत के विदेशों से सम्पर्क के कारण व्यापार, पहनावा, ज्ञान विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में क्या बदलाव आया ?

6. कुषाण कालीन कला की विशेषता का उल्लेख करिए।

7. विदेशियों ने भारत से क्या सीखा? लिखिए।

8. भारतीय संस्कृति की ऐसी क्या विशेषताएं हैं, जिससे कि वह अन्य प्राचीन सभ्यताओं से भिन्न है?

9. सही कथन के सामने (झ) तथा गलत कथन पर (´) का निशान लगाइए -

अ. कार्ले का चैत्य मण्डप कुषाणों ने बनवाया।

ब. मिनाण्डर शक शासक था।

स. भारत में सोने के सिक्के सबसे पहले कुषाण राजा ने चलाए ।

द. मथुरा एवं गान्धार कुषाण काल की कला के प्रमुख केन्द्र थे।

10 रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

अ. सातवाहन वंश के शासक .... धर्म के अनुयायी थे।

ब. कनिष्क ने ....संवत् चलाया।

स. कण्व वंश के संस्थापक ....थे।

द. शक शासकों में ....सबसे अधिक विख्यात शासक था।

प्रोजेक्ट वर्क

गान्धार शैली एवं मथुरा शैली के किन्हीं दो-दो मूर्तियों के चित्र अपनी पुस्तिका में चिपकाएँ और विशेषताआंे का उल्लेख कीजिए।

पाठ 8

मौर्योत्तर काल में भारत की स्थिति व विदेशियों से सम्पर्क

हम अपने परिचितों, रिश्तेदारों आदि के घर जाते हैं। प्रायः हम इनसे रहन-सहन, तौर-तरीके, भोजन आदि सम्बन्धी अच्छी बातें सीख लेते हैं। इसी प्रकार एक देश से दूसरे देश को जाने वाले लोग भी एक-दूसरे से बहुत कुछ सीख लेते हैं। भारत में भी जब विदेशी लोग आए और यहाँ शासन किया तब उनसे हमने और उन्होंने हमसे बहुत सी बातें सीखीं।

मौर्यों के बाद लगभग 200 ई0पू0 से जो काल आरम्भ होता है उसमें अधिकतर छोटे-छोटे राज्य हुए। पूर्वी भारत, मध्य भारत और दक्कन (दक्षिण) में मौर्यों के स्थान पर कई स्थानीय ब्राह्मण शासक सत्ता में आए जैसे शुंग, कण्व और सातवाहन। इनमें सातवाहन (आन्ध्र) सब से अधिक प्रसिद्ध हुए।

सातवाहन वंश (लगभग 30 ई0पू0 से 203 ई0 तक)

कार्ले का चैत्य का भीतरी दृश्य

इस वंश का संस्थापक सिमुक था। उसके उत्तराधिकारियों ने अपने पराक्रम से एक विशाल राज्य की स्थापना की।

इस वंश के शासक वैदिक धर्म के अनुयायी थे। इन्होंने सभी धर्मों के प्रति समान दृष्टिकोण अपनाया। बौद्ध भिक्षुओं को भी भूमि तथा ग्राम दान में दिए।

इसी समय पत्थर की ठोस चट्टानों को काटकर चैत्यों और विहारों का निर्माण हुआ। इनमें कार्ले का चैत्य मण्डप प्रसिद्ध है।

चैत्य बौद्ध धर्म के प्रार्थना स्थल होते हैं।

पश्चिमोत्तर भारत

पश्चिमोत्तर भारत में भी मौर्यों के स्थान पर मध्य एशिया और चीन से आए कई विदेशी राजवंशों ने अपना शासन जमाया जैसे हिन्द-यूनानी, शक, पह्लव और कुषाण।

सबसे अधिक विख्यात हिन्द-यूनानी शासक मिनाण्डर हुआ। वह मिलिन्द नाम से भी जाना जाता है। उसकी राजधानी पंजाब में शाकल (आधुनिक सियालकोट) थी।

यूनानियों के बाद शक आए। शक शासकों में रुद्रदामन प्रथम सबसे अधिक विख्यात शासक था। शक के बाद पह्लव (पार्थियाई) ईरान से भारत में आए। वे शकों की तरह भारतीय राजतंत्र और समाज के अभिन्न अंग बन गए।

पह्लवों के बाद कुषाण आए, कुषाण शासकों में कनिष्क सर्वाधिक विख्यात शासक हुआ। वह इतिहास में दो कारणों से प्रसिद्ध हुआ। पहला- उसने 78 ई0 में एक संवत् चलाया जो शक संवत् कहलाता है और भारत सरकार द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। दूसरा- उसने बौद्ध धर्म को अपनाकर कश्मीर में चौथी बौद्धसभा को भी आयोजित करवाया था।

पारस्परिक आदान-प्रदान

तकनीकी

भारतीयों ने हिन्द-यूनानी व कुषाणों से सोना व चाँदी को पिघलाकर सिक्के बनाने का नया तरीका सीखा। यह विधि, पूर्व प्रचलित चाँदी की चादर के कटे हुए टुकड़ों में लगे ठप्पों के सिक्कों से अधिक सुंदर व स्पष्ट थी। इन सिक्कों में राजाओं के चित्र व लिपि बहुत ही सुन्दर व स्पष्ट थी।

चाँदी से निर्मित यूनानी सिक्का

इन सिक्कों से वर्तमान सिक्कों की तुलना करें और चर्चा करें कि वर्तमान सिक्कों से किस प्रकार और कितने भिन्न हैं।

कुषाण कालीन सोने का सिक्का

पहनावा

शक व कुषाण पगड़ी, कुर्ती, पजामा, लम्बे जूते और भारी लम्बे कोट (शेरवानी) को प्रचलन में लाए।

व्यापार

- मध्य एशिया व रोमन साम्राज्य से सम्पर्क होने से भारी मात्रा में सोना प्राप्त हुआ।
- काँच के बने बर्तन को बनाने की तकनीक में भी प्रगति हुई।
- इस काल में नगरीकरण चोटी पर पहुँच गया था। कनिष्क ने तक्षशिला, पुरुषपुर नगर का सुन्दरीकरण किया और कश्मीर में कनिष्कपुर नगर (आधुनिक कांजीपुर श्रीनगर के पास) बसाया।

कनिष्क की सिर विहीन मूर्ति

ीकुषाणों ने चीन से मध्य एशिया होते हुए रोमन साम्राज्य को जाने वाले प्रख्यात रेशम मार्ग पर नियंत्रण कर लिया था जिससे भारतीय व्यापार के लिए नए अवसर मिले और भारतीय व्यापार में वृद्धि हुई।

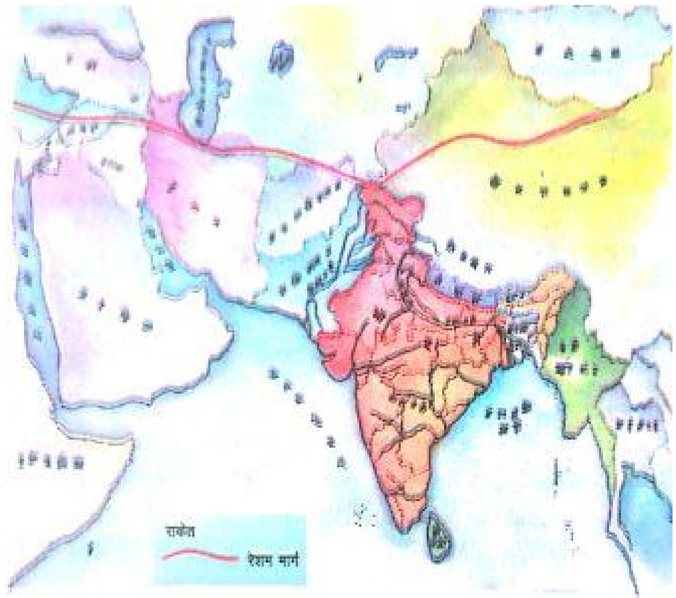

मानचित्र देखकर लिखिए–

1. उन देशों के नाम लिखिए जिन देशों से होकर रेशम का व्यापार होता था।

....

....

....

....

....

विज्ञान और प्रौद्योगिकी

हिन्द यूनानियों के सम्पर्क से खगोल एवं ज्योतिष शास्त्र में प्रगति हुई। सप्ताह के हर दिन को सूर्य, चन्द्रमा एवं अन्य ग्रहों के नाम से पुकारते हैं जैसे - रवि, सोम, मंगल, शनि। यह हमने यूनानियों से सीखा।

यूनानी औषधि पद्धति के विषय में जानकारी हुई।

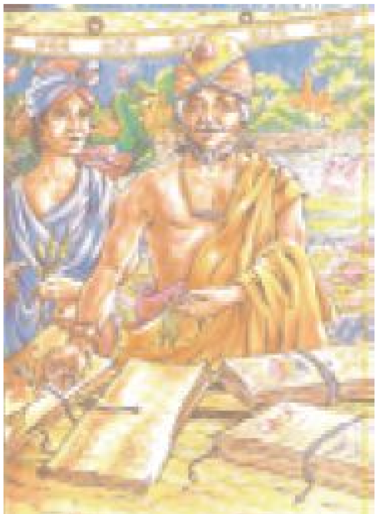

चरक एवं उनका सहयोगी

कनिष्क के समय चरक नामक चिकित्सक हुए। इन्होंने चरकसंहिता नाम की एक पुस्तक लिखी जिसमें 600 से ज्यादा औषधियों के बारे में लिखा है। यह संहिता निर्देश देती है कि चिकित्सक को अपने मरीजों से विश्वासघात नहीं करना चाहिए।

मूर्तिकला

कुषाणकाल की कला के दो प्रमुख केन्द्र मथुरा एवं गान्धार थे। मथुरा में लाल बलुआ पत्थर और गान्धार में स्लेटी पत्थर की मूर्तियाँ गढ़ी जाती थीं।

वदोनों मूर्तियों में क्या फर्क है ?

गान्धार शैली की मूर्ति मथुरा शैली की मूर्ति

वमूर्ति के कपड़ों की चुन्नटें कहाँ के कलाकार ज्यादा दिखाते थे ?

वबालों के घुँघरालेपन को कहाँ के कलाकार ज्यादा उभारकर बनाते थे ?

वक्या तुम्हें और भी कोई फर्क दिख रहा है ?

राज्य व्यवस्था

राजा में देवत्व की भावना की प्रणाली शकों एवं कुषाणों से प्राप्त हुई। ''महाराजाधिराज" की अवधारणा कुषाणों की देन है।

उन्होंने भारत से क्या सीखा ?

विदेश से आए आक्रमणकारियों के पास अपनी भाषा, लिपि एवं कोई सुव्यवस्थित धर्म नहीं थे, इसलिए उन्होंने संस्कृति के इन उपादानों को भारत से लिया। भारत में विदेशी प्रभाव से एक मिली जुली संस्कृति का विकास हुआ। चीन ने बौद्ध चित्रकला भारत से सीखी।

भारतीय संस्कृति में अन्य देशों की संस्कृतियों को मिला लेने की अपूर्व क्षमता रही है। यही कारण है कि विदेशी आक्रमणकारी भी भारतीय समाज के अभिन्न अंग बन गए। भारतीय संस्कृति में सहिष्णुता, सामाजिक मेलजोल, लचीलापन, उदारवादिता व वसुधैव कुटुम्बकम् (पृथ्वी के सभी निवासी एक ही परिवार के सदस्य हैं) को ही आदर्श माना गया है। इस कारण यह संस्कृति आज भी विद्यमान है जबकि अन्य समकालीन प्राचीन सभ्यताएं जैसे- मेसोपोटामिया, मिस्र, यूनान एवं रोम विलुप्त हो चुके हैं और उनके भौतिक अवशेष ही बचे हैं।

और भी जानो

सबसे पहले भारत में हिन्द यूनानियों ने सोने के सिक्के जारी किए।

कुषाण राजाओं ने उच्चकोटि की स्वर्ण मुद्राएँ जारी कीं।

इसी समय बौद्ध धर्म दो सम्प्रदायों में बँट गया- हीनयान और महायान। कनिष्क महायान का संरक्षक था।

***अभ्यास**

1. शुंगवंश का संस्थापक कौन था?

2. कण्व वंश के अन्तिम शासक का नाम बताइए।

3. सिमुक किस वंश का शासक था?

4. सातवाहन कालीन धर्म की क्या विशेषता थी?

5. भारत के विदेशों से सम्पर्क के कारण व्यापार, पहनावा, ज्ञान विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में क्या बदलाव आया ?

6. कुषाण कालीन कला की विशेषता का उल्लेख करिए।

7. विदेशियों ने भारत से क्या सीखा? लिखिए।

8. भारतीय संस्कृति की ऐसी क्या विशेषताएं हैं, जिससे कि वह अन्य प्राचीन सभ्यताओं से भिन्न है?

9. सही कथन के सामने (झ्) तथा गलत कथन पर (′) का निशान लगाइए -

अ. कार्ले का चैत्य मण्डप कुषाणों ने बनवाया।

ब. मिनाण्डर शक शासक था।

स. भारत में सोने के सिक्के सबसे पहले कुषाण राजा ने चलाए ।

द. मथुरा एवं गान्धार कुषाण काल की कला के प्रमुख केन्द्र थे।

10 रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

अ. सातवाहन वंश के शासक .... धर्म के अनुयायी थे।

ब. कनिष्क ने ....संवत् चलाया।

स. कण्व वंश के संस्थापक ....थे।

द. शक शासकों में ....सबसे अधिक विख्यात शासक था।

प्रोजेक्ट वर्क

गान्धार शैली एवं मथुरा शैली के किन्हीं दो-दो मूर्तियों के चित्र अपनी पुस्तिका में चिपकाएँ और विशेषताआंे का उल्लेख कीजिए।

पाठ 9

DKSALU

गुप्तकाल

लोहे से बनी वस्तुओं में प्रायः जंग लग जाती है। आज से लगभग सोलह सौ वर्ष पूर्व गुप्तवंश के एक शासक द्वारा बनवाये मेहरौली लौह स्तम्भ में आज तक जंग नहीं लगी है। इससे उस काल के उच्चकोटि के धातुज्ञान का पता चलता है।

गुप्त-साम्राज्य
(उत्कर्ष काल में)

कुषाणों के पश्चात् एक नए वंश का उदय हुआ। यह राजवंश गुप्त वंश के नाम से जाना जाता है। गुप्त साम्राज्य भारत में लगभग 320 ई0 में स्थापित हुआ। इस राजवंश ने भारत के विशाल भू-भाग पर लगभग दो सौ वर्षों से भी अधिक समय तक शासन किया था।

गुप्त साम्राज्य का विस्तार

गुप्त वंश के शासकों ने दूसरे राज्यों के शासकों के साथ वैवाहिक संबंधों, अच्छे व्यवहार, संधि तथा उन्हें पराजित कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। गुप्तकाल को स्वर्णयुग कहते हैं। इस समय आंतरिक कानून व्यवस्था तथा कला एवं साहित्य का विकास हुआ। गुप्त सम्राटों ने विशाल साम्राज्य स्थापित कर केन्द्रीय शक्ति को दृढ़ किया और श्रेष्ठ शासन प्रबन्ध के द्वारा शान्ति स्थापित की। इनकी शासन व्यवस्था मौर्य काल के तीन स्तरीय शासन से मिलती-जुलती थी (नामों में अन्तर छोड़कर)। एक मूलभूत अन्तर यह था कि गुप्तकाल में राजाओं

द्वारा वेतन के स्थान पर भूमि दान दी जाती थी। इस काल में साहित्य, कला, धर्म एवं संस्कृति का उल्लेखनीय विकास हुआ। गुप्तकाल में उद्योग, धन्धे, व्यापार तथा वाणिज्य के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई। गुप्तकाल में देश धन-धान्य से पूर्ण था।

श्रीगुप्त इस वंश का पहला राजा था। उसके बाद घटोत्कच राजा बना। चन्द्रगुप्त इस वंश का पहला प्रसिद्ध राजा था। जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की तथा एक नए संवत् 'विक्रम संवत्' को चलाया।

अगर आपको शासन द्वारा अधिकार दिया जाए कि आप अपने क्षेत्र या जनपद का विकास करें। आप किन-किन चीजों पर ज्यादा ध्यान देंगे। चर्चा करें।

समुद्रगुप्त

चन्द्रगुप्त के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त इस वंश का दूसरा महान शासक था। उसके दरबारी कवि हरिषेण ने इलाहाबाद स्थित अशोक के स्तम्भ पर समुद्रगुप्त का अभिलेख खुदवाया। यह समुद्रगुप्त की प्रशंसा में लिखा गया है। इसे प्रयाग प्रशस्ति के नाम से जाना जाता है।

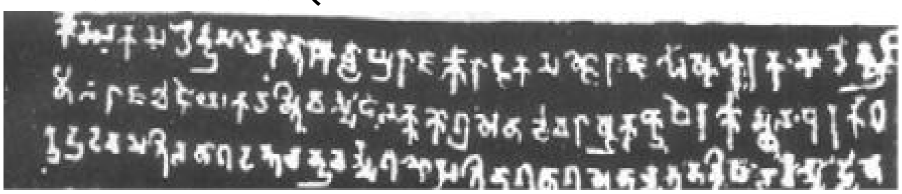

ीइस प्रशस्ति की लिखावट पर ध्यान दीजिए। क्या कोई अक्षर आपकी पहचान का है ?

प्रयाग प्रशस्ति

ीअशोक के अभिलेख की लिखावट एवं इसकी लिखावट में क्या आपको कोई समानता दिखाई देती है ?

ीइस अभिलेख में समुद्रगुप्त के विजय अभियान का वर्णन है।

समुद्रगुप्त को कभी पराजय का सामना नहीं करना पड़ा। इसी कारण इसे भारत का नेपोलियन कहा जाता है। विजय प्राप्त करने के बाद उसने अश्वमेघ यज्ञ किया। समुद्रगुप्त ने सोने के सिक्कों का निर्माण करवाया जिसमें अश्वमेघ के घोड़े अंकित हैं।

चन्द्रगुप्त द्वितीय

समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय राजगद्दी पर बैठा। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने 400 वर्षों से मालवा व गुजरात में शासन कर रहे शकों को हराया। इन्होंने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।

कुमार गुप्त व स्कन्दगुप्त

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के बाद क्रमशः कुमारगुप्त व स्कन्दगुप्त गद्दी पर बैठे। इनके शासन काल में गुप्त साम्राज्य पर हूणों ने आक्रमण कर दिया। हूण मध्य एशिया की क्रूर एवं बर्बर जाति के लोग थे। वे जहाँ जाते वहाँ तोड़-फोड़ करते थे किन्तु गुप्त राजाओं ने हूणों के आक्रमण को रोका।

इसके बाद के गुप्तवंश के उत्तराधिकारी शासक यह प्रहार नहीं रोक सके। गुप्त वंश पर हूणों का आक्रमण जारी रहा और बुद्धगुप्त के समय से ही गुप्त साम्राज्य विघटित होता गया। हूणों के लगातार आक्रमणों से एवं अन्य कारणों से छठीं शताब्दी के आरम्भ में इस वंश का अंत हो गया।

गुप्त साम्राज्य की उपलब्धियाँ

1. संगीत

गुप्त सम्राट संगीत प्रेमी थे। कुछ सिक्कों पर वीणा बजाते हुए सम्राट समुद्रगुप्त का चित्र अंकित हैं।

2. कला

शिव मन्दिर, भूमरा

स्थापत्य, मूर्तिकला और चित्रकला इस युग की महान देन है। भूमरा नामक स्थान पर शिव मन्दिर का चबूतरा और शिवलिंग ही शेष रह गए हैं। यह स्थापत्य कला का नमूना है। मूर्तियाँ हिन्दू, वैष्णव, शैव, बौद्ध, जैन आदि सभी धर्मों से सम्बन्धित हैं। मूर्तियों का निर्माण सफेद बलुआ पत्थरों से हुआ है। गुप्त काल में विशेष प्रकार के पत्थर के स्तम्भ भी बनाये जाते थे। औरंगाबाद के पास अजन्ता की प्रसिद्ध गुफा है। गुफा की दीवारों पर बुद्ध के जीवन से

संबन्धित घटनाओं का चित्रांकन (जिन्हें भित्ति चित्र कहते हैं) किया गया था। इन चित्रों के रंग आज भी लगभग वैसे ही हैं जैसे शुरू में थे।

भित्ति चित्र

3. साहित्य

गुप्त काल में साहित्य के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई। चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के दरबार में नव रत्न थे। इन नव रत्नों में कालिदास भी एक थे। कालिदास की प्रमुख रचनाएँ अभिज्ञान शाकुन्तलम्, रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् हैं। इसी काल में शूद्रक ने मृच्छकटिकम् तथा विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस नामक प्रसिद्ध नाटक लिखे। इस काल में पुराणों पर आधारित पंचतंत्र की रचना की गई जिसमें लिखी गई कहानियाँ बच्चों को सूझबूझ की जानकारी देती हैं। रामायण तथा महाभारत को भी इसी समय अन्तिम रूप दिया गया।

4. विज्ञान

मेहरौली का लौह स्तम्भ

इस काल में विज्ञान के क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई। इस काल के प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्यभट्ट ने बताया कि पृथ्वी गोल है। वह सूर्य का चक्कर लगाती है। इनके सम्मान में ही भारत में प्रथम कृत्रिम उपग्रह का नाम आर्यभट्ट रखा गया। मेहरौली का लौहस्तम्भ वैज्ञानिक प्रगति का एक बेजोड़ नमूना है।

वराहमिहिर चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय के दरबार के नवरत्नों में से एक थे। वराहमिहिर, विज्ञान के इतिहास के प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने कहा कि कोई शक्ति ऐसी है जो चीजों को जमीन के साथ चिपकाए रखती हैं। आज इसी शक्ति को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं।

ध्यान दें- जब कभी भी आप दिल्ली जाएं तब मेहरौली स्तम्भ को कुतुबमीनार परिसर में देख सकते हैं।

फाह्यान के अनुसार गुप्त काल की सामाजिक स्थिति-

विदेशी यात्री फाह्यान चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय भारत आया था उसने लिखा है कि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का शासन बहुत अच्छा था। उसके समय में प्रजा सुखी और धनी थी। लोग स्वतंत्रतापूर्वक व्यवसाय करते थे। धर्मशालाओं में भोजन करने की समुचित व्यवस्था थी। राज्य में चोरी का नाम नहीं सुना जाता था। देश में शान्ति थी। राजा और प्रजा एक दूसरे के प्रति आदर और सम्मान का भाव रखते थे। कर बहुत कम थे अपराधियों पर जुर्माना लगाया जाता था। किसी को मौत की सजा नहीं दी जाती थी।

फाह्यान ने पाटलिपुत्र में एक विशाल चिकित्सालय देखा। चिकित्सालयों में रोगियों को मुफ्त दवा व भोजन देने की व्यवस्था थी। नगर में अनेक संस्थाएं थीं जहाँ दीन-दुखियों की मदद तथा अपाहिजों की सेवा की जाती थी। गुप्तकाल के लोग दानी और दयालु प्रवृत्ति के थे। गुप्तकाल में लोग लहसुन, प्याज व शराब का सेवन नहीं करते थे। वे अहिंसक और सत्यवादी थे।

अभ्यास

1. गुप्तवंश के शासकों ने कितने वर्षों तक शासन किया ?

2. समुद्रगुप्त के विजय अभियान को किसने लिखा ?

3. गुप्तकाल में कला एवं विज्ञान की उन्नति का उल्लेख करिए।

4. गुप्तकाल को भारत का स्वर्णयुग क्यों कहते हैं ? स्पष्ट करिए।

5. फाह्यान कौन था ? उसने तत्कालीन भारत के विषय में क्या लिखा ?

6. गुप्त शासकों ने अपने साम्राज्य को बढ़ाने के लिए क्या उपाय किए ?

7. सही मिलान कीजिए-

कालिदास मुद्राराक्षस

शूद्रक अभिज्ञान शाकुन्तलम्

विशाखदत्त पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है

वराहमिहिर मृच्छकटिकम्

आर्यभट्ट गुरुत्वाकर्षण

8. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) भारत का नेपोलियन.............................. को कहा जाता है।

(ख) स्कन्दगुप्त ने ....झील का जीर्णोद्धार कराया।

(ग) गुप्त संवत् का प्रारम्भ ....ई0 से होता है।

(ड) गुप्तवंश के पहले शासक ....थे।

प्रोजेक्ट वर्क

अपने आस-पास की किसी धार्मिक इमारत, किला एवं पुस्तकालय आदि के भवन का चयन करें और निम्नलिखित जानकारी प्राप्त करने प्रयास कीजिए-

इसका निर्माण कब हुआ था और इसे किसने बनवाया था ?

इसका उचित रख-रखाव हो रहा है या नहीं ?एकत्रित जानकारी के आधार पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। इन इमारतों को सुरक्षित रखने के उपाय सुझाइए।

पाठ 10

DL26NH

पुष्यभूति वंश

संगमनगरी इलाहाबाद में माघ, अर्द्धकुम्भ एवं कुम्भ का पर्व मनाया जाता है। इसमें दूर-दूर से लोग आते हैं। आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पूर्व हर्ष नाम के राजा भी यहाँ प्रति पाँचवें वर्ष आकर धर्म सभा करवाते थे। यहाँ वह अपनी पाँच वर्ष की संचित सम्पत्ति का दान करते थे।

गुप्तकाल से लगभग सौ वर्षों के बाद उत्तर भारत में एक नई शक्ति का उदय हुआ, जो वर्धनवंश के नाम से प्रसिद्ध था। उसकी राजधानी थानेश्वर (वर्तमान अंबाला जिला) थी। इस वंश का प्रथम राजा प्रभाकरवर्धन था, जिसने हूणों को उत्तर-पश्चिम भारत से बाहर खदेड़ दिया था। इसी वंश में आगे 'हर्ष' नाम का राजा हुए।

ह्वेनसांग

हर्षवर्धन 606-647 ई0

हर्षवर्धन 606 ई0 में गद्दी पर बैठे। उस समय उनकी राजधानी थानेश्वर ही थी। बाद में कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया।

मानचित्र देखकर हर्ष के साम्राज्य विस्तार को लिखिए

....
....
....
....
....

हर्ष स्वयं विद्वान थे तथा वह विद्वानों के आश्रयदाता थे। हर्ष ने संस्कृत में तीन नाटकों - नागानन्द, रत्नावली और प्रियदर्शिका की रचना की है। बाणभट्ट हर्ष के दरबारी कवि थे जिन्होंने ”हर्षचरित“ लिखा।

चीनी यात्री ह्वेनसांग (युवान-च्वाड़) उनके शासन काल में आया। ह्वेनसांग 15 वर्षों तक भारत में रहा।

वर्धनकाल, ह्वेनसांग की नजर से

हर्षवर्धन एक प्रजापालक एवं उदार शासक थे। उन्होंने जिन राज्यों पर विजय प्राप्त की थी। उन राजाओं ने हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली। हर्षवर्धन ने अपने सम्पूर्ण साम्राज्य की व्यवस्था के लिए उसे भुक्तियों (प्रांतों), विषयों (जिलों) तथा ग्रामों में विभाजित किया। उसके शासन में अपराध कम होते थे।

अपराध करने वाले को कठोर दण्ड दिया जाता था।

हर्ष का बौद्ध धर्म से लगाव था। उसने कन्नौज में एक विशाल धर्म सभा बुलाई। वह बहुत दानी भी थे। वह हर पाँच साल में प्रयाग के मेले में दान करता था। आइए उसके दान के बारे में पढ़ें -

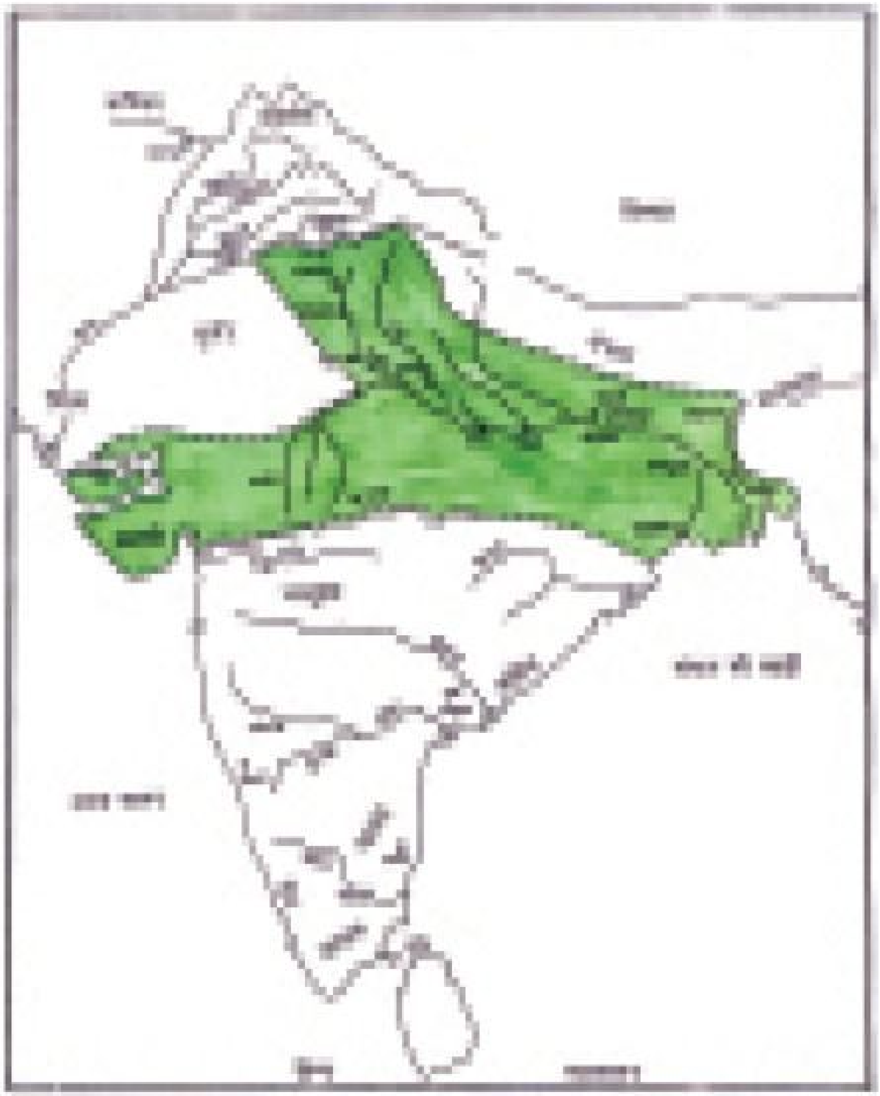

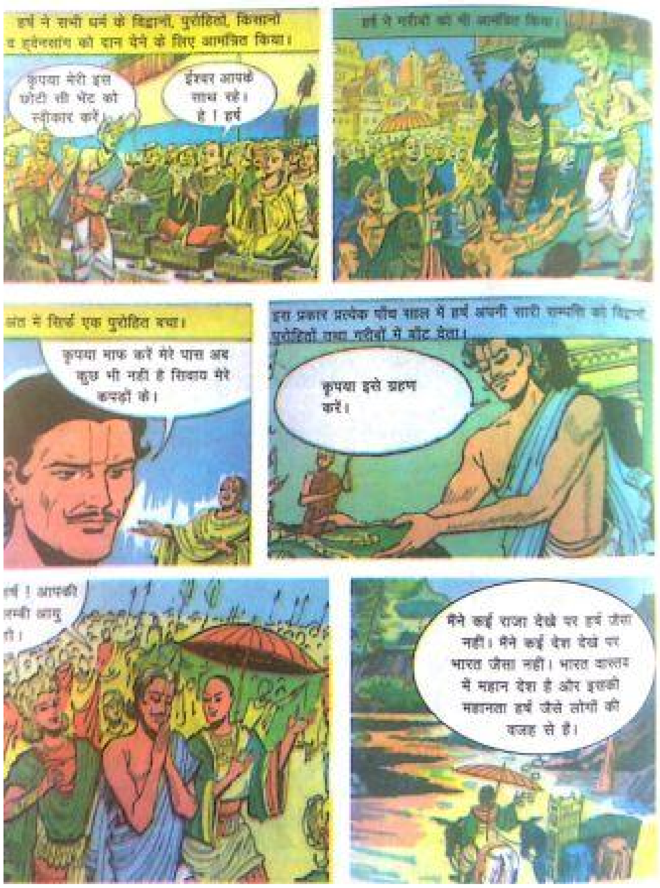

नालन्दा विश्वविद्यालय का अवशेष

647 ई0 में हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई उसने लगभग 40 वर्षों तक शासन किया। उसकी मृत्यु के बाद केन्द्रीय शासन सत्ता छिन्न-भिन्न हो गई और उत्तर तथा दक्षिण भारत में छोटे-छोटे राजवंशों की स्थापना हुई।

अभ्यास

1. हर्ष की बहन का क्या नाम था?

2. हर्षवर्धन की राजधानी कहाँ-कहाँ थी ?

3. श्वैन त्सांग ने हर्ष के विषय में क्या लिखा है ?

4. निम्नलिखित का उत्तर दो वाक्यों में लिखिए -

(अ) हर्षवर्धन और बौद्ध धर्म

(ब) शिक्षा के संरक्षक के रूप में हर्षवर्धन

5. सत्य और असत्य बताइए -

(अ) हर्षकालीन इतिहास जानने का मुख्य स्रोत चीनी यात्री फाह्यान का विवरण है।

(ब) हर्ष के दरबारी कवि बाणभट्ट थे।

(स) हर्षवर्धन की राजधानी कन्नौज थी।

(द) हर्षवर्धन के भाई का नाम राज्यवर्धन था।

6. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) वर्धनवंश का प्रथम शासक ....था।

(ब) हर्षवर्धन ने तीन नाटक (1).......................... (2)............................
(3)............................ की रचना की।

(स) हर्षचरित्र के लेखक.............................हैं।

(द) हर्षवर्धन की मृत्यु........................ई0 में हुई।

प्रोजेक्ट वर्क

* उत्तर प्रदेश में स्थित विश्वविद्यालयों की सूची बनाइए। ये विश्वविद्यालय किस जिले में है। मानचित्र में अंकित कीजिए।

* नदियाँ हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। नदियों का जल साफ एवं स्वच्छ रहे इस हेतु आप क्या-क्या सुझाव देगें। सूची बनाइए।

पाठ 11

उत्तर भारत (सातवीं से ग्यारहवीं शताब्दी)

प्राचीन भारतीय समाज जो धीरे-धीरे मध्यकालीन समाज में बदला इसका मुख्य कारण था भूमि अनुदान की प्रथा। वेतन और पारिश्रमिक की जगह, बड़े पैमाने पर भूमि का अनुदान मिलने लगा था। इसमें राजा को यह सुविधा थी कि करों की वसूली करने और शांति व्यवस्था बनाए रखने का भार अनुदान प्राप्त करने वालों के ऊपर चला जाता था, परन्तु इससे राजा की शक्ति बहुत ही घटने लगी। ऐसे-ऐसे क्षेत्र बन गए जो राजकीय नियंत्रण से परे थे। इन सबके फलस्वरूप राजा के प्रभुत्व क्षेत्र को हड़पते हुए भूस्वामी उदित हुए। यह अपने को राजपूत कहते थे।

राजपूत

राजपूत संस्कृत शब्द ‘राजपुत्र’ का बिगड़ा हुआ रूप है। यह शब्द राजकुमार या राजवंश का सूचक था। धीरे-धीरे क्षत्रिय वर्ग राजपूत नाम से प्रसिद्ध हो गया।

राजपूत कालीन समाज

शासन व्यवस्था

इस समय से सामन्ती व्यवस्था की शुरुआत होने लगी जिसमें सामन्त राजा प्रत्येक वर्ष एक निश्चित आय अधिपति को देते थे।

गाँवों में ग्राम पंचायतें होती थीं। उन ग्राम पंचायतों पर शासन का कोई हस्तक्षेप नहीं था। मौर्यों के समय में उत्पन्न हुई पंचायती राज व्यवस्था अभी भी कायम थी। इस प्रकार राजनीतिक उथल-पुथल का गाँवों पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ता था।

सामाजिक व्यवस्था

राजपूत काल में समाज में योद्धा तथा शासक वर्ग मुख्य थे। राजपूतों में साहस, आत्मसम्मान तथा आतिथ्य का भाव था। प्राण जाए पर वचन न जाए जैसे आन/शान की सोच विकसित हुई और उनकी गुण-गाथाएँ भी गाई जाने लगीं।

ब्राह्मणों को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। धनी लोग कीमती वस्त्र और आभूषण पहना करते थे। जन साधारण की वेश-भूषा साधारण थी। बाल विवाह तथा सती प्रथा का प्रचलन हो गया था। विधवा विवाह वर्जित था। महिलाओं को सामान्य अधिकार प्राप्त थे।

इस समय वर्ण व्यवस्था कठोर हो गई थी। जिसके कारण लोगों की मानसिक सोच संकुचित हो चुकी थी।

राजपूतकालीन उत्तर भारत के कुछ राज्य

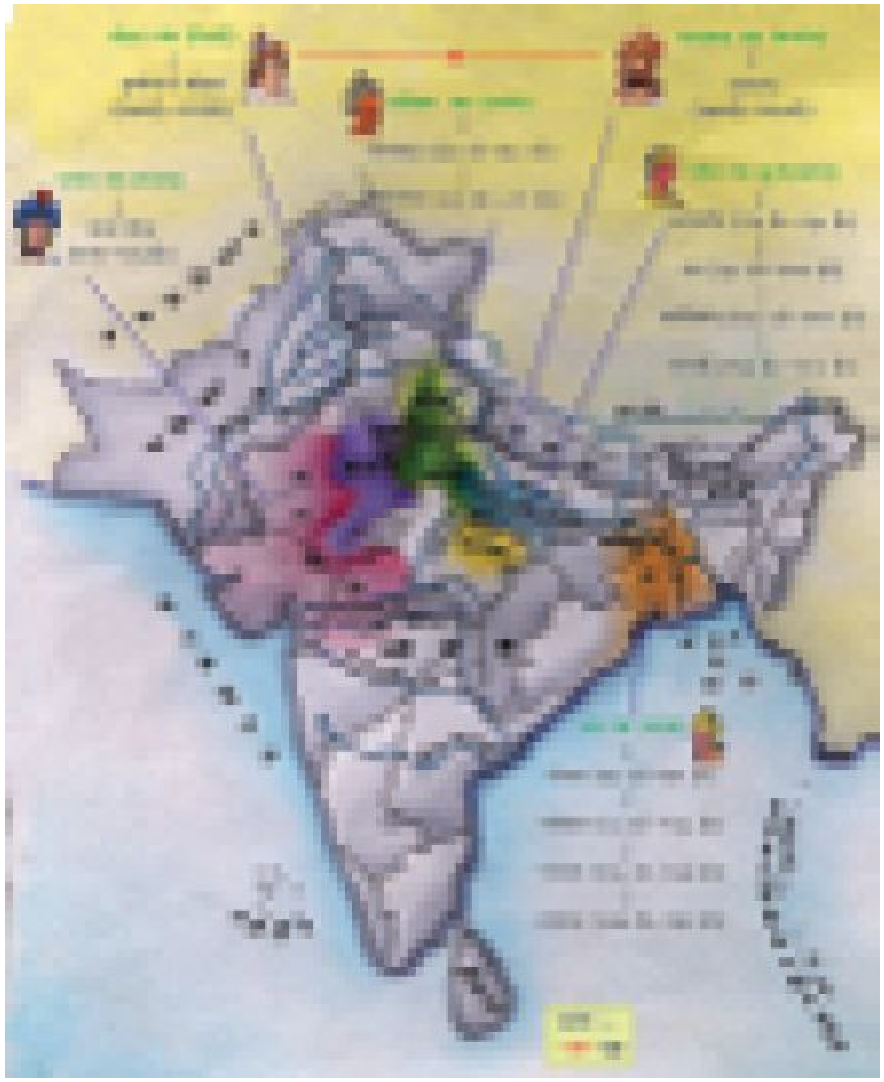

कला

राजपूत शासक लड़ाई में व्यस्त रहने के साथ ही कला एवं साहित्य में भी रुचि रखते थे, इन्होंने प्रतिष्ठा सूचक भव्य दुर्ग, राजभवन तथा मन्दिरों का निर्माण करवाया जिनको देखने के लिए आज भी हजारों विदेशी पर्यटक आते हैं।

भुवनेश्वर का लिंगराज मन्दिर

उत्तरी भारत के राजाओं ने कई भव्य मन्दिरों का निर्माण करवाया। जैसे - भुवनेश्वर का लिंगराज मन्दिर।

चन्देल राजाओं ने शिव, विष्णु तथा जैन तीर्थंकरों को समर्पित कई मन्दिर बनवाए जिसमें खजुराहो का कन्दरिया महादेव मन्दिर अपनी बनावट के लिए अति प्रसिद्ध है। ये सभी मन्दिर पीले रंग के बलुआ पत्थरों के बने हैं। इन मन्दिरों में आज भी सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाते हैं।

कोणार्क का सूर्य मन्दिर

कोणार्क का सूर्य मन्दिर गंग वंश के नरसिम्हा प्रथम के द्वारा बनवाया गया। यह मन्दिर एक रथ के आकार का है जिसमें बारह पहिए हैं तथा सात घोड़े इस रथ को खींचते हुए दर्शाए गए हैं।

खजुराहो में भरतनाट्यम नृत्य करती नर्तकी

मन्दिरों का व्यय चलाने के लिए उच्च वर्ग के लोग सोना, चाँदी, कीमती पत्थर, मोती इत्यादि दान में देते थे। इन मन्दिरों की विशेषता यह थी कि ये धन-धान्य से परिपूर्ण थे जो भारत में विदेशी आक्रमणों का मुख्य कारण भी बना।

शिक्षा एवं साहित्य

राजपूत शासकों के समय में आश्रमों, पाठशालाओं एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षा दी जाती थी। इस समय नालन्दा, विक्रमशिला, उज्जयिनी, कन्नौज, काशी, धारानगरी प्रमुख शिक्षा केन्द्र थे।

इसी काल में नाटक, काव्य एवं ग्रन्थ लिखे गए जैसे- राजशेखर की बाल रामायण, भारवि का किरातार्जुनीय, माघ का शिशुपाल वध (नाटक), कल्हण की राजतरंगिणी (ऐतिहासिक ग्रन्थ), जयदेव का गीत गोविन्द (काव्य) संस्कृत भाषा में लिखे गए। इसी काल में क्षेत्रीय भाषाओं जैसे- हिन्दी, बंगाली, मराठी, उड़िया, गुजराती आदि में भी ग्रन्थ लिखे गए। उदाहरणतः चन्दबरदाई की पृथ्वीराज रासो का वीर गाथा काव्य हिन्दी में लिखा गया है।

भवन निर्माण

मोटे तौर पर भवन निर्माण की दो शैलियाँ थीं - उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय। इनमें भेद मुख्यतः मन्दिर के शिखर के आकार में देखा जाता है। उत्तर भारतीय शिखरों का आकार टेढ़ी रेखाओं से घिरी हुई ठोस मीनार की भाँति रहता था। मध्य में खुला हुआ तथा ऊपर एक बिन्दु पर आकर समाप्त हो जाता था। उदाहरणतः लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर।

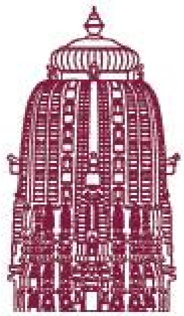

उत्तर भारतीय

दक्षिण भारतीय शिखर पिरामिड की तरह दिखते थे जिसमें कई खण्ड होते थे। प्रत्येक खण्ड क्रमशः ऊपर की ओर अपने नीचे वाले खण्ड से छोटा होता जाता था, और सबसे ऊपर जाकर छोटे तथा गोलाकार टुकड़े में हो जाता था। दक्षिण भारत के मन्दिरों में स्तम्भों का मुख्य स्थान है जबकि उत्तर भारत के मन्दिरों में इनका सर्वथा अभाव दिखाई देता है।

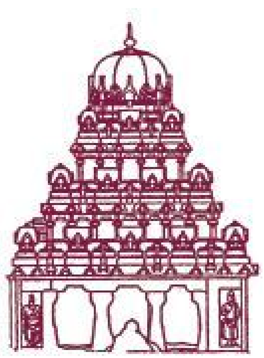

दक्षिण भारतीय मन्दिर

मन्दिरों को बनाने के लिए कारीगर पत्थर को जमाने के लिए चूने व गारे का घोल इस्तेमाल नहीं करते थे। इस विधि के बगैर ही वे बड़े-बड़े पत्थरों को एक के ऊपर एक चढ़ाते जाते थे जिससे वे वर्षों तक टिके रहें। ये पत्थर एक-दूसरे के भार से ही सैकड़ों साल तक टिके रहे हैं।

और भी जानिए

बंगाल का पाल वंश - इस वंश का संस्थापक 'गोपाल' था। इसने बंगाल की सीमा को बढ़ाया। देवपाल, धर्मपाल आदि इस वंश के अन्य शासक थे। पालों के शासन काल में जनता सुखी थी। साहित्य एवं कला का विकास हुआ।

बंगाल का सेन वंश - सामन्त सेन ने ‘सेन वंश’ की स्थापना की। बल्लाल सेन, लक्ष्मण सेन इस वंश के अन्य प्रमुख शासक थे। सेन शासनकाल में संस्कृत साहित्य का अधिक विकास हुआ। इसी काल में जयदेव ने प्रसिद्ध ‘गीत गोविन्द’ की रचना की।

अभ्यास

1. खजुराहो के मन्दिर किस वंश के शासकों ने बनवाए थे ?

2. नरसिम्हा प्रथम ने कौन सा मन्दिर बनवाया था ?

3. चंद्रावार का युद्ध किनके बीच लड़ा गया ?

4. राजपूत काल में शिक्षा के मुख्य केन्द्र कौन-कौन से थे ?

5. उत्तर भारत में राजपूतों के राजनैतिक महत्व का उल्लेख कीजिए।

6. राजपूत कालीन सामाजिक व्यवस्था का वर्णन करें।

7. भवन निर्माण की उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय शैली के बारे में लिखिए।

8. निम्नलिखित रचनाओं के लेखकों के नाम लिखिए।

पुस्तकों के नाम लेखकों के नाम

(क) किरातार्जुनीयम ....

(ख) शिशुपाल वध ....

(ग) राजतरंगिणी ....

(घ) बालरामायण ....

(ङ) गीत-गोविन्द ....

गतिविधि

मानचित्र को देखकर निम्नलिखित को पूरा करिए-

निम्न वंश वर्तमान में किस राज्य में स्थित हैं-

वंशों के नाम वर्तमान में किस राज्य में

चैहान (चाहमान)

प्रतिहार

गहड़वाल

परमार

पाल

चंदेल

प्रोजेक्ट वर्क

उत्तर भारतीय मन्दिर तथा दक्षिण भारतीय मन्दिर का रेखाचित्र बनाएँ तथा उनके मध्य के अन्तर को सूचीबद्ध करें।

पाठ 12

दक्षिण भारत
(छठी से ग्यारहवीं शताब्दी)
दक्षिण भारत के कुछ राज्य

प्रारम्भ में दक्षिण भारत में मात्र तीन राज्य ही थे- चेर, चोल और पांड्य। छठी से ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य यहाँ राष्ट्रकूट, चालुक्य, पल्लव राज्य भी हुए। मानचित्र में देखकर इनसे सम्बन्धित शासकों के नाम व समय अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

इन राज्यों में अपनी-अपनी प्रभुसत्ता को स्थापित करने के लिए निरन्तर संघर्ष होते रहते थे।

जलमार्ग से व्यापार

आय के स्रोत-व्यापार व कृषि

युद्धों के कारण ये राज्य कमजोर तो अवश्य हुए किन्तु अपने प्राकृतिक संसाधनों एवं व्यापार से बहुत लाभ उठाते रहे। दक्षिण पूर्व एशिया से इनके अच्छे व्यापारिक सम्बन्ध थे। प्राचीन काल में ये लोग यूनान, रोम व मिस्र के साथ दूसरी ओर मलय द्वीप समूह के साथ तथा वहाँ से चीन के साथ व्यापार करते थे।

इनका प्रमुख बन्दरगाह महाबलीपुरम् था जो स्थानीय व सुदूर व्यापार के कारण राजकोष की आय के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था। नदियों के तटीय इलाकों में धान व गन्ना की उपज होती थी।

कला-साहित्य को बढ़ावा

भरतनाट्यम की नृत्य मुद्राएँ

क्रोधित हँसी सोचते हुए दुःखी

व्यापार और कृषि की आय से राजाओं ने व्यापक रूप से मंदिरों का निर्माण कराया। मंदिरों के निर्माण में राजाओं की विशेष रुचि थी। हिन्दू धर्म के विभिन्न पंथों के हिन्दू, वैष्णव व शैव राजाओं ने अपनी-अपनी मान्यताओं के देवी-देवताओं के सम्मान में मंदिर बनवाए। ये बड़े व भव्य मंदिर ठोस चट्टानों को काट-काट कर निर्मित किए गए थे। इनके शिखर आयताकार, ऊँचे एवं कई मंजिलों के होते थे। मंदिरों की दीवारों पर सुन्दर-सुन्दर मूर्तियाँ बनाई जाती थीं। एक राजा द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्य को उनके वंशजों द्वारा पूरा किया जाता था।

उस समय उत्तर भारत में इस प्रकार के मन्दिरों के निर्माण नहीं हुए थे।

 चालुक्य राजाओं द्वारा बनाया गया वातापी का विरूपाक्ष मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है

विरूपाक्ष मन्दिर

पल्लवों द्वारा चेन्नई के पास महाबलीपुरम् में बने रथ मन्दिर को एक पत्थर को काटकर बनाया गया है।

महाबलीपुरम् का एक रथमंदिर

 राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने एलोरा में कैलाश मन्दिर विशाल चट्टान को काटकर बनवाया। यह कई मंजिलों का हैं।

कैलाश मंदिर का भीतरी दृश्य, एलोरा

चोल राजाओं ने तंजौर में 14 मंजिलों वाला बृहदेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया। इस समय की मूर्ति कला भी बहुत विकसित थी। इस मन्दिर में धातु की बनी नटराज की सुन्दर मूर्ति स्थापित है।

साहित्य की प्रगति

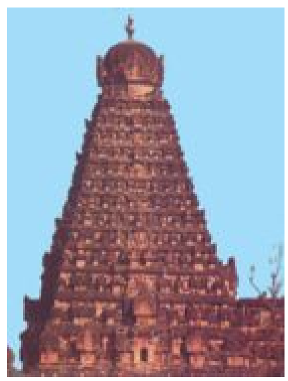

बृहदेश्वर मन्दिर

दक्षिण भारत के राजा शिक्षा व साहित्य के प्रेमी थे। अतः दक्षिण भारत में संस्कृत व तमिल के अलावा अन्य स्थानीय भाषाओं जैसे कन्नड़ की भी पर्याप्त उन्नति हुई। पल्लव शासकों के समय में संस्कृत भाषा की विशेष उन्नति हुई। कांचीपुरम पल्लवों की राजधानी होने के अलावा तमिल और संस्कृत के अध्ययन का केन्द्र भी था। महान संस्कृत कवि दण्डी पल्लव राजा नरसिंह वर्मन द्वितीय की राजसभा में थे। चोल शासकों के समय में तमिल भाषा की विशेष उन्नति हुई। कम्बन द्वारा लिखित 'रामायणम्' ग्रन्थ तुलसीकृत रामचरितमानस की भाँति दक्षिण में लोकप्रिय है। इनके समय में जैन एवं बौद्ध विद्वानों ने भी ग्रन्थ लिखे।

नटराज की मूर्ति

धार्मिक स्थिति

दक्षिण भारत के शासक हिन्दू धर्म को मानने वाले थे, वे अन्य धर्मों के प्रति भी उदार थे। वे बौद्ध एवं जैन धर्म के विहारों तथा मन्दिरों के निर्माण हेतु भी दान दिया करते थे। समाज में विष्णु तथा शिव की पूजा विशेष रूप से होती थी। शंकराचार्य ने उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम क्षेत्रों में मठों की स्थापना की। इन्होंने आत्मा और परमात्मा को एक बताया। ग्यारहवीं शताब्दी में दक्षिण के रामानुजाचार्य ने शक्ति और ज्ञान को ईश्वर प्राप्ति का साधन बताया।

सामाजिक स्थिति

दक्षिण भारत का समाज भी वर्ण व्यवस्था पर आधारित था। इस समय समाज में दो वर्ग-ब्राह्मण व गैर ब्राह्मण ही थे। सभी अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करते थे। समाज में स्थिरता थी। राज्य में धनी और गरीबों में अन्तर था। धनवान व्यक्तियों के मकान सुन्दर एवं सुसज्जित होते थे। गरीबों के घर सादे होते थे और कच्चे फर्श के होते थे। किसान भूमि के स्वामी माने जाते थे परन्तु मजदूरों की दशा अच्छी न थी। कृषि मजदूर दासों की तरह ही थे।

शासन व्यवस्था

दक्षिण भारत के राज्यों की शासन व्यवस्था में राजा ही सर्वोपरि होता था। राजा की सहायता के लिए मंत्री तथा कर्मचारी होते थे। उन मंत्रियों और कर्मचारियों की नियुक्ति राजा स्वयं करता था। इस प्रकार उन मंत्रियों और कर्मचारियों पर उनका नियंत्रण रहता था।

चोलों की शासन प्रणाली बहुत विकसित और सुव्यवस्थित थी। समस्त साम्राज्य को 'राष्ट्रम' कहते थे। प्रान्तों को 'मण्डलम', जनपद को 'नाडु' तथा गाँवों को 'कुर्रम' कहा जाता था। कुर्रमवासी अपनी बैठकों में समस्याओं का समाधान करते थे। वे सिंचाई के लिए तालाब बनवाते थे, कर वसूलते थे। ये आर्थिक रूप से स्वावलम्बी थे। यहीं से स्थानीय स्वशासन यानि आज से मिलती-जुलती पंचायती राज की शुरुआत हुई।

अपने गाँव की दो समस्याओं को कॉपी में लिखिए-

गाँव स्तर पर इन समस्याओं का समाधान कौन और कैसे करता है ?

दक्षिण भारत का विदेशों से सम्पर्क

चोल वंश के राजा राजेन्द्र चोल प्रथम के पास बहुत बड़ी जलसेना थी जिसकी सहायता से उन्होंने दक्षिणी पूर्वी एशिया के भू-भागों-लंका, निकोबार द्वीप, मलाया तथा मलाया द्वीप समूहों में अपने सम्पर्क बनाए। इस समय भारत के कुछ व्यापारी पड़ोसी देशों में गए जिन्होंने वहाँ बस्तियाँ बनाईं। कुछ बौद्ध प्रचारक भी पहुँचे। विदेशों के स्थानीय लोग इनसे प्रभावित हो भारतीय विचार, कला व रीति-रिवाज अपनाते गए।

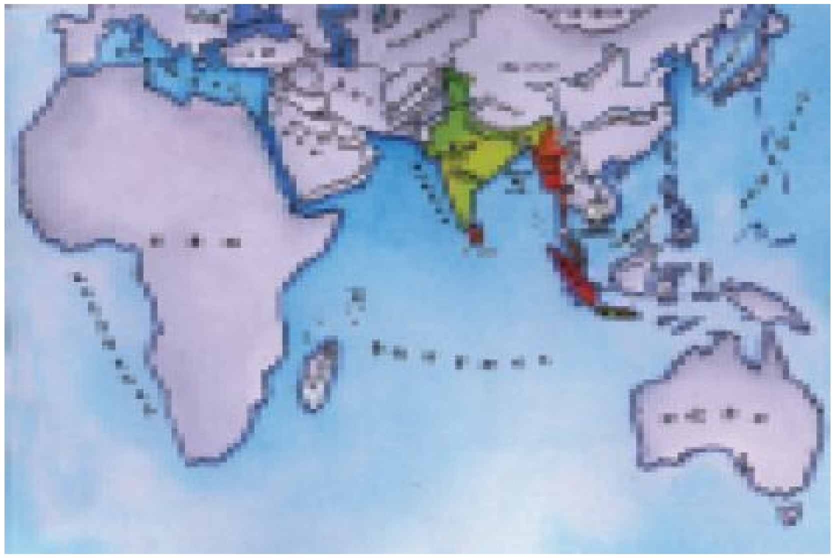

इसी प्रकार पल्लवों ने सुमात्रा में अपनी बस्तियाँ स्थापित कीं, जो भारतीय संस्कृति के प्रसार के महत्वपूर्ण केन्द्र बन गए। कम्बोज (कम्बोडिया) और चम्पा, जिसके शासक शैव थे, ने कम्बोज को संस्कृत भाषा का केन्द्र बनाया और असंख्य लेख संस्कृत भाषा में लिखवाए। भारतीय, स्थानीय लोगों के साथ घुल-मिल गए जिससे भारतीय कला, साहित्य भाषा का फैलाव हुआ। आज भी एक सफल मिश्रण स्थानीय संस्कृति में दिखाई देता है।

इण्डोनेशिया में आज भी रामायण की कहानी इतनी लोकप्रिय है कि वहाँ की जनता इस पर आधारित लोक नाट्य खेलती है। इण्डोनेशिया भाषा में आज भी कई संस्कृत के शब्द हैं।

मानचित्र के आधार पर बताइए कि छठीं से आठवीं शताब्दी में भारत का किन-किन देशों से व्यापार होता था ?

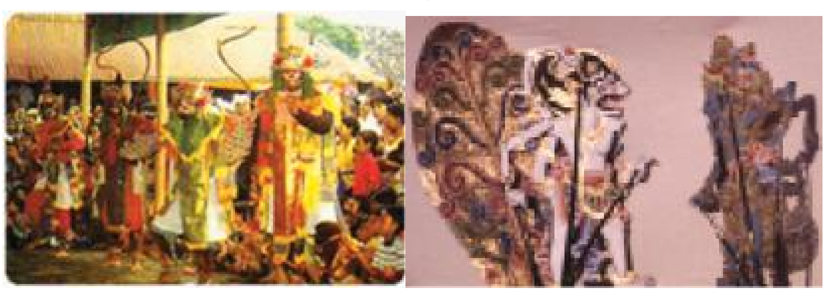

रामायण आधारित लोकनाट्य करते हुए लोग

बोरोबुदूर का बौद्ध मन्दिर अंकोरवाट का मन्दिर

कम्बोडिया स्थित अंकोरवाट का मन्दिर बोरोबुदूर के मन्दिर से भी बड़ा है। यह मन्दिर विश्व की धरोहर है। इस मन्दिर की दीवारों पर रामायण-
महाभारत की कहानियाँ उभरी हुई मूर्तियों में अंकित हैं|

अद्भुत बात है कि संसार का सबसे विशाल बौद्ध मन्दिर भारत में नहीं अपितु बोरोबुदूर (इण्डोनेशिया) में है।

बोरोबुदूर का बौद्ध मन्दिर

अभ्यास

1. राष्ट्रकूट वंश की राजधानी कहाँ थी।
2. किस चोल शासक ने श्रीलंका को जीता?
3. दक्षिण भारतीय मन्दिरों की विशेषताएँ लिखिए?
4. दक्षिणी भारत के राज्यों का किन–किन देशों से व्यापारिक सम्बन्ध था।
5. चोलों के शासन व्यवस्था का वर्णन कीजिए।
6. दक्षिण पूर्व एशिया के देशों पर भारतीय संस्कृति के प्रभावों का वर्णन कीजिए।
7. निम्नलिखित के विषय में लिखिए–
   (क) अंकोरवाट (ख) शंकराचार्य
   (ग) रामानुजाचार्य (घ) एलोरा मन्दिर
8. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
   (क) एलोरा का कैलाश मन्दिर..............राष्ट्रकूट शासक ने बनवाया।
   (ख) चोल काल में गाँव को ....कहा जाता था।
   (ग) अंकोरवाट मन्दिर..............देश में स्थित है।
   (घ) पल्लव शासकों ने..............मन्दिर का निर्माण करवाया।

भरतनाट्यम की नृत्य मुद्राएँ

गतिविधि

मानचित्र में देखकर निम्नलिखित को पूरा करिए–

वंशों के नाम	वर्तमान में किस राज्य
राष्ट्रकूट	
चालुक्य	
पल्लव	
चोल	

पाठ 1

DLTTTF

सभी जन एक हैं

भारत विविधताओं का देश कहा जाता है। इसके विभिन्न भागों में अलग-अलग भौगोलिक एवं जलवायु की स्थितियाँ पाई जाती हैं। दक्षिण भारत का पठारी क्षेत्र विश्व की प्राचीनतम् कठोर चट्टानों द्वारा निर्मित है। उत्तर में विश्व का नवीनतम एवं सबसे ऊँचा पर्वत हिमालय है। भारत में एक ओर जहाँ चेरापूँजी और मासिनराम जैसे अत्यधिक वर्षा वाले भाग हैं वहीं पश्चिमी राजस्थान जैसे शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश भी हैं।

संसार के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों का खान-पान, रहन-सहन, पहनावा, बोली आदि एक दूसरे से भिन्न है। समय-समय पर विश्व के विभिन्न भागों से लोग भारत आते रहे और यहाँ स्थायी रूप से बसते गए। इन लोगों के साथ नए धर्म, नए रीति-रिवाज़ तथा नई भाषाएँ आती गईं। इससे भारत की संस्कृति में विविधता आ गई।

अनेक बोलियाँ

हमारे समाज में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई, पारसी, जैन, बौद्ध और अन्य समुदाय एक साथ मिल-जुलकर रहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि हमारे देश में प्रत्येक 200 से 250 किमी के बाद बोली, रहन-सहन और रीति-रिवाजों में अन्तर हो जाता है। देश में लगभग 225 भाषाएँ बोली जाती हैं जिनमें 22 भाषाएँ मुख्य हैं, जैसे- हिन्दी, उर्दू, बांग्ला, उड़िया, मराठी, पंजाबी, तेलगू, तमिल आदि।

हमारे प्रदेश में मुख्यतः हिन्दी भाषा बोली जाती है। यहाँ अवधी, ब्रज, भोजपुरी, बुन्देलखण्डी आदि आंचलिक बोलियाँ भी बोली जाती हैं। जब हम देश के एक

भाग से दूसरे भाग में आते -जाते हैं तो भाषा की यह विविधता कभी-कभी परेशानी का कारण बन जाती है। दूसरी तरफ इन अलग-अलग भाषाओं में लिखा गया साहित्य हमारे देश की साहित्यिक समृद्धि को भी बढ़ाता है।

विविध त्योहार

भारत के त्योहारों में भी विविधता मिली हुई है। विभिन्न धर्मों के अनुयायी अलग-अलग त्योहारों को मनाते हैं। होली, दीपावली तथा दशहरा हिन्दुओं के प्रमुख त्योहार हैं। ईद मुस्लिमों का, प्रकाश पर्व सिखों का तथा क्रिसमस ईसाइयों का प्रमुख त्योहार है। बौद्ध लोग बुद्ध पूर्णिमा, जैन महावीर जयन्ती तथा पारसी नवरोज उत्साह से मनाते हैं। कुछ त्योहार ऐसे भी हैं जिन्हें भारत के विभिन्न भागों में अलग नामों और अलग तरीकों से मनाया जाता है, जैसे- बैसाखी, ओणम तथा मकर संक्रान्ति फसल के पकने तथा काटने के अवसर पर मनाए जाने वाले त्योहार हैं।

इनके अलावा राष्ट्रीय पर्वों जैसे स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस तथा गाँधी जयन्ती को हम सभी भारतवासी मिल-जुल कर एक साथ राष्ट्रभक्ति की भावना के साथ मनाते हैं।

देश के विविध नृत्य

हमारे देश के अलग-अलग क्षेत्रों की संस्कृति वहाँ के नृत्यों में झलकती है, जैसे- तमिलनाडु का भरतनाट्यम, उड़ीसा का ओडिसी तथा केरल का कथकली। इन नृत्यों की अपनी अलग निर्धारित पोशाकें, शैली तथा मुद्राएँ होती हैं। ये सारे नृत्य भारतीय पौराणिक कथाओं पर आधारित हैं।

पहनावे में विविधता

हमारे देश के विभिन्न भागों में पहनावे की भी विविधता दिखाई देती है। साड़ी और धोती अनेक स्थानों पर पहने जाते हैं लेकिन उनके पहनने का ढंग बदल जाता है। पहनावों का सम्बन्ध उस क्षेत्र की जलवायु से भी होता है। कश्मीर में पहने जाने वाला ‘फिरन’ जाड़े से बचाता है। राजस्थान में पहनी जाने वाली बड़ी-बड़ी पगड़ियाँ वहाँ के गर्म रेगिस्तानी मौसम से बचाती हैं।

विविधता में एकता

क्या आप भारतीय क्रिकेट टीम के कुछ प्रमुख खिलाड़ियों के नाम जानते हैं ? आइए इस टीम पर एक नजर डालें-

महेन्द्र सिंह धोनी, विराट कोहली, शिखर धवन, रोहित शर्मा, आर0 अश्विन, युवराज सिंह, रवीन्द्र जडेजा, सुरेश रैना, भुवनेश्वर कुमार, मुहम्मद शमी, अमित मिश्रा।

इस टीम में आपने क्या खास बात देखी ? टीम में अलग-अलग प्रदेशों और धर्मों के खिलाड़ी एक साथ खेलते हैं। ये सभी खिलाड़ी विभिन्न प्रान्तों एवं धर्मों से सम्बन्ध रखते हैं। ये सभी खिलाड़ी अपने-अपने क्षेत्रों की अलग-अलग बोलियाँ भी बोलते हैं लेकिन विदेशी टीम के विरुद्ध खेलते समय ये सभी खिलाड़ी एक सूत्र में बँधकर देश के लिए खेलते हैं। भारत के लिए जीत हासिल करके इसका मस्तक ऊँचा करते हैं। सचिन तेंदुलकर को भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया है।

आपने अपने बड़ों से आजादी की लड़ाई की कहानी जरूर सुनी होगी। हमारे देश को गुलामी की जंजीरों से निकालने के लिए देश के कोने-कोने से अलग-अलग धर्मों और जातियों के लोगों ने एकजुट होकर संघर्ष किया। इस लड़ाई में सबने अपना योगदान दिया।

आजादी की लड़ाई में महात्मा गाँधी, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह तथा अशफाक उल्ला खाँ के योगदान की जानकारी एकत्र कीजिए। इनके चित्र भी एकत्र करके अपनी कॉपी मे लगाइए।

आपने देखा कि अनेक धर्मों, जातियों, भाषाओं, पहनावों आदि के लोग देश के लिए एकजुट हो जाते हैं। ढेर सारी विविधताओं के होते हुए भी भारत में हमेशा एकता रही है। यह देश एक ऐसी फुलवारी है जो अलग-अलग रंगों और खुशबुओं के फूलों से सजी है।

हमारे समाज में भेद-भाव

रामपुर गाँव में सरजू का परिवार रहता है। उसके दो बच्चे हैं, लड़का किशन और लड़की मीना। किशन विद्यालय जाता है लेकिन सरजू ने मीना को कभी विद्यालय नहीं भेजा। रोज सुबह मीना अपनी माँ के साथ किशन के लिए खाना बनाती है। जब किशन तैयार होकर स्कूल जाने लगता तो मीना माँ से पूछती- माँ मुझे स्कूल क्यों नहीं भेजती हो ? माँ कहती - तू स्कूल जा कर क्या करेगी ? तुझे तो घर का चूल्हा ही फूँकना है।

यह कहानी केवल सरजू के घर की ही नहीं है। हमारे समाज में इसी तरह लड़के और लड़कियों में अनेक प्रकार से भेद-भाव किया जाता है। लड़कियों को कहीं-कहीं तो प्राथमिक शिक्षा जैसी मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित रखा जाता है। यदि कोई लड़की खेल-कूद में आगे बढ़ना चाहती है तो उसे ‘‘ये सब लड़कों के काम हैं’’ कह कर हतोत्साहित किया जाता है। घर के सभी काम जैसे- खाना बनाना, बर्तन और कपड़े धोना, झाड़ू-पोंछा करना आज भी केवल लड़कियों के ही काम माने जाते हैं।

लड़कियों को उनके अधिकारों से वंचित करके हम अपने समाज की शक्ति का आधा हिस्सा व्यर्थ कर देते हैं। आज लड़कियाँ हर क्षेत्र में लड़कों की बराबरी कर रही हैं। खेलों में पी0टी0 उषा, कर्णम्् मल्लेश्वरी, सानिया मिजर््ा, झूलन गोस्वामी, एम0एस0 मैरी कॉम और साइना नेहवाल आदि ने भारत का नाम ऊँचा किया है। समाज सेवा में मदर टेरेसा तथा मेधा पाटेकर के नाम उल्लेखनीय हैं।

भारतीय मूल की दो महिलाओं- कल्पना चावला एवं सुनीता विलियम्स ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में ख्याति अर्जित की है। कई प्रदेशों के मुख्यमंत्री पद को अनेक महिलाओं ने सुशोभित किया है।

लिंग के आधार पर होने वाले भेद-भाव के अलावा हमारे समाज में जाति के आधार पर भी भेद-भाव देखने को मिलता है।

क्या आपके पास-पड़ोस में किसी के साथ कोई भेद-भाव होता है ? किसी के साथ भेद-भाव देखकर आप क्या महसूस करते हैं ? इसे रोकने के लिए आप क्या करेंगे?

निम्न समझी जाने वाली जातियों को उनके अधिकार दिलाने के लिए महात्मा गाँधी, ज्योतिबा फुले एवं डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जैसी महान विभूतियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। हमारे देश की स्वतंत्रता के बाद संविधान बनाते समय डॉ0 अम्बेडकर ने अस्पृश्यता या छुआ-छूत मिटाने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। छुआ-छूत को अब कानूनी रूप से समाप्त कर दिया गया है। भारत के प्रत्येक नागरिक को, चाहे वह किसी जाति, लिंग या धर्म का हो, समान अधिकार और समान अवसर प्राप्त हैं। सभी को सरकारी नौकरियाँ पाने के लिए समान अवसर दिया गया है। वर्षों से भेद-भाव की शिकार जातियों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए संविधान में उनके लिए सरकारी सेवाओं में आरक्षण की भी व्यवस्था की गई है।

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक ;व्नत छंजपवदंस ैलउइवसद्ध

हमने देखा कि हमारा देश विविधताओं में एकता की भावना को समेटे हुए है। हमारे देश की एकता और भाई-चारे की पहचान कुछ प्रतीक चिह्नों से भी होती है। ये चिह्न राष्ट्रीय प्रतीक कहलाते हैं।

आइए अपने राष्ट्रीय प्रतीकों को जानें-

राष्ट्र ध्वज

हमारे देश के ध्वज में तीन रंग क्रमशः केसरिया, सफेद एवं हरा हैं। इसलिए इसे तिरंगा भी कहते हैं। हर रंग का अपना एक अलग महत्व एवं संदेश होता है। जैसे- सबसे ऊपर का केसरिया रंग बलिदान का प्रतीक है, बीच का सफेद रंग शान्ति का और नीचे का हरा रंग हमारी धरती की हरियाली दर्शाता है। ध्वज के बीच बना हुआ चक्र उन्नति की ओर अग्रसर होने का प्रतीक है। यह चक्र नीले रंग का बना होता है तथा इसमें कुल 24 तीलियाँ होती हैं। ध्वज की लम्बाई तथा चौड़ाई में 3: 2 का अनुपात होता है।

आप भी एक कागज पर राष्ट्र ध्वज बनाकर उसमें रंग भरिए।
राष्ट्र-ध्वज संहिता (राष्ट्र-ध्वज सम्बन्धी नियम)

- ध्वज फटा-पुराना या खराब रंगों वाला न हो।

- ध्वज में हमेशा केसरिया रंग ऊपर रहे।

- इसे निजी वाहनों पर तथा परिधान के रूप में कमर के नीचे या अधोवस्त्र के रूप में इस्तेमाल न करें।

- सूर्यास्त से पहले ध्वज को उतार लें।

- ध्वज फहराते समय झुका न हो।

- देश के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति या प्रधानमंत्री का निधन होने पर पूरे देश में राष्ट्र-ध्वज आधा झुका दिया जाता है।

राष्ट्रगान
राष्ट्रीय पर्व पर ध्वज फहराने के बाद हम राष्ट्रगान गाते हैं। इसके रचयिता गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर हैं। राष्ट्रगान के गायन की अवधि लगभग 52 सेकेंड है।
राष्ट्रगीत
बंकिम चन्द्र चटर्जी ने 'वंदे मातरम्' गीत की रचना की, जिसे 'जन-गण-मन' के समान दर्जा प्राप्त है। यह गीत स्वतंत्रता-संग्राम में जन-जन का प्रेरणा स्रोत था। इसका प्रथम पद इस प्रकार है।
वन्दे मातरम् !मातृ भूमि की वन्दना करता हँू।

सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज-शीतलाम्,स्वच्छ जल से परिपूर्ण, स्वादिष्ट फलों

शस्य श्यामलाम्, मातरम् !से पूर्ण, चंदन जैसी शीतल,

शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्हरे भरे खेतों वाली माँ। आपकी वन्दना करता हूँ।

फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्श्वेत प्रकाश से परिपूर्ण चाँदनी रातों से प्रफुल्लित,

सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्विकसित फूलों एवं पल्लवों से सुशोभित होती हुई,

सुखदाम्, वरदाम्, मातरम् !सुन्दर, हास्यमयी, मधुर भाषिणी

वन्दे मातरम् !सुख देने वाली, वरदान देने वाली माता की वन्दना करता हूँ। माता की वन्दना करता हूँ।

राष्ट्रीय पशु

भारत का राष्ट्रीय पशु बाघ है। यह पीले रंग का धारीदार पशु है। अपनी दृढ़ता, फुर्ती और अपार शक्ति के लिए बाघ को राष्ट्रीय पशु कहलाने का गौरव प्राप्त है। बाघ की जो प्रजाति भारत में पाई जाती है उसे 'रॉयल बंगाल टाइगर' कहते हैं।

राष्ट्रीय पक्षी

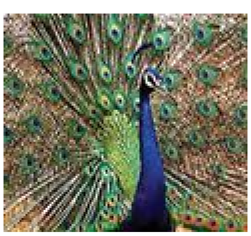

भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर है। इस रंग-बिरंगे पक्षी की गर्दन लम्बी होती है तथा सिर पर पंखे के आकार की कलगी होती है। मादा की अपेक्षा नर मोर अधिक सुंदर होता है। उसकी गर्दन चमकीली नीली होती है तथा पूँछ लम्बी और चमकीले हरे पंखों की बनी होती है। नर मोर अपने पंखों को फैलाकर आकर्षक नृत्य करता है। मादा मोर का रंग भूरा होता है। वह नर मोर से थोड़ी छोटी होती है और उसकी पूँछ बड़ी नहीं होती है।

राष्ट्रीय पुष्प

भारत का राष्ट्रीय पुष्प कमल है। यह एक पवित्र पुष्प है तथा प्राचीन भारतीय कला और पुराणों में इसका एक महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल से ही कमल भारतीय संस्कृति का शुभ प्रतीक माना जाता रहा है।

राज चिह्न

भारत का राज चिह्न सारनाथ में स्थित "अशोक स्तम्भ" से लिया गया है। राज चिह्न में चार सिंह हैं। प्रत्येक सिंह का मुँह पूरब, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण दिशा की तरफ रहता है। इसके नीचे एक पट्टी है जिसके बीच में एक चक्र है इस चक्र के दाईं ओर एक सांड़ और बाईं ओर एक घोड़ा है इस स्तम्भ में नीचे देवनागरी लिपि में 'सत्यमेव जयते' लिखा है, जिसका अर्थ है- 'सत्य की ही विजय होती है'।

अभ्यास

1. उत्तर प्रदेश एवं तमिलनाडु के पारंपरिक नृत्यों के नाम लिखिए।

2. अस्पृश्यता की भावना दूर करने में जिन लोगों ने अपना योगदान दिया है उनमें से किन्हीं दो के बारे में लिखिए।

3. आपके विद्यालय में राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन कैसे होता है ? आप इन पर्वों में अपनी सहभागिता कैसे करते हैं ?

4. विविधता में एकता से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

राष्ट्रगान ....

राष्ट्रीय पशु ....

राष्ट्रीय पक्षी ....

राष्ट्र ध्वज ....

राष्ट्रीय पुष्प ....

6. सुमेलित कीजिए-

मदर टेरेसा   अन्तरिक्ष यात्री

सचिन तेन्दुलकर क्रान्तिकारी

कल्पना चावला   समाज सेवा

बंकिम चन्द्र चटर्जी क्रिकेट

अशफ़ाक उल्ला खाँ वन्दे मातरम्

7. निम्नलिखित कथनों में सही कथन के सामने सही तथा गलत कथन के सामने गलत का चिह्न लगाइए-

(क) नवरोज ईसाइयों का प्रमुख त्योहार है। ( )

(ख) विराट कोहली क्रिकेट के खिलाड़ी हंै। ( )

(ग) भारत का राष्ट्रगीत "वन्दे मातरम्" है। ( )

(घ) चेरापूँजी तथा मॉसिनरम में सबसे कम वर्षा होती है। ( )

(ङ) राज चिह्न के नीचे "सत्यमेव जयते" लिखा है। ( )

प्रोजेक्ट वर्क-

भारत के मानचित्र में निम्नलिखित प्रदेशों को अलग-अलग रंगों से प्रदर्शित कीजिए-

(क) जिस प्रदेश में चेरापूँजी तथा मॉसिनरम स्थित हैं।

(ख) जिस प्रदेश का प्रमुख नृत्य कत्थक है।

(ग) जिस प्रदेश में जाड़े में "फिरन" पहना जाता है।

(घ) जिस प्रदेश की मुख्य भाषा मराठी है।

(ङ) जिस प्रदेश में महात्मा गांधी का जन्म हुआ था।

चर्चा करें-

शिक्षक बच्चों से चर्चा करें कि पास-पड़ोस में होने वाली घरेलू हिंसा (महिला उत्पीड़न) को कैसे रोका जाए।

बालिका सुरक्षा से संबंधित कार्यक्रमों के बारे में चर्चा करें।

पाठ 2

DH3PV3

ग्रामीण रहन-सहन एवं स्थानीय स्वशासन

लालगंज गाँव में बहुत चहल-पहल है। वहाँ बच्चों के पढ़ने के लिए एक विद्यालय खुल गया है। गाँव के लोग अपने बच्चों का नाम लिखवाने के लिए बड़े उत्साह से विद्यालय जा रहे हैं। इसके पहले उस गाँव में कोई विद्यालय नहीं था। पढ़ने के लिए बच्चों को अपने गाँव से काफी दूर के विद्यालय जाना पड़ता था। कालू और रफीक अपनी बिटिया का प्राथमिक विद्यालय लालगंज में नाम लिखवाकर लौट रहे थे, रास्ते में ही उन्हें गीता मिली जो कि अपने बेटे के साथ खेत में काम करने जा रही थी। कालू ने पूछा- गीता बहन, तुम अपने बेटे का नाम लिखवाने के लिए विद्यालय क्यों नहीं गई ? गीता ने कहा- कालू भैया, मेरा बेटा तो मेरे साथ मजदूरी करने जाता है। रफीक ने कहा- गीता बहन ! हम लोग तो अनपढ़ रह गए लेकिन अब गाँव में विद्यालय खुल जाने से हमारे बच्चों को पढ़ने के लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा। कालू- हाँ, गीता बहन ! बच्चा पढ़ लिखकर लेन-देन का हिसाब समझ सकता है। चिट्ठी-पत्री पढ़ सकता है।

क्या आपके पास-पड़ोस में भी कुछ ऐसे बच्चे हैं जो विद्यालय नहीं जाते ? पता कीजिए कि वे पढ़ने क्यों नहीं जाते ? उनके माता-पिता क्या काम करते हैं ?

मनुष्य समुदाय में रहता है। कई परिवारों को मिलाकर समुदाय बनता है। यह समुदाय चाहे गाँव का हो या नगर का। गाँवों में नगरों की अपेक्षा निरक्षरता एवं गरीबी ज्यादा है जिसका असर उनके रहन-सहन, वेश-भूषा और खान-पान पर पड़ता है।

आपके परिवार के लोग या रिश्तेदार किसी न किसी कार्य के लिए गाँव से नगर या नगर से गाँव आते जाते ही होंगे। उनसे पूछिए कि गाँव तथा नगरवासियों के रीति-रिवाजों, मनोरंजन के तरीकों, काम-धन्धों, यातायात के साधनों, त्योहार मनाने के ढंग में क्या अन्तर है ? और क्यों?

क्या आपकी कक्षा में ऐसे भी सहपाठी हैं, जिन्होंने गाँव और नगर दोनों देखे हों ?

आइए ! गाँव की चर्चा करें

रहन-सहन

अपने देश भारत की जनसंख्या का अधिकांश भाग ग्रामीण क्षेत्र में रहता है। इनका मुख्य कार्य खेती, पशु-पालन व छोटे-छोटे काम-धन्धे करना है। गाँव के लोग ज्यादातर खेती करते हैं। अपने प्रदेश में किसान वर्ष में मुख्यतः दो फसलें उगाते हैं- रबी और खरीफ। इन फसलों की उपज बेचकर किसान अपनी आवश्यकता की वस्तुएं बाजार से खरीदते हैं। उनके कृषि का आधार सिंचाई है जो मुख्यतः वर्षा द्वारा एकत्र जल तथा नलकूपों, नहरों इत्यादि द्वारा की जाती है।

विचार करिए-

- बाढ़ से यदि फसल नष्ट हो जाए अथवा सूखा से पैदावार बिल्कुल न हो तो उसका किसानों पर क्या असर पड़ेगा ?
- क्या इससे नगरवासी भी प्रभावित होंगे ?

गाँवों में खेती के अलावा काम-धन्धों के अवसर भी कम होते हैं। गाँव में सभी के पास पर्याप्त जमीन नहीं होती। ऐसे लोग दूसरों के खेतों में मजदूरी करते हैं। फसलों की बुआई, निराई और कटाई के समय इन लोगों को खेतों में काम मिल जाता है। जिन दिनों उन्हें गाँव में काम नहीं मिल पाता, वे काम खोजते हुए गाँव से दूर चले जाते हैं।

पता करके अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखिए कि-

- काम-धन्धे की खोज में गाँव के कुछ लोग कहाँ-कहाँ जाते होंगे ? ....
- खेती से जुड़े हुए किसानों और मजदूरों के अलावा भी गाँव में अन्य कौन-कौन से कामगारों के परिवार रहते हैं ? ....

अब गाँव की स्थिति में तेजी से बदलाव आ रहा है। खेती में उन्नतशील बीज एवं उत्तम खाद का प्रयोग होने लगा है। खेतों की जुताई के लिए हल-बैल के स्थान पर ट्रैक्टर का प्रयोग होने लगा है, गाँव में विद्यालय, पक्के मकान, पक्की सड़कें, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा पंचायत घर इत्यादि बन गये हैं।

गाँवों में अन्य कौन-कौन से बदलाव आए हैं ? कक्षा में चर्चा कीजिए-

स्थानीय स्वशासन

गाँवों में सार्वजनिक सुविधाओं का प्रबंध करने के लिए ही ग्रामीण स्वशासन होता है। स्वशासन का अर्थ है अपना शासन। गाँवों में इतना परिवर्तन होने के बाद भी बहुत सी ऐसी समस्याएँ हैं जिन्हें दूर करने के लिए गाँव के सभी लोगों को मिल-जुलकर काम करने की जरूरत है। गाँव में कुआँ, तालाब, सड़कें, नाली, विद्यालय, हैण्डपम्प, नहर, नलकूप आदि सुविधाएँ सभी के काम आती हैं। इन्हीं सुविधाओं को सार्वजनिक सुविधाएँ कहते हैं। इन सार्वजनिक सुविधाओं को

उपलब्ध कराने व अन्य समस्याओं का निराकरण करने के लिए पंचायत व्यवस्था बनाई गई है।

पंचायत व्यवस्था तीन स्तरों पर कार्य करती है-

1. ग्राम पंचायत2. क्षेत्र पंचायत 3. जिला पंचायत

पंचायत व्यवस्था तीन स्तरों पर कार्य करती है-

१. ग्राम पंचायत २. क्षेत्र पंचायत ३. जिला पंचायत

ग्राम पंचायत

हमारे देश में प्रत्येक सौ व्यक्तियों में से लगभग ६६ व्यक्ति गाँव में रहते हैं। इनके मुख्य कार्य खेती, पशु-पालन व छोटे-छोटे काम-धन्धे हैं। लालगंज गाँव में कुल आठ बस्तियाँ हैं।

ग्राम लालगंज

तालिका-(१) गाँव की जनसंख्या विवरण

गाँव के कुल परिवारों की संख्या	कुल जनसंख्या	महिला		पुरुष	
		साक्षर	निरक्षर	साक्षर	निरक्षर
४६	३५०	१४५	५५	५०	१००

तालिका-(२) ६-११ वर्ष के बच्चों की स्थिति

क्र० सं०	विवरण	६-११ वय वर्ग के बच्चों की स्थिति		
		बालक	बालिकाएँ	योग
१	स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या	७१	४०	१११
२	शिक्षा से वंचित बच्चे	३१	२२	५३

तालिका (2) देखकर लिखिए-

1.गाँव में कुल कितने बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं ?...

2.स्कूल न जाने वाले बच्चों में से कितनी लड़कियाँ स्कूल नहीं जा रही हैं ?...................................

3.आपके गाँव के ऐसे परिवार जिनके बच्चे स्कूल न जाते हों, उनके माता-पिता व बच्चों से बातचीत करके निम्नवत् तालिका भरिए-

बच्चे का नाम कारण

4.स्कूल न जाने वाले बच्चों से सरकार द्वारा चलाए जा रहे छः कार्यक्रमों के नाम पूछिए-

(क)................................(ख)................................
(ग)................................
(घ)................................(ङ)................................
(च)................................

5.अब तुलना कीजिए कि आपको कितने कार्यक्रमों की जानकारी है, सूची बनाइए-

कार्यक्रम के नाम

- किन कार्यक्रमों की जानकारी नारा लेखन से हुई ?...
- किन कार्यक्रमों से आपको लाभ हुआ ? ....
- किन कार्यक्रमों से आपके पड़ोसी को लाभ हुआ ? ....
- किन कार्यक्रमों की जानकारी ग्राम सभा की बैठक से हुई ?...
- किन कार्यक्रमों की जानकारी अन्य माध्यमों से हुई ?...

लालगंज की एक बस्ती (टोला) में रहने वाले लोगों के घरों का गन्दा पानी बहकर सड़क पर जमा हो जाता है क्योंकि नाली में लोग घरों का कूड़ा डालते हैं जिसके कारण वहाँ हमेशा कीचड़ बना रहता है। इस बस्ती का हैण्डपम्प जो कुछ ही महीने पहले लगा था उसका हैण्डल किसी ने उखाड़ लिया है। इस बस्ती के स्कूल की खिड़की के पल्ले लोग उखाड़ ले गए और कमरों में अनाज रखते हैं। क्या ऐसा करना उचित है ?

सड़क पर तो सब लोग चलते हैं, हैण्डपम्प का पानी भी सब लोग पीते हैं तथा गाँव वालों के ही बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं तो फिर हम ऐसा क्यों करते हैं ? चर्चा करें ?

कम से कम 1000 की आबादी पर एक ग्राम पंचायत होती है। जिन गाँवों की आबादी 1000 से कम है वहाँ पास के अन्य छोटे-छोटे गाँवों को मिलाकर एक ग्राम पंचायत बनाई जाती है यानि एक ग्राम पंचायत अन्य मिले हुए सभी गाँवों के लिए काम करती है।

ग्राम पंचायत समिति

कंचन और उसका भाई विपिन रोज शाम को बाग में अपने बाबाजी के साथ टहलने जाते हैं। एक दिन बाबाजी ने कहा- ‘‘कंचन, आज मैं शाम को बाग में टहलने नहीं जाऊँगा क्योंकि आज मुझे ग्राम पंचायत समिति की बैठक में जाना है।’’

कंचन-“ग्राम पंचायत समिति क्या है ? क्या यह आपका दफ्तर है” ?

बाबा-नहीं, यह दफ्तर नहीं है। मैं वहाँ नौकरी नहीं करता। मैं गाँव में रहने वाले लोगों के द्वारा पंचायत समिति का सदस्य चुना गया हूँ।

कंचन-ग्राम पंचायत समिति के सदस्य कौन हो सकते हैं ?

बाबा-”ग्राम पंचायत समिति का सदस्य होने के लिए व्यक्ति को उस गाँव का निवासी तथा भारत का नागरिक होना आवश्यक है। उसकी उम्र कम से कम 21 वर्ष की हो। वह पागल या दिवालिया न हो। वह किसी न्यायालय द्वारा कोई सजा न पाया हो। इसके अलावा 18 वर्ष के सभी स्त्री-पुरुष मतदान के द्वारा ग्राम पंचायत समिति के सदस्य का चुनाव करते हैं। पंचायत समिति के सदस्यों की संख्या 09 से 15 तक हो सकती है। यह संख्या उस ग्राम सभा की कुल जनसंख्या के आधार पर होती है।

ये सदस्य ग्राम पंचायत के अन्तर्गत आने वाले गाँवों से 5 वर्ष के लिए चुने जाते हैं। कानून के अनुसार ग्राम पंचायत में महिला तथा अनुसूचित जाति के सदस्यों का होना आवश्यक है।

ग्राम प्रधान

बाबाजी ने विपिन को समझाते हुए बताया कि जैसे तुम्हारी कक्षा का मॉनीटर कक्षा के बच्चों के द्वारा चुना जाता है, वैसे ही ग्राम प्रधान का चुनाव मतदान द्वारा उस गाँव के निवासियों द्वारा होता है। ग्राम पंचायत समिति के सदस्यों में से ही एक सदस्य को बहुमत से उप प्रधान के लिए चुना जाता है। ग्राम प्रधान की अनुपस्थिति में उप प्रधान ही उसके कार्यों को करता है। ग्राम प्रधान, उप प्रधान तथा पंचायत समिति के सदस्य गाँव की जनता द्वारा चुने जाते हैं और गाँव की जनता की सुख-सुविधा के लिए कार्य करते हैं। इन्हें जनता का प्रतिनिधि भी कहा जाता है। यदि कोई सदस्य ठीक से काम नहीं करता तो वह पंचायत समिति से हटाया भी जा सकता है।

ग्राम पंचायत का महत्व

गाँव से सम्बन्धित निर्णय ग्राम पंचायत में लिए जाते हैं। गाँव के लोग अपनी स्थानीय समस्याओं को आसानी से ग्राम सभा में ही सुलझा लेते हैं जिससे उनके समय, सम्पत्ति और संसाधनों की बचत होती है।

इन्हें भी जानें

ग्राम प्रधान ग्राम शिक्षा समिति का अध्यक्ष होता है। विद्यालय के रख-रखाव, निःशुल्क बालिका डे्रस वितरण, छात्रवृत्ति-वितरण, निःशुल्क पाठ्य पुस्तक-वितरण तथा विद्यालय में दोपहर के भोजन (मिड डे मील) की व्यवस्था उसकी देख-रेख में होती है।

चर्चा बिन्दु

1.आपके गाँव में प्रधान महिला है या पुरुष ?
2.उन्हें प्रधान कब चुना गया ?
3.प्रधान पद के अन्य उम्मीदवार कौन-कौन थे ?
4.आपके घर में किसने-किसने वोट दिया था ?
5.ग्राम प्रधान ने गाँव में क्या- क्या काम कराए हैं ?

ग्राम पंचायत अधिकारी, ग्राम पंचायत का सचिव होता है, उसे सेक्रेटरी भी कहा जाता है। वह जनता द्वारा चुना नहीं जाता बल्कि सरकार द्वारा नियुक्त कर्मचारी होता है। पंचायत सचिव, ग्राम पंचायत समिति का हिसाब-किताब तथा किए गए कार्य का ब्यौरा रखता है। पंचायत की बैठकें कराता है, सरकारी

योजनाओं के विषय में गाँव वालों को जानकारी देता है, और बैठक का विवरण लिखता है।

"पैसा कहाँ से प्राप्त होता है ?" विपिन ने कहा

बाबा-विपिन बेटा ! सरकार द्वारा बहुत अनुदान दिया जाता है। इसके अलावा हाट, दुकान, मकान, जमीन आदि पर कर (टैक्स) वसूला जाता है। कुछ सार्वजनिक भूमि पट्टे पर दी जाती है। इन्हीं साधनों से इकट्ठा किए गए धन का उपयोग गाँव के विकास के लिए किया जाता है।

जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि

ग्राम प्रधान

उप प्रधान

ग्राम पंचायत समिति के सदस्य

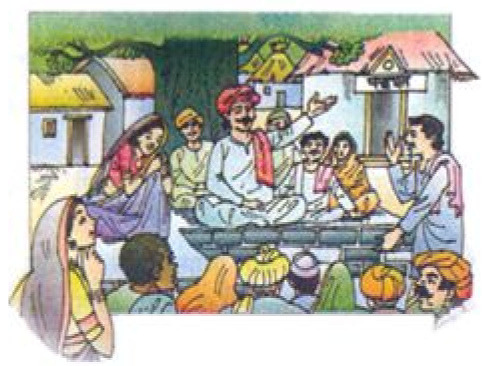

ग्राम पंचायत
सरकार द्वारा नियुक्त कर्मचारी

ग्राम पंचायत अधिकारी (सेक्रेटरी)

ग्राम विकास अधिकारी

लेखपाल

बेसिक स्वास्थ्य कार्यकत्री

नलकूप चालक

प्रधानाध्यापक

शिक्षक

ग्राम पंचायत

विपिन-बाबा जी ! आपने यह नहीं बताया कि ग्राम पंचायत का क्या कार्य है?

पंचायत के कार्य

बाबा-पंचायत की जिम्मेदारी गाँव की दशा सुधारने की है। ग्राम पंचायत यह देखती है कि गाँव की जनता प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के द्वारा स्वास्थ्य की सुविधा प्राप्त कर रही है या नहीं। यह बच्चों की शिक्षा के लिए विद्यालय की निगरानी करती है। गाँव की गलियों में खड़न्जा बिछवाने, सड़क बनवाने, पानी की निकासी के लिए नाली बनवाने, बिजली, पीने के पानी इत्यादि की व्यवस्था तथा जन्म और मृत्यु का ब्यौरा तैयार करने की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत की होती है। यह जरूरतमन्दों को चिह्नित करने और कार्यों की प्राथमिकता का निर्णय भी अपनी बैठकों में करती है।

गाँव की सार्वजनिक सम्पत्ति का रख-रखाव एवं इनके खरीदने तथा नीलामी का कार्य ग्राम पंचायत द्वारा ही होता है। पंचायत अपनी आमदनी तथा खर्च का हिसाब-किताब रखती है। वर्ष में दो बार ग्राम पंचायत की बैठक होती हैं। बैठक में ग्राम पंचायत यह देखती है कि पंचायत समिति अपनी जिम्मेदारी वाले कार्य ठीक ढंग से कर रही है या नहीं।

अभ्यास

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) ग्राम पंचायत का चुनाव.................................... वर्षों के लिए होता है।

(ख) पंचायत समिति के सदस्यों को चुनने वाले मतदाता की आयु कम से कम........... वर्ष होनी चाहिए।

(ग) ग्राम पंचायत के प्रधान को................................ कहते हैं।

(घ) पंचायत की जिम्मेदारी गाँव की दशा......................... की होती है।

(ङ) पंचायत को सरकार द्वारा......................... मिलता है।

2. दिए गए कथनों में जो सही हों उनके आगे सही (ü) और जो कथन गलत हों उनके आगे गलत (ग) का चिह्न लगाइए-

(क) पंचायत समिति का कार्य गाँव में रोशनी का प्रबंध करना है। ( )

(ख) हर ग्राम सभा में एक पंचायत समिति होती है। ( )

(ग) पंचायत समिति के सदस्यों की संख्या निश्चित होती है। ( )

(घ) मेला, दुकान, मकान आदि पर लगे कर द्वारा ग्राम पंचायत की आय होती है। ( )

3. मिलान कीजिए-

(क)	(ख)
बढ़ई	मिट्टी के बर्तन बनाना
शिक्षक	इलाज करना
डॉक्ट	शिक्षण कार्य
राजगीर	लकड़ी का सामान बनाना
कुम्हार	घर बनाना

4. ध्यान से पढ़िए और बताइए-

(क) ग्राम पंचायत के सदस्यों को चुने जाने के लिए कम से कम कितनी आयु होनी चाहिए ?

(ख) अपने ग्राम सभा के प्रधान का नाम लिखिए।

(ग) आपकी ग्राम सभा की पंचायत समिति में कुल कितने सदस्य हैं ?

(घ) ग्राम पंचायत के कार्य लिखिए ।

(ङ) अपने गाँव में चल रही किसी सरकारी योजना का नाम व उसके कार्य लिखिए।

(छ) यदि आपके गाँव में पंचायत न होती तो क्या कठिनाई होती ?

5. ग्राम पंचायत के सदस्यों को चुनने के लिए आप वोट क्यों नहीं दे सकते ?

समूह गतिविधि

विद्यालय में बाल सरकार का गठन करवाएँ। चुनाव की प्रक्रिया ग्राम प्रधान के चुनाव जैसी हो।

प्रोजेक्ट वर्क

अपने गाँव के सुधार के लिए आप अपने ग्राम प्रधान से क्या-क्या कार्य करवाना चाहते हैं, इसके लिए सूची बनाकर अपने शिक्षक/शिक्षिका के साथ ग्राम प्रधान से सम्पर्क कीजिए।

पाठ 3

DHCKHQ

क्षेत्र पंचायत और जिला पंचायत

क्षेत्र पंचायत

कई गाँवों को मिलाकर एक विकासखण्ड बनता है। इसे विकास क्षेत्र (ब्लॉक) भी कहते हैं। नीचे माधोपुर विकासखण्ड का मानचित्र दिया गया है। बताइये, इसमें कितने गाँवों के इलाके शामिल हैं ? \

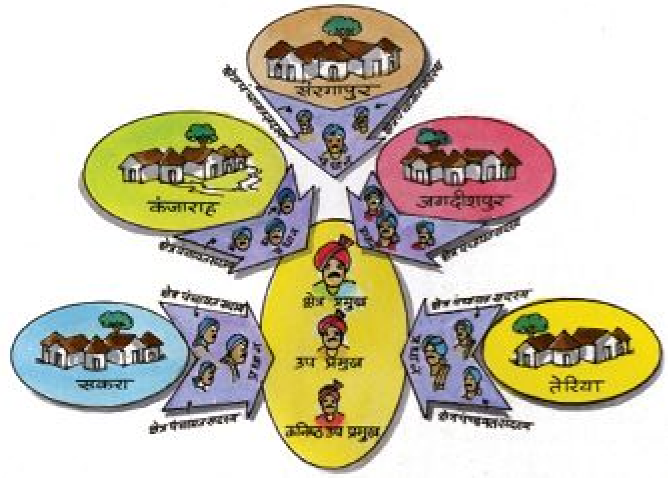

माधोपुर विकासखण्ड के सभी गाँवों में पिछले कई वर्षों से खूब काम हो रहे हैं। किसी गाँव में नया स्कूल बन रहा है तो कहीं कुआँ खुदवाया जा रहा है, पानी की लाइन बिछाई जा रही है तो कहीं गाँव की फसल जमा करने के लिए गोदाम बन रहा है। ऐसे सभी कार्यों की देख-रेख के लिए माधोपुर विकास क्षेत्र के सभी गाँवों ने मिलकर अपनी क्षेत्र पंचायत बनाई है। माधोपुर कस्बे के बीचों-बीच इसका कार्यालय है। कार्यालय के बाहर एक बड़े से बोर्ड पर लिखा है ”क्षेत्र पंचायत माधोपुर“। लोग इसे ‘ब्लॉक आफिस’ या ‘ब्लॉक का दफ्तर’ भी कहते हैं। इस कार्यालय में क्षेत्र पंचायत माधोपुर के सभी सदस्य आकर बैठते और बातचीत करते हैं।

कैसे बनी क्षेत्र पंचायत

पिछले साल माधोपुर विकासखण्ड के हर गाँव में प्रधान का चुनाव हुआ। 18 साल व उससे ऊपर की उम्र के हर व्यक्ति ने वोट दिया। हर गाँव में एक प्रधान तो चुना ही गया, क्षेत्र पंचायत के लिए सदस्य भी चुने गए। बधनी गाँव से दो, मनकापुर से चार व रोहितपुर से तीन क्षेत्र पंचायत सदस्य चुने गए। क्षेत्र पंचायत सदस्यों को लोग बी0डी0सी0 मेम्बर भी कहते हैं।

कुछ गाँवों से केवल महिलाएँ ही पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ सकती हैं। इन्हें ‘महिलाओं के लिए आरक्षित सीटें’ कहा जाता है।

माधोपुर विकासखण्ड के सभी गाँवों के प्रधान और क्षेत्र पंचायत सदस्यों को मिलाकर ‘क्षेत्र पंचायत माधोपुर’ बनी है।

इस क्षेत्र के सांसद और विधायक भी माधोपुर क्षेत्र पंचायत के सदस्य हैं।

क्षेत्र पंचायत के सभी सदस्यों ने अपने बीच में से एक 'पंचायत-प्रमुख' चुना है। इनका नाम शान्ति देवी है। शान्ति देवी पंचायत की बैठकों में सभा का संचालन करती हैं। उन्हें लोग 'ब्लॉक प्रमुख' भी कहते हैं।

सभी पंचायत सदस्यों ने आपस में विचार-विमर्श करके एक उपप्रमुख व एक कनिष्ठ उपप्रमुख भी चुना है।

मुन्ना खाँ उपप्रमुख व बैंजामिन कनिष्ठ उपप्रमुख हैं।

मुन्ना खाँ और बैंजामिन को लोग ''छोटका प्रमुख जी'' कहकर पुकारते हैं।

क्षेत्र पंचायत के सदस्यों में कोई भी 21 साल से कम नहीं है, क्योंकि इससे कम उम्र का व्यक्ति पंचायत सदस्य नहीं बन सकता।

छोटी-छोटी समितियाँ

माधोपुर क्षेत्र पंचायत ने विकासखण्ड के गाँवों में हो रहे कार्यों की देख-रेख के लिए कई समितियाँ बना लीं हैं। जैसे-

(अ)क्षेत्र की निर्माण समिति- क्षेत्र के गाँवों में बन रही इमारतों पर नजर रखती है। उसके रख-रखाव का ध्यान रखती है।

(ब)क्षेत्र की जल समिति- सभी गाँवों में पानी का बन्दोबस्त देखती है। यदि किसी गाँव में पीने का पानी नहीं मिल रहा हो तो वहाँ हैण्डपम्प लगाने या पानी की लाइन बिछाने के लिये क्षेत्र पंचायत को राय देती है।

(स)क्षेत्र की शिक्षा समिति- स्कूलों में जाकर उनकी समस्याओं की जानकारी लेती है।

इसी प्रकार क्षेत्र में बीमारियों की रोकथाम व लोगों के स्वास्थ्य की देख-भाल के लिये 'क्षेत्र स्वास्थ्य रक्षा समिति' बनाई गई है।

हर एक समिति में सदस्यों की संख्या 10 से 15 तक होती है।

अपने क्षेत्र पंचायत के अन्तर्गत बनी समितियों के नाम लिखिए।

क्षेत्र पंचायत के काम

माधोपुर क्षेत्र पंचायत ने पिछले साल अपने ब्लॉक (क्षेत्र) में निम्नलिखित काम करवाए-

कंजाराह गाँव में एक खाद व बीज केन्द्र खुलवाया। यहाँ से गाँवों के किसान सस्ते दामों पर नये बीज और खाद ले जाते हैं।

सिकरा गाँव से कंजाराह तक 2 कि.मी. पक्की सड़क बनवाई। जिसकी लागत लगभग 15 लाख आई।

क्षेत्र पंचायत ने विकास खण्ड के सभी ऐसे गाँवों में जहाँ पशु अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, स्कूल नहीं थे, बनवाने का निर्णय लिया।

क्षेत्र के सभी गाँवों के कार्यों पर कड़ी निगरानी रखते हैं।

बच्चों ! आपकी क्षेत्र पंचायत क्या-क्या कार्य करती है, लिखिए।

पंचायत ने ठेकेदार से दुबारा पुलिया बनवाई

जुलाई का महीना था। रविवार का दिन। तेज वर्षा हो रही थी। अचानक जगदीशपुर गाँव की पुलिया का एक हिस्सा टूट कर गिर पड़ा। उस दिन किसी को कोई नुकसान नहीं हुआ।

अगले दिन सुबह गाँव के सब लोग पुलिया पर जमा हो गए। सब लोग आपस में बातें करने लगे। "आखिर पुलिया क्यों टूट गई ? इसी गर्मी में तो ठेकेदार ने उसे बनवाया था।" ठेकेदार दूसरे गाँव कंजाराह का था। जगदीशपुर के प्रधान ने उसे बुलवाया, वह नहीं आया। अब गाँव के लोग जुलूस बनाकर क्षेत्र पंचायत के दफ्तर पहुँचे। सभी ने प्रमुख घनश्याम सिंह से शिकायत की। घनश्याम सिंह ने निर्माण समिति के सदस्यों से कहा कि जाकर पुलिया देख आएँ। निर्माण समिति के लोगों ने जाकर टूटी हुई पुलिया देखी। पता लगा कि टूटे हुए हिस्से में सीमेन्ट और लोहा (सरिया) बहुत कम लगाया गया है। इसी कारण पुलिया टूटी।

क्षेत्र प्रमुख घनश्याम सिंह ने कंजाराह की ग्राम पंचायत से कहा कि वह गाँव के ठेकेदार को पंचायत में बुलाएँ। अब ठेकेदार को क्षेत्र-पंचायत के दफ्तर में आना पड़ा। पंचायत सदस्यों ने उससे जमकर पूछताछ की। उसे कड़ी फटकार भी लगाई। कुछ लोगों ने राय दी कि ठेकेदार के खिलाफ थाने में शिकायत (रिपोर्ट) लिखवाओ। ठेकेदार डरकर माफी माँगने लगा। उसने माना कि जो पुलिया टूटी है उसमें सीमेन्ट और सरिया बहुत कम लगाई गयी है। तब पंचायत ने तय किया कि ठेकेदार दुबारा अपने रुपयों से पुलिया बनवाए, वरना मामला पुलिस को दे दिया जाएगा।

ठेकेदार मान गया और उसने दुबारा मजबूत और पक्की पुलिया बनवाई।

क्षेत्र पंचायत की आमदनी

क्षेत्र पंचायत माधोपुर को अपने कामों के लिए धन कहाँ से मिलता है ?

करों से आया हुआ और सरकार से मिला धन बैंक में क्षेत्र पंचायत के खाते में जमा कर दिया जाता है।

पाँच साल काम करेगी पंचायत

क्षेत्र पंचायत की प्रमुख शान्तिदेवी सभी सदस्यों से कहती हैं कि ‘उन’ सबको पाँच साल के लिए चुना गया है। यदि वे अपने क्षेत्र के गाँवों के लिये ईमानदारी और मेहनत से काम नहीं करेंगे तो लोग उन्हें अगले पंचायत चुनाव में वोट नहीं देंगे।

माधोपुर क्षेत्र पंचायत का काम पूरा करने के लिये सरकार ने पंचायत के दफ्तर में कुछ कर्मचारी व अधिकारी रखे हैं इनमें सबसे बड़े अधिकारी को लोग खण्ड विकास अधिकारी या बी0डी0ओ0 भी कहते हैं। रामराज सिंह माधोपुर के खण्ड विकास अधिकारी हैं। वे क्षेत्र प्रमुख के सचिव के रूप में काम करते हैं।

उत्तर प्रदेश में माधोपुर की तरह सैकड़ों क्षेत्र पंचायतें हैं। सभी का गठन माधोपुर क्षेत्र पंचायत की तरह होता है। ये सभी पंचायतें लगभग माधोपुर की तरह काम भी करती हैं। कई विकासखण्डों में क्षेत्र प्रमुख के पद महिलाओं, अनुसूचित जाति या पिछड़ी जाति के लोगों के लिए आरक्षित रहते हैं।

जिला पंचायत

विकेन्द्रीकृत पंचायती राज व्यवस्था के अन्तर्गत जिस तरह हर गाँव में ग्राम पंचायत व हर विकासखण्ड में एक क्षेत्र पंचायत काम करती है, उसी तरह उत्तर प्रदेश के हर जिले (जनपद) में जिला पंचायत काम करती है। जिले की सभी क्षेत्र पंचायतों को मिलाकर जिला पंचायत बनती है।

जिला पंचायत के सदस्य

- क्षेत्र पंचायत के सभी प्रमुख जिला पंचायतों के सदस्य होते हैं।
- जिले के सांसद व विधायक भी जिला पंचायत के सदस्य होते हैं।

- जिला पंचायत के सदस्य अपने बीच में से एक अध्यक्ष और एक उपाध्यक्ष चुनते हैं।

- जिले का मुख्य विकास अधिकारी (सी0डी0ओ0) जिला पंचायत का सचिव होता है।

चुनाव की प्रक्रिया

- जिला पंचायत के सदस्य भी पाँच साल के लिये चुने जाते हैं।

- 21 वर्ष से कम उम्र का व्यक्ति जिला पंचायत का सदस्य नहीं बन सकता।

- कुछ जिला पंचायतों में अध्यक्ष का पद महिलाओं के लिए ही छोड़ा गया है, ये महिलाओं के लिए आरक्षित सीटें हैं। इन पर पुरुष चुनाव नहीं लड़ सकते। जिला पंचायत की एक बैठक तीन महीने में जरूर होनी चाहिए, ऐसा नियम है।

जिला पंचायत के कार्य

- विकासखण्ड का काम-काज देखने के लिए जिला पंचायत अपने सदस्यों की छोटी-छोटी समितियाँ बनाती है। जैसे शिक्षा समिति, सिंचाई व्यवस्था समिति, पशु-पालन समिति, भूमि विकास समिति आदि।

- ये समितियाँ जिले के पशु-पालन, सिंचाई, खेती व जमीनों की देख-भाल का काम करती हैं।

- क्षेत्र पंचायत के कामों का जिला पंचायत पर्यवेक्षण (देख-रेख) भी करती है।

- तीन स्तरीय पंचायत व्यवस्था में हमने देखा कि ग्राम, विकासखण्ड व जिला स्तर पर पंचायत व्यवस्था कायम है। तीनों स्तरों पर प्रतिनिधियों की चुनाव प्रक्रिया, आय के स्रोत एवं कार्य लगभग एक जैसे ही हैं।

आमदनी

- जिला पंचायत जिले की जमीनों पर कर लगाती है। मेलों तथा बाजारों में दुकानों का लाइसेंस देकर फीस वसूलती है, इसके अलावा उसे सरकार से भी धन मिलता है।

- इनमें अंतर मुख्यतः भौगोलिक क्षेत्रफल, प्राप्त धनराशि का योग, कार्यों का मूल्य व समस्याओं को सुलझाने की क्षमता में है। सबसे छोटे क्षेत्र व छोटी समस्याओं के लिए ग्राम पंचायत भी है और अधिक जटिल समस्याओं के लिए जिला पंचायत।

इस पूरी व्यवस्था को हम विकेन्द्रीकृत पंचायती राज कहते हैं।

अभ्यास

1. दिए गए कथनों में जो सही हों उनके आगे सही और जो कथन गलत हों उनके आगे गलत का चिह्न लगाइए-

स एक ग्राम सभा के लिए एक क्षेत्र पंचायत बनाई जाती है। ( ) स सांसद और विधायक क्षेत्र पंचायत के सदस्य होते हैं। ( )

स क्षेत्र पंचायत का प्रमुख ब्लॉक प्रमुख होता है। ( )

स क्षेत्र पंचायतों के सदस्य मिलकर अपना एक ग्राम प्रधान चुनते हैं। ( )

2. अपने मित्रों और शिक्षक से बातचीत करके उत्तर दीजिए-

स अपने आस-पास की पाँच ग्राम सभाओं के नाम लिखिए।

स अपने पड़ोस के दो विकासखण्ड या क्षेत्र पंचायतों के नाम लिखिए।

आपके विकासखण्ड या क्षेत्र पंचायत का दफ्तर/आॅफिस कहाँ पर है ? उस स्थान का नाम लिखिए।

3. अपने शिक्षक से यह पूछिए या इस पर चर्चा कीजिए कि महिलाओं, पिछड़ी जाति और अनुसूचित जाति के लोगों के लिए आरक्षण क्यों जरूरी है ?

प्रोजेक्ट वर्क

स यदि आपके गाँव में क्षेत्र पंचायत ने कोई कार्य कराया है तो उसका पता लगाइए और उस काम के बारे में कुछ बातें लिखिए।

स क्षेत्र स्वास्थ्य रक्षा समिति आपके स्वास्थ्य के लिए क्या-क्या करती है, इसकी सूची बनाइए।

पाठ 4

DHLGYD

नगरीय रहन-सहन एवं नगरपालिकाएँ

गर्मी की छुट्टी के बाद जब मीरा अपने गाँव से शहर जाने लगी तो उसका भाई गोकुल भी मीरा के साथ जाने को तैयार हो गया। गोकुल गाँव में ही पढ़ता है। वह पहली बार नगर जा रहा था। उसकी बस ने नगर में प्रवेश किया तो गोकुल आश्चर्यचकित होकर कभी इधर देखता था तो कभी उधर। उसने कहा- दीदी, नगर में इतनी भीड़ और बड़े-बड़े मकान देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है।

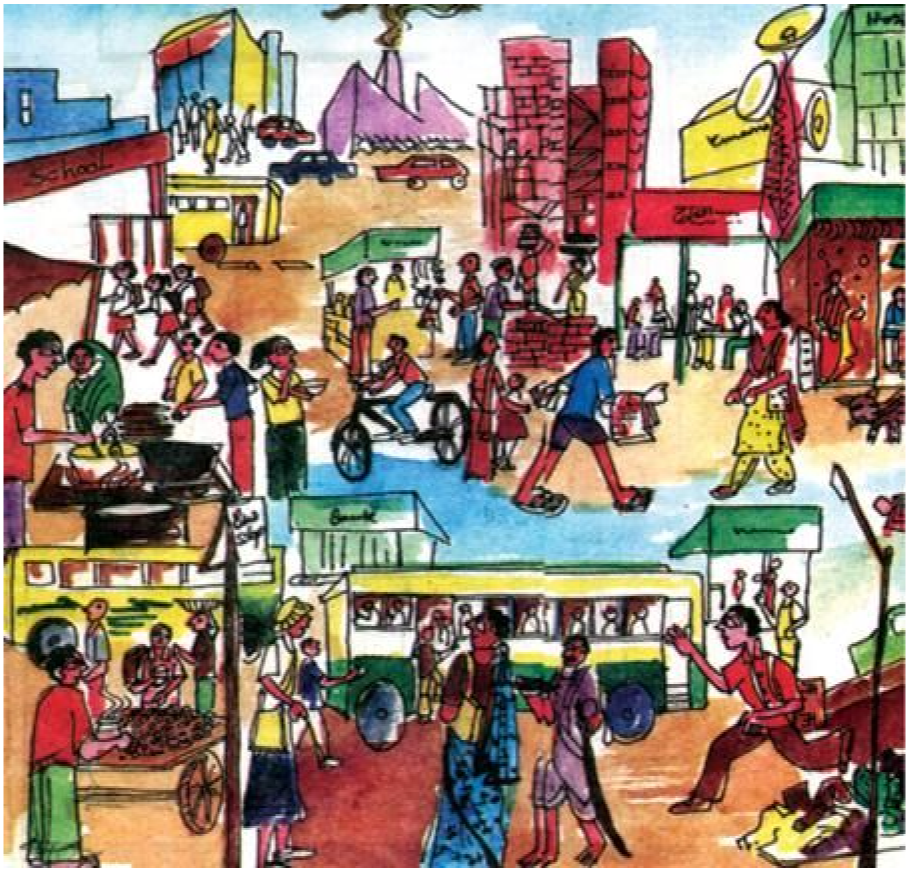

मीरा-अभी तुमने देखा ही क्या है ? यहाँ कई कारखाने हैं और बहुत प्रकार के उद्योग-धन्धे हैं। कुछ लोग तो गाँव से भी यहाँ कार्य करने आते हैं। वे मजदूरी करके मकान एवं सड़कों आदि को बनाने का काम करते हैं।

गोकुल-दीदी, यहाँ तो पैदल चलना भी मुश्किल है-साइकिल, स्कूटर, कारों की भरमार है। सड़कों की हालत भी अच्छी नहीं है। सड़क के किनारे उस नल पर बहुत से आदमी और औरतें अपना बर्तन लिए खड़े हैं। जब इतनी सारी समस्याएँ हैं तो उन्हें दूर करने का काम कौन करता है ?

मीरा-यह काम सभी नगरवासियों को आपसी सहयोग से करना होता है। वे इन समस्याओं पर विचार करते हैं और उन्हें दूर करने के उपाय सोचते हैं। जिस प्रकार गाँवों की भलाई के लिये ग्राम पंचायतें, क्षेत्र पंचायतें तथा जिला पंचायतें होती हैं उसी प्रकार शहरों की भलाई

के कार्यों के लिए नगरपालिकाएँ गठित की जाती हैं। बहुत छोटे नगरों में नगर पंचायत उससे कुछ बड़े नगरों में नगरपालिका परिषद् तथा बहुत बड़े नगरों में नगर निगम होते हैं। जिस प्रकार ग्राम पंचायत में हर वार्ड के लोग अपना प्रतिनिधि चुनते हैं उसी प्रकार नगर भी कई वार्ड में बाँट दिए जाते हैं तथा हर वार्ड से एक सदस्य चुना जाता है।

ऐसे बनी खैरागढ़ नगर पंचायत

यहाँ हम खैरागढ़ की नगर पंचायत के गठन और कार्यों के बारे में पढ़ेंगे। बहुत पहले खैरागढ़ एक गाँव ही था और यहाँ ग्राम पंचायत काम करती थी। पर अब यह एक नगर पंचायत बन गई है। जिस समय खैरागढ़ गाँव को नगर पंचायत बनाया गया उसकी आबादी 10 हजार थी। यह सरकारी नियम है कि जिस शहर या कस्बे की आबादी 5 हजार से एक लाख के बीच होती है वहाँ नगर पंचायत बन सकती है इसलिये खैरागढ़ को नगर पंचायत का दर्जा मिला।

यह समझ लीजिए कि नगर पंचायत शहर की पंचायत जैसी ही है। चूँकि शहर या कस्बे में गाँव से बहुत अधिक संख्या में लोग रहते हैं, इस कारण नगर पंचायत के सदस्य भी अधिक होते हैं। इन सदस्यों की संख्या और अधिकारों में अन्तर होता है।

- पाँच हजार से एक लाख तक की जनसंख्या वाले शहर में नगर पंचायत बनती है। एक नगर पंचायत में सदस्यों की संख्या 10 से 24 तक होती है।
- एक लाख से पाँच लाख तक की जनसंख्या वाले शहर में नगरपालिका परिषद् बनती है। नगरपालिका परिषद् में सदस्यों की संख्या 25 से 55 तक होती है।
- 5 लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहर में नगर निगम बनता है। नगर निगम में सदस्यों की संख्या 60 से 110 तक होती है।

लोगों की समस्याएँ

रिक्शे से घर जाते समय गोकुल बड़ी उत्सुकता से आस-पास देख रहा था। शहर में डामर की पक्की सड़कें थीं, गाँव की धूल भरी सड़कों से काफी अलग। लेकिन सड़क पर कई जगह बड़े-बड़े गड्ढे भी थे। रिक्शा गड्ढे में फँस गया। “धीरे चलना भैया” गोकुल ने रिक्शे

वाले से कहा, "तुम्हारे शहर की सड़कें तो बहुत खराब हैं। कई जगह मोहल्ले के लोग, नल में पानी न आने के कारण परेशान लग रहे थे। उन्हें देखकर गोकुल ने पूछा-नगरपालिका पानी की व्यवस्था को सुधारती क्यों नहीं ?

रिक्शेवाला-"क्या करें भैया ? पहले जो नगर पालिका परिषद् के सदस्य थे, उन्होंने कई काम किए- एक पार्क बनवाया, कई पक्की दुकानें भी बनवाई, पर न तो ये सड़कें ठीक करवाई, न पानी की समस्या पर कुछ ध्यान दिया। रात के समय इन सड़कों पर अंधेरा होता है क्योंकि स्ट्रीट-लाइटों को खराब होने पर बदला नहीं जाता है। पार्क की चहारदीवारी एक तरफ टूट गई है जिसकी मरम्मत काफी दिनों से नहीं हुई है। कूड़ा-कचरा इधर-उधर फैला रहता है। समझ में नहीं आता कि किससे शिकायत करें ?

क्या आप जानते हैं कि आपके मोहल्ले एवं गली में कब और कितनी बार कूड़ा उठाया जाता है ? क्या आपको लगता है कि सभी मोहल्लों में उतनी ही बार सफाई की जाती है एवं कूड़ा उठाया जाता है ? यदि नहीं, तो क्यों ? चर्चा कीजिए-

समस्याएँ किससे कहें ? कैसे सुलझाएँ ?

मीरा के मोहल्ले में गंगाताई रहती थीं। गंगाताई के मोहल्ले तथा आसपास के कई मोहल्ले के लोग मिलकर नगरपालिका अध्यक्ष के पास गए। गंगाताई ने कहा, "हम रोज-रोज पानी की किल्लत से ऊब गए हैं। हमें पता है कि यहाँ के पम्प बदलवाने की जरूरत है। हम सरकार को इसके लिए अर्जी देने आए हैं। इस अर्जी पर 500 लोगों के हस्ताक्षर हैं। आप जब सरकार को अनुदान के लिए लिखें तो हमारी अर्जी भी साथ भेज दें। कम से कम उन्हें पता तो चले कि यहाँ के लोग कितने परेशान हो रहे हैं। अगर अनुदान की अर्जी की एक प्रति हमें मिल सकती है तो हम जिला अधिकारी (डी0एम) और विधायक से भी मिलने की कोशिश करेंगे।

कुछ जगहों की नगरपालिका परिषद् या नगर निगम के विरुद्ध इस शहर के लोग शिकायत करते हैं। शिकायत काम न करने के बारे में हो सकती है या पैसों के दुरुपयोग के बारे में। राज्य की सरकार इन शिकायतों के बारे में जाँच करती है। यदि जाँच में शिकायत सही निकली तो राज्य सरकार उस नगर पालिका परिषद् या नगर निगम को भंग कर सकती है।

नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् और नगर निगम के नियम

नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् और नगर निगम के कुछ नियम कानून हैं। ये नियम कानून राज्य की सरकार बनाती है।

- नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् या नगर निगम 5 वर्षों के लिए बनाई जाती है।

- शहर में रहने वाले वे सभी लोग जिनकी उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक है, नगर पंचायत, नगर पालिका परिषद् व नगर निगम के सदस्यों के चुनाव में वोट डाल सकते हैं।

- शहर में रहने वाला कोई भी व्यक्ति जिसकी उम्र 21 वर्ष से अधिक हो, नगर पंचायत, नगर पालिका परिषद् या नगर निगम का सदस्य बनने के लिए चुनाव लड़ सकता है।

- प्रत्येक नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् या नगर निगम में कम से कम एक तिहाई महिला सदस्य और कुछ अनुसूचित जाति के सदस्य होते हैं।

- नगरपालिका परिषद् का एक अध्यक्ष होता है। वह उसका सदस्य होता है।वह जनता द्वारा चुना जाता है। इसके कुछ पद आरक्षित होते हैं।

- नगर निगम का भी एक अध्यक्ष होता है जो महापौर या मेयर कहलाता है। महापौर जनता द्वारा चुना जाता है।

- हर नगरपालिका परिषद् का एक मुख्य कार्यपालिका अधिकारी होता है और हर नगर निगम का एक आयुक्त। मुख्य कार्यपालिका अधिकारी और आयुक्त जनता द्वारा नहीं चुने जाते, सरकार द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। वे ही नगरपालिका परिषद् और नगर निगम के कार्यों की देख-रेख करते हैं और लेखा-जोखा रखते हैं।

- यदि किसी वजह से नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् या नगर निगम भंग कर दी जाए तो सरकार द्वारा नियुक्त किया गया प्रशासक उसका काम सँभालता है।

नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् और नगर निगम के मुख्य कार्य

क्षेत्र पंचायत की तरह नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् और नगर निगम भी अपनी समितियाँ बनाते हैं। ये समितियाँ अलग-अलग कार्य करती हैं जैसे- पानी की व्यवस्था समिति, सफाई- व्यवस्था समिति, स्वास्थ्य समिति आदि। वार्ड मेम्बर (सदस्य) इन समितियों के सदस्य होते हैं। ये समितियाँ ही इन संस्थाओं के कार्यों के बारे में निर्णय लेती हैं।

नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् और नगर निगम के कार्य निम्नलिखित हैं-

- सड़कों की व्यवस्था, पानी की व्यवस्था, सड़कों पर रोशनी (लाइट) की व्यवस्था करना।
- शहर की साफ-सफाई करवाना, कचरा उठवाना।
- बाजार एवं सब्जी बाजार की सफाई की व्यवस्था करना।
- कांजी हाउस, आवारा मवेशियों की देख-रेख का प्रबंध करना।
- शहर में होने वाले जन्म और मृत्यु का लेखा-जोखा रखना।
- जब शहर में कोई भी बीमारी फैलती है, तो उसे फैलने से रोकने के लिए टीकाकरण, पानी की सफाई आदि का काम कराना।

पुस्तकालय, पाठशाला, बाग, पार्क, बगीचे आदि बनवाना।

चर्चा कीजिए कि नगरों में पार्क होना क्यों आवश्यक है ?

नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् और नगर निगम की आय के साधन

1.शहर में जिनके निज़ी मकान या ज़मीन हैं, उन्हें मकान या ज़मीन पर कर (टैक्स) देना पड़ता है। यह कर उस शहर की नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् या नगर निगम इकट्ठा करती है।

2.पानी, सड़कों की बिजली और शहर की सफाई के लिए लोगों से महीने का टैक्स या कर वसूल किया जाता है।

3.शहर में जो दुकान लगाता है, उसे अपनी दुकानदारी के लिये टैक्स भरना पड़ता है।

4.शहर में चलने वाली सवारी गाड़ियाँ, जिनमें लोग पैसे देकर सफर करते हैं, जैसे- बस, टैम्पो, जीप उनसे यात्री-कर वसूल किया जाता है। यह कर उस शहर से जाने पर या उस शहर तक सफर करने वाले हर यात्री से लिया जाता है।

5.ये संस्थाएँ इन करों के अलावा किसी भी मनोरंजन पर टैक्स या कर ले सकती हैं, जैसे- फिल्म, प्रदर्शनी, सर्कस, नौटंकी आदि पर।

6.इन संस्थाओं को सरकार से अनुदान भी मिलता है।

. शब्दावली

वार्ड -नगर पंचायत, नगर पालिका परिषद् अथवा नगर निगम के सदस्यों के चुनाव के लिए नगर क्षेत्र को खण्डों या भागों में विभाजित कर दिया जाता है, इस खण्ड या भाग को वार्ड कहते हैं।

अभ्यास

1.आपने नगर पंचायत और नगरपालिका परिषद् के बारे में पढ़ा है। दोनों की तुलना करते हुए तालिका को पूरा कीजिए:-

नगर पंचायत और नगर पालिका परिषद् के नियम

नगर पंचायत नगर पालिका परिषद्

1. पाँच साल के लिए बनाई जाती है। ....

2. उस शहर में रहने वाले व्यक्ति वोट दे सकते हैं। ....

3. अट्ठारह या उससे अधिक उम्र वाला व्यक्ति वोट दे सकता है।

....

4. हर वार्ड से एक सदस्य चुना जाता है। ....

5. अध्यक्ष प्रमुख होता है। ....

6. अध्यक्ष नगर की जनता द्वारा चुना जाता है। ....

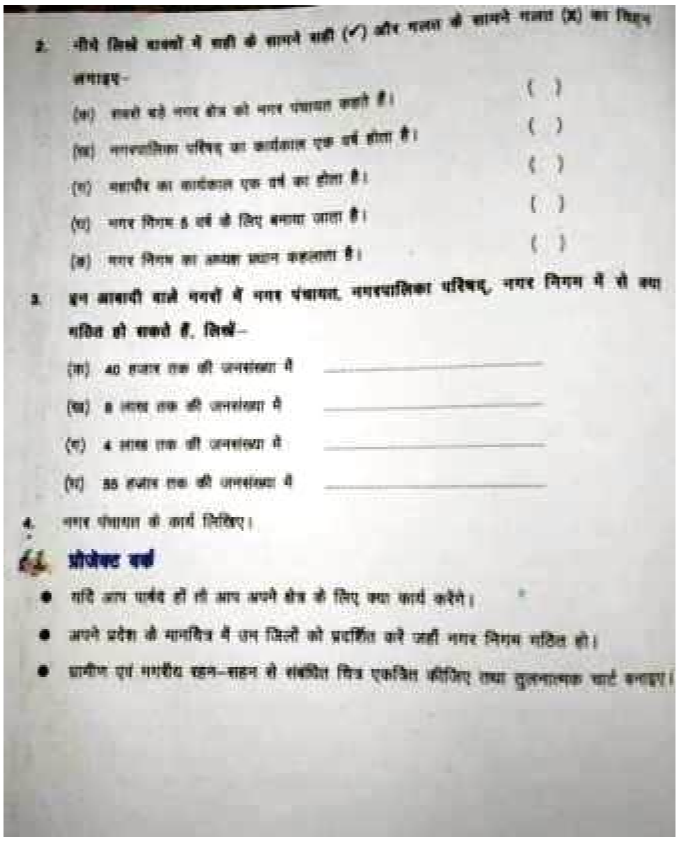

2. नीचे लिखे वाक्यों में सही के सामने सही (✓) और गलत के सामने गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

(क) सबसे बड़े नगर क्षेत्र को नगर पंचायत कहते हैं। ( )

(ख) नगरपालिका परिषद् का कार्यकाल एक वर्ष होता है। ( )

(ग) महापौर का कार्यकाल एक वर्ष का होता है। ( )

(घ) नगर निगम 5 वर्ष के लिए बनाया जाता है। ( )

(ङ) नगर निगम का अध्यक्ष प्रधान कहलाता है। ( )

3. इन आबादी वाले नगरों में नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद्, नगर निगम में से क्या गठित हो सकते हैं, लिखें-

(क) 40 हजार तक की जनसंख्या में ____________

(ख) 8 लाख तक की जनसंख्या में ____________

(ग) 4 लाख तक की जनसंख्या में ____________

(घ) 55 हजार तक की जनसंख्या में ____________

4. नगर पंचायत के कार्य लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क

- यदि आप पार्षद हों तो आप अपने क्षेत्र के लिए क्या कार्य करेंगे।
- अपने प्रदेश के मानचित्र में उन जिलों को प्रदर्शित करें जहाँ नगर निगम गठित हों।
- ग्रामीण एवं नगरीय रहन-सहन से संबंधित चित्र एकत्रित कीजिए तथा तुलनात्मक चार्ट बनाइए।

पाठ 5

DMVD11

जिले का प्रशासन

हमारा प्रदेश एक बड़ा राज्य है। पूरे राज्य का शासन एक स्थान से चलाने में कठिनाई आती है। अतः शासन की सुविधा के लिए इसे कई जिलों में बाँट दिया गया है। प्रदेश के मानचित्र में अपने जिले का नाम देखिए। प्रशासन में जिला बहुत महत्वपूर्ण इकाई है। राज्य की उन्नति जिलों के अच्छे प्रशासन पर निर्भर करती है।

हमारे संविधान के अनुसार चुनी हुई सरकारें 5 वर्ष के लिए होती हैं एवं विभिन्न स्तरों पर उनकी सहायता के लिए सरकारी विभाग के अधिकारी व कर्मचारी होते हैं। यह जनप्रतिनिधियों की तरह जनता द्वारा निश्चित समय के लिए नहीं चुने जाते हैं बल्कि ये विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं एवं चयन प्रक्रिया द्वारा चयनित किए जाते हैं। ये 60 वर्ष की आयु तक अपने पद पर कार्यरत रहते हैं।

एक जिलाधिकारी की दिनचर्या

आजमगढ़ जिले के जिलाधिकारी महेश कुमार का दफ्तर आजमगढ़ शहर में है। वह रोज दस बजे अपने दफ्तर पहुँचते हैं।

आज साढ़े ग्यारह बजे जिले के सभी विभागों के अधिकारियों की बैठक है। यह बैठक जिलाधिकारी महेश कुमार के दफ्तर में है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, कृषि- सभी

विभागों के अधिकारी आए हैं। महेश कुमार ने एक-एक करके हर विभागाध्यक्ष से पिछले महीने किए गए कामों की जानकारी ली। जो काम नहीं हो पाए थे, उनमें आ रही समस्याओं के बारे में पूछा एवं निर्देश दिए। बैठक दो बजे तक चलती रही।

बैठक के बाद महेश कुमार ने फाइलें देखीं। उनकी मेज पर फाइलों का ढेर था। वह एक-एक करके फाइल पढ़ते जा रहे थे। उस पर अपने आदेश भी लिखते जा रहे थे।

एक फाइल में मनकापुर ग्राम पंचायत के सरपंच के विरुद्ध शिकायत थी। महेश कुमार ने फाइल पढ़ी। फिर फोन उठाकर उन्होंने अपने बाबू से कहा, ”जरा जिला पंचायत अधिकारी से बात कराइए।“

अधिकारी की बात सुनकर महेश कुमार ने कहा ”अच्छा ! पंचायत इंस्पेक्टर ने जाँच कर ली है? उसकी रिपोर्ट अभी मुझ तक पहुँची नहीं। जरा भेज दीजिए ताकि मैं कार्यवाही कर सकूँ। एक दो बातें और हुईं।“ फिर महेश कुमार ने फोन रख दिया।

फाइल देखते-देखते तीन बज गए थे। रोज तीन बजे से साढ़े चार बजे तक महेश कुमार जिले के लोगों से मिलते हैं। आजमगढ़ जिले की सभी तहसीलों के लोग अपनी समस्याएँ लेकर जिलाधीश से मिलने आते हैं।

मेसदीहा तहसील का एक छोटा किसान आया है। उसकी जमीन पर किसी दूसरे ने कब्जा कर लिया था। इस किसान ने एक साल पहले तहसीलदार की कचहरी में अर्जी दी थी। वह कई बार तहसीलदार से मिल भी चुका था। पर अब तक उसकी सुनवाई नहीं हुई थी। महेश कुमार ने उससे अर्जी की एक प्रति लेकर रख ली और कहा कि वह खुद इस मामले में तहसीलदार से बात करेंगे।

इतने में एक और किसान वहाँ आया। ”भैया जी, मैं अपने खेत पर कुआँ खुदवाना चाहता हूँ। कुएँ के लिए बैंक से सरकारी लोन भी चाहिए। मैं लोन के लिए अर्जी दे रहा हूँ। मेरे पास केवल तीन एकड़ जमीन है और मैं अनुसूचित जाति का हूँ। मुझे कर्जे में छूट के लिए खसरा, खतौनी और यह प्रमाण पत्र चाहिए। लेकिन लेखपाल ये प्रमाण पत्र नहीं दे रहा है। आप मुझे प्रमाणपत्र दे दें।

तहसील पिपलौदा के कुछ किसान आए थे। मनकापुर में बने बाँध की नहरें पास के गाँवों तक पहुँच गई थीं, पर उनके गाँव तक नहर का पानी नहीं आता था फिर भी सिंचाई कर लग रहा था। वे चाहते थे कि उनके गाँव में भी नहर साफ कराई जाए ताकि उन्हें भी सिंचाई का फायदा मिल पाए।

राज्य सरकार द्वारा बनाए गए नियम-कानून और योजनाओं को जिलाधीश, तहसीलदार और लेखपाल जिले में लागू करते हैं। वे राज्य सरकार द्वारा दिए गए आदेशों का पालन करते हैं। वे स्वयं कोई नियम-कानून या नीति नहीं बदल सकते हैं, न ही कोई नया कानून या योजना बना सकते हैं।

अगली सुबह पाँच बजे महेश कुमार के घर पर फोन आया। कहीं पर रुई के कारखाने में रखे कपास के ढेर में आग लग गई थी। जलती हुई कपास उड़कर आसपास भी जा रही थी। अभी भी आग को रोकने की कोशिश चल रही थी। महेश कुमार ने तय किया कि वह थोड़ी देर में उस स्थान के लिए रवाना होंगे। उन्होंने पुलिस अधीक्षक और सिविल सर्जन से साथ चलने को कहा। महेश कुमार ने जले हुए घरों के मालिकों को बीस-बीस हजार रुपये का मुआवजा देने की घोषणा की। आग लगने की जाँच करवाने का भी वादा किया। महेश कुमार दोनों घायल मजदूरों से भी मिले। उन्होंने उन दोनों को दस-दस हजार रुपये देने की घोषणा की।

वापस आजमगढ़ लौटते समय महेश कुमार दो-तीन गाँवों में रुके। वहाँ के किसानों और पंचों से उनकी समस्याओं पर चर्चा भी की। तहसील से निकलकर मनकापुर में सरपंच के खिलाफ शिकायत के बारे में पता किया। शाम को अंधेरा होने के बाद ही वह आजमगढ़ वापस पहुँच पाए।

जिले का शासन

जिलाधिकारी जिले के समस्त अधिकारियों की सहायता से जिले का शासन चलाता है। जनता के हित के सभी कार्यों को जिलाधिकारी ही करता है। वह दौरों तथा बैठक के द्वारा जनता से सम्पर्क करता है। जिलाधिकारी समय-समय पर तहसील दिवस व अन्य बैठकों के द्वारा जनप्रतिनिधियों से विचार विमर्श व विभिन्न विभागों के अधिकारियों के कार्यों की समीक्षा भी करता है।

जो आपने पढ़ा, उसके आधार पर बताइए कि जिलाधिकारी क्या-क्या काम करता है ? क्या

जिलाधिकारी कोई नया कानून बना सकता है ?

आपके जिले का जिलाधिकारी कौन है ?

जिला प्रशासन के कार्य

1.जिले में शान्ति और व्यवस्था बनाए रखना।

2.भूमि व्यवस्था जैसे- भूमि माप, खसरा, खतौनी का रख-रखाव व लगान की वसूली करना।

3.नागरिक सुविधा व सभी को विकास के समान अवसर देना।

हम सभी के लिए पानी, बिजली, सड़क, स्वास्थ्य एवं शिक्षा की सुविधा आवश्यक है। सभी जीवन की सुरक्षा चाहते हैं। इन कार्यों के लिए जिले में बहुत से सरकारी विभाग, अधिकारी व कर्मचारी होते हैं।

आइए जिले के कुछ अन्य अधिकारियों व उनके कार्यों को जानें-

जिला प्रशासन के अधिकारी व उनके कार्य

ये अपने-अपने क्षेत्र में काम करते हैं। पुलिस, लोगों के जान-माल व अधिकारों की सुरक्षा करती है। कानून तोड़ने वालों पर पुलिस मुकदमा चलाती है तथा न्यायालय द्वारा उसे सजा

मिलती है। सजा मिलने पर अपराधियों को जेल भी जाना पड़ता है। जिले की जेलों में अपराधियों को सुधार कर अच्छे नागरिक बनाने का प्रयास किया जाता है। जेल के मुख्य अधिकारी जेलर व डिप्टी जेलर होते हैं।

आपके क्षेत्र में कौन सा पुलिस थाना है ? नाम लिखिए।

[illegible]

1. जिले के प्रमुख अधिकारी कौन-कौन हैं ?
2. जिला प्रशासन के कार्य लिखिए।
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
   - [illegible] होता है।
   - [illegible] का प्रयास किया जाता है।
   - [illegible] करते हैं।
7. [illegible]
8. सही उत्तर के सामने सही (✓) का चिह्न लगाइए-
   (अ) [illegible]
   क. आयुक्त ख. जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
   ग. जिलाधिकारी घ. मुख्य विकास अधिकारी
   (ब) [illegible]
   क. पुलिस अधीक्षक ख. लोक अदालत
   ग. जेलर घ. मुख्य चिकित्साधिकारी
9. पता करके लिखिए-
   - अपने जिलाधिकारी का नाम ____________
   - निकटतम थाने का नाम ____________
   - मुख्य चिकित्साधिकारी का नाम ____________
   - जिले के पुलिस अधीक्षक का नाम ____________

प्रोजेक्ट कार्य-

- [illegible]
- [illegible]

पाठ 6

DN592N

यातायात एवं सुरक्षा

आज कविता को स्कूल पहुँचने में बहुत देर हो गई। वह हाँफती हुई कक्षा में पहुँची। अध्यापक ने पूछा, अरे ! कविता आज तुम्हें स्कूल आने में देर कैसे हो गई ? कविता ने बताया कि आज सड़क पर बहुत जाम लगा हुआ था। चारों ओर से रिक्शा, गाड़ी, स्कूटर, साइकिल, बस, कार इत्यादि इकट्ठे हो गए थे। मैं बहुत मुश्किल से उस भीड़ से निकल सकी। थोड़ा आगे आने पर पता चला कि दो गाड़ियाँ आपस में टकरा गईं थीं जिसमें काफी लोगों को चोटें भी आई हैं। मैं बहुत घबरा गई थी।

मारुति खंभे से टकराई, दो घायल

ट्रक से कुचल कर दो युवकों की मौत

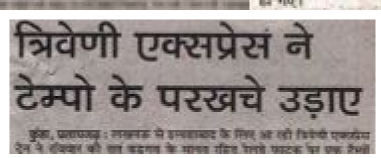
त्रिवेणी एक्सप्रेस ने टेम्पो के परखचे उड़ाए

झूंसी और करछना
हादसे, चार की मौ

- ट्रैक्टर ट्राली पलटी
- मोटरसाइकिल पुलिया से नीचे गिरी

राजधानी एक्स. से टकराई स्कार्पियो

मिनी-बस पलटी
चार घायल

बच्चों ! आपने सोचा ऐसा क्यों हुआ ? लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण दिनों दिन भीड़ बढ़ती चली जा रही है। हम सभी प्रतिदिन अखबार , रेडियो, टी0वी0 के माध्यम से सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं के बारे में पढ़ते, सुनते और देखते हैं। कभी-कभी यह घटनाएँ हमारी आँखों के सामने भी होती हैं। जैसे- आज कविता ने देखा।

दुर्घटना जो आपके साथ भी हो सकती है!

रमेश अपने मित्र के साथ किसी काम के लिए जा रहे थे। रास्ते में एक जगह सड़क दुर्घटना हुई थी। उन्होंने अपने मित्र से कहा, हमें घायल व्यक्ति की मदद करनी चाहिए। उनके मित्र ने जवाब दिया कि इतने लोग हैं यहाँ, कोई न कोई मदद कर ही देगा। यदि हम लोग समय पर ऑफिस नहीं पहुँचे, तो हमारा काम आज नहीं हो पाएगा। अभी वे ऑफिस पहुँचे ही थे कि मित्र के मोबाइल पर घर से फोन आया। पता चला कि उनके पिता का एक्सीडेंट हुआ है, और उन्हें बहुत चोट आयी है। जब उन्होंने यह पूछा कि एक्सीडेंट किस जगह पर हुआ तो जवाब सुनकर उन दोनों का चेहरा दर्द और पश्चाताप से भर उठा। उन्होंने भीड़ से घिरे जिस जरूरतमंद की मदद नहीं की थी, वे उनके ही पिता थे।

क्या आप भी सड़क दुर्घटना में घायल किसी अनजान व्यक्ति की मदद सिर्फ इस डर से नहीं करते कि पुलिस पूछताछ करेगी ?

- क्या आपने कभी सोचा है कि सही समय पर आपकी मदद किसी की जान बचा सकती है ?
- बिना किसी भय के हमें घायल व्यक्ति को डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए। मदद करने वाले व्यक्ति से पुलिस सिर्फ घटना से जुड़ी सामान्य जानकारी चाहती है।
- मोटर वेहिकल एक्ट के सेक्शन 134 में कहा गया है कि जिसकी गाड़ी से दुर्घटना हुई है उसका दायित्व है कि वह घायल को डॉक्टर के पास ले जाए और पुलिस को सूचना दे। डॉक्टर की जिम्मेदारी है कि वह बिना देर किए घायल का इलाज करे। ऐसा न करने पर तीन महीने की कैद और जुर्माने का प्रावधान है।

ज्यादातर दुर्घटनाएं लापरवाही व जल्दबाजी के कारण होती हैं। कभी-कभी एक छोटी सी गलती बड़ी दुर्घटना का कारण बन जाती है। यदि हम सावधान रहें तो इससे बचा जा सकता है। इसके लिए यातायात के कुछ नियम बनाए गए हैं जिनका पालन करके न केवल हम सुरक्षित रहेंगे बल्कि दूसरे लोगों का भी जीवन बचा सकते हैं।

आइए, यातायात के कुछ नियमों को जानें-

- सड़क पर सदैव अपनी बायीं ओर से चलें।
- सड़क पार करने के लिए सुरक्षित स्थान चुनें।
- सड़क पार करते समय ट्रैफिक की ओर देखें और उसकी आवाज पर ध्यान दें।
- यदि फुटपाथ हो तो उसका प्रयोग करें और यदि न हो तो अपनी बायीं तरफ सड़क के किनारे से चलें।
- सड़क पार करते समय पहले अपनी दायीं ओर देखें फिर बायीं ओर देखें और पुनः दायीं ओर देखें, ट्रैफिक नहीं आ रहा हो तो जल्दी से सड़क पार करें।
- महानगरों के चौराहों पर टैaफिक सिग्नल (लाल/हरा) देखकर चौराहा पार करें।
- यदि सामने लाल बत्ती जल रही हो, तो चौराहा कदापि न पार करें।
- रात में वाहन चलाते समय संकेतक का प्रयोग अवश्य करें।
- साइकिल या मोटर साइकिल सवार व्यक्ति को मोड़ पर हाथ से इशारा करके मुड़ना चाहिए।

पैदल, साइकिल, रिक्शा, ताँगा, मोटर साइकिल, मोपेड, ऑटो रिक्शा, जीप, ट्रैक्टर, ट्रक, बस आदि से होने वाली सड़क दुर्घटनाओं के सम्बन्ध में कक्षा में

चर्चा करें।

वाहनों की संख्या में तेजी से होने वाली बढ़ोत्तरी के साथ-साथ सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। सड़क पर चलने वाले बस यात्री और मोटर साइकिल या स्कूटर चालक भी इन दुर्घटनाओं के लिए जिम्मेदार होते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि जब बस यात्री चलती बस से उतरने का प्रयास करते हैं, तो वे मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ते हैं। इस प्रकार वे स्वयं खतरा मोल लेते हैं और कभी- कभी उन्हें अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ता है। बस यात्रा करते समय नीचे दिए गए सुझावों का पालन करके दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है-

□बस के पायदान या बस के पीछे बनी सीढ़ी पर लटक कर यात्रा न करें।

□चलती बस से न उतरें और न चढ़ें। बस रुक जाने पर ही बस में चढ़ें या उतरें। चलती बस में पीछे की ओर मुँह करके न उतरें।

□बस की खिड़की से बाहर न तो झाँके और न ही शरीर का कोई हिस्सा बाहर निकालें।

□चलती बस में ड्राइवर से बातें न करें।

आइए जानें-सड़क पर वाहन चलाते समय हम क्या करें, क्या न करें-

अतः यातायात के नियमों का पालन न करने से कई प्रकार की दुर्घटनाएं हो सकती हैं। दुर्घटना से प्रभावित व्यक्ति को आर्थिक नुकसान होता है। कभी-कभी दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति आजीवन विकलांग हो जाता है और उसके भरण-पोषण की जिम्मेदारी परिवार को उठानी पड़ती है।

सड़क पर चलने वाले वाहनों के शोर-शराबे (ध्वनि प्रदूषण) एवं निष्कासित गैस, धुएं आदि से होने वाले प्रदूषण पर कक्षा में चर्चा करें।

ऐसा करें

□मोटर साइकिल/स्कूटर चलाते समय हेलमेट अवश्य पहनें।

□कार चालक एवं इसमें बैठने वाले लोग सीट बेल्ट अवश्य बाँधें।

□एम्बुलेंस, दमकल और पुलिस जैसे- आपात ड्यूटी पर तैनात वाहनों को रास्ता दें।

□खतरे के संकेतों एवं सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन अवश्य करें।

□वाहन के ब्रेक व इंजन हमेशा चेक कराते रहें क्योंकि इनकी खराबी दुर्घटना का कारण बनती है।

□वाहन चालकों को समय-समय पर नेत्र जाँच करानी चाहिए।

ऐसा न करें

- दुपहिया वाहनों पर दो से अधिक व्यक्ति न बैठें।
- वाहन तेज गति से न चलाएं।
- नशीली दवाओं का सेवन करके या शराब (अल्कोहल) पीकर वाहन न चलाएं।
- वाहन चलाते समय मोबाइल फोन से बातें न करें।
- असावधानी, थकान, गुस्सा, मानसिक तनाव में वाहन न चलाएं।
- वाहन चलाते समय संगीत न सुनें।

रेल सुरक्षा

रेल एक शक्तिशाली तथा तेज गति वाला यातायात का साधन है। इसके द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर शीघ्र ही पहुँचा जा सकता है। रेलगाड़ी से यात्रा करने में बहुत आनन्द आता है परन्तु यात्रा करते समय हमें कुछ सावधानियाँ अवश्य रखनी चाहिए-

- टिकट लेकर ही यात्रा करें।
- चलती रेल पर चढ़ने और उतरने का प्रयास नहीं करना चाहिए क्योंकि इस प्रयास से व्यक्ति विकलांग हो सकता है तथा मृत्यु भी हो सकती है।
- रेल के दरवाजे पर खड़े होकर यात्रा नहीं करनी चाहिए।
- रेल की बोगियों की छत पर बैठकर यात्रा न करें।
- रेल की खिड़कियों से अपने शरीर का कोई अंग बाहर न निकालें क्योंकि बाहर की किसी चीज से टकराकर चोट लग सकती है।
- चलती ट्रेन की जंजीर खींच कर या हौज पाइप काट कर व्यवधान उत्पन्न नहीं करना चाहिए। इससे यात्रियों को अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने में देर हो सकती है।
- रेल में यात्रा करते समय कभी भी किसी अपरिचित द्वारा दिया गया पदार्थ न खाना चाहिए, न पीना और न ही सूँघना चाहिए। हो सकता है कि उसमें कुछ नशीला पदार्थ मिला दिया गया हो जिससे व्यक्ति बेहोश हो जाए और उसका सामान लूट लिया जाए।
- यात्रा करते समय अपने सामान तथा बच्चों की सुरक्षा स्वयं करनी चाहिए, जहाँ तक हो सके आवश्यक और कम सामान लेकर यात्रा करनी चाहिए। रात्रि में सामान को जंजीर से बाँध कर सुरक्षित रखा जा सकता है।
- बोगी या प्लेटफार्म पर पड़ी किसी लावारिस वस्तु को छूना नहीं चाहिए, इस प्रकार की पड़ी लावारिस वस्तु की सूचना रेलवे सुरक्षा बल को देनी चाहिए।

- रेल में कभी भी कोई ज्वलनशील पदार्थ (जिसमें आग लगने की प्रबल सम्भावना हो) जैसे स्टोव या गैस का सिलेन्डर लेकर यात्रा नहीं करनी चाहिए।

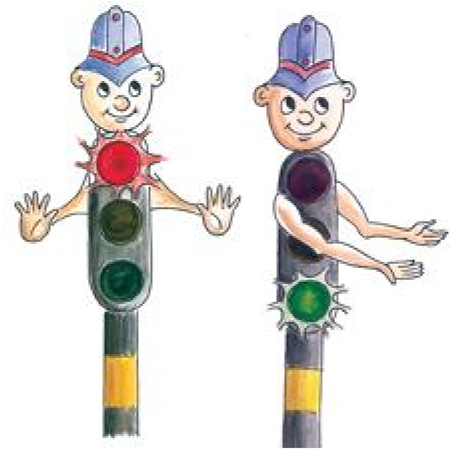

बच्चों ! आपने सोचा ऐसा क्यों हुआ ? लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण दिनों दिन भीड़ बढ़ती चली जा रही है। हम सभी प्रतिदिन अखबार , रेडियो, टी0वी0 के माध्यम से सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं के बारे में पढ़ते, सुनते और देखते हैं। कभी-कभी यह घटनाएँ हमारी आँखों के सामने भी होती हैं। जैसे- आज कविता ने देखा।

दुर्घटना जो आपके साथ भी हो सकती है!

रमेश अपने मित्र के साथ किसी काम के लिए जा रहे थे। रास्ते में एक जगह सड़क दुर्घटना हुई थी। उन्होंने अपने मित्र से कहा, हमें घायल व्यक्ति की मदद करनी चाहिए। उनके मित्र ने जवाब दिया कि इतने लोग हैं यहाँ, कोई न कोई मदद कर ही देगा। यदि हम लोग समय पर ऑफिस नहीं पहुँचे, तो हमारा काम आज नहीं हो पाएगा। अभी वे ऑफिस पहुँचे ही थे कि मित्र के मोबाइल पर घर से फोन आया। पता चला कि उनके पिता का एक्सीडेंट हुआ है, और उन्हें बहुत चोट आयी है। जब उन्होंने यह पूछा कि एक्सीडेंट किस जगह पर हुआ तो जवाब सुनकर उन दोनों का चेहरा दर्द और पश्चाताप से भर उठा। उन्होंने भीड़ से घिरे जिस जरूरतमंद की मदद नहीं की थी, वे उनके ही पिता थे।

- क्या आप भी सड़क दुर्घटना में घायल किसी अनजान व्यक्ति की मदद सिर्फ इस डर से नहीं करते कि पुलिस पूछताछ करेगी ?

- क्या आपने कभी सोचा है कि सही समय पर आपकी मदद किसी की जान बचा सकती है ?

- बिना किसी भय के हमें घायल व्यक्ति को डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए। मदद करने वाले व्यक्ति से पुलिस सिर्फ घटना से जुड़ी सामान्य जानकारी चाहती है।

- मोटर वेहिकल एक्ट के सेक्शन 134 में कहा गया है कि जिसकी गाड़ी से दुर्घटना हुई है उसका दायित्व है कि वह घायल को डॉक्टर के पास ले जाए और पुलिस को सूचना दे। डॉक्टर की जिम्मेदारी है कि वह बिना देर किए घायल का इलाज करे। ऐसा न करने पर तीन महीने की कैद और जुर्माने का प्रावधान है।

ज्यादातर दुर्घटनाएं लापरवाही व जल्दबाजी के कारण होती हैं। कभी-कभी एक छोटी सी गलती बड़ी दुर्घटना का कारण बन जाती है। यदि हम सावधान रहें तो इससे बचा जा सकता है। इसके लिए यातायात के कुछ नियम बनाए गए हैं जिनका पालन करके न केवल हम सुरक्षित रहेंगे बल्कि दूसरे लोगों का भी जीवन बचा सकते हैं।

आइए, यातायात के कुछ नियमों को जानें-

- सड़क पर सदैव अपनी बायीं ओर से चलें।
- सड़क पार करने के लिए सुरक्षित स्थान चुनें।
- सड़क पार करते समय ट्रैफिक की ओर देखें और उसकी आवाज पर ध्यान दें।
- यदि फुटपाथ हो तो उसका प्रयोग करें और यदि न हो तो अपनी बायीं तरफ सड़क के किनारे से चलें।
- सड़क पार करते समय पहले अपनी दायीं ओर देखें फिर बायीं ओर देखें और पुनः दायीं ओर देखें, ट्रैफिक नहीं आ रहा हो तो जल्दी से सड़क पार करें।
- महानगरों के चौराहों पर टैªफिक सिग्नल (लाल/हरा) देखकर चौराहा पार करें।
- यदि सामने लाल बत्ती जल रही हो, तो चौराहा कदापि न पार करें।
- रात में वाहन चलाते समय संकेतक (प्दकपबंजवत) का प्रयोग अवश्य करें।
- साइकिल या मोटर साइकिल सवार व्यक्ति को मोड़ पर हाथ से इशारा करके मुड़ना चाहिए।

पैदल, साइकिल, रिक्शा, ताँगा, मोटर साइकिल, मोपेड, ऑटो रिक्शा, जीप, ट्रैक्टर, ट्रक, बस आदि से होने वाली सड़क दुर्घटनाओं के सम्बन्ध में कक्षा में चर्चा करें।

वाहनों की संख्या में तेजी से होने वाली बढ़ोत्तरी के साथ-साथ सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। सड़क पर चलने वाले बस यात्री और मोटर

साइकिल या स्कूटर चालक भी इन दुर्घटनाओं के लिए जिम्मेदार होते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि जब बस यात्री चलती बस से उतरने का प्रयास करते हैं, तो वे मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ते हैं। इस प्रकार वे स्वयं खतरा मोल लेते हैं और कभी- कभी उन्हें अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ता है। बस यात्रा करते समय नीचे दिए गए सुझावों का पालन करके दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है-

बस के पायदान या बस के पीछे बनी सीढ़ी पर लटक कर यात्रा न करें।

चलती बस से न उतरें और न चढ़ें। बस रुक जाने पर ही बस में चढ़ें या उतरें। चलती बस में पीछे की ओर मुँह करके न उतरें।

बस की खिड़की से बाहर न तो झाँके और न ही शरीर का कोई हिस्सा बाहर निकालें।

चलती बस में ड्राइवर से बातें न करें।

आइए जानें-सड़क पर वाहन चलाते समय हम क्या करें, क्या न करें-

अतः यातायात के नियमों का पालन न करने से कई प्रकार की दुर्घटनाएं हो सकती हैं। दुर्घटना से प्रभावित व्यक्ति को आर्थिक नुकसान होता है। कभी-कभी दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति आजीवन विकलांग हो जाता है और उसके भरण-पोषण की जिम्मेदारी परिवार को उठानी पड़ती है।

सड़क पर चलने वाले वाहनों के शोर-शराबे (ध्वनि प्रदूषण) एवं निष्कासित गैस, धुएं आदि से होने वाले प्रदूषण पर कक्षा में चर्चा करें।

ऐसा करें

मोटर साइकिल/स्कूटर चलाते समय हेलमेट अवश्य पहनें।

कार चालक एवं इसमें बैठने वाले लोग सीट बेल्ट अवश्य बाँधें।

एम्बुलेंस, दमकल और पुलिस जैसे- आपात ड्यूटी पर तैनात वाहनों को रास्ता दें।

खतरे के संकेतों एवं सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन अवश्य करें।

वाहन के ब्रेक व इंजन हमेशा चेक कराते रहें क्योंकि इनकी खराबी दुर्घटना का कारण बनती है।

वाहन चालकों को समय-समय पर नेत्र जाँच करानी चाहिए।

ऐसा न करें

- दुपहिया वाहनों पर दो से अधिक व्यक्ति न बैठें।
- वाहन तेज गति से न चलाएं।
- नशीली दवाओं का सेवन करके या शराब (अल्कोहल) पीकर वाहन न चलाएं।
- वाहन चलाते समय मोबाइल फोन से बातें न करें।
- असावधानी, थकान, गुस्सा, मानसिक तनाव में वाहन न चलाएं।
- वाहन चलाते समय संीत न सुनें।

रेल सुरक्षा

रेल एक शक्तिशाली तथा तेज गति वाला यातायात का साधन है। इसके द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर शीघ्र ही पहुँचा जा सकता है। रेलगाड़ी से यात्रा करने में बहुत आनन्द आता है परन्तु यात्रा करते समय हमें कुछ सावधानियाँ अवश्य रखनी चाहिए-

- टिकट लेकर ही यात्रा करें।
- चलती रेल पर चढ़ने और उतरने का प्रयास नहीं करना चाहिए क्योंकि इस प्रयास से व्यक्ति विकलांग हो सकता है तथा मृत्यु भी हो सकती है।
- रेल के दरवाजे पर खड़े होकर यात्रा नहीं करनी चाहिए।
- रेल की बोगियों की छत पर बैठकर यात्रा न करें।
- रेल की खिड़कियों से अपने शरीर का कोई अंग बाहर न निकालें क्योंकि बाहर की किसी चीज से टकराकर चोट लग सकती है।
- चलती ट्रेन की जंजीर खींच कर या हौज पाइप काट कर व्यवधान उत्पन्न नहीं करना चाहिए। इससे यात्रियों को अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने में देर हो सकती है।
- रेल में यात्रा करते समय कभी भी किसी अपरिचित द्वारा दिया गया पदार्थ न खाना चाहिए, न पीना और न ही सूँघना चाहिए। हो सकता है कि उसमें कुछ नशीला पदार्थ मिला दिया गया हो जिससे व्यक्ति बेहोश हो जाए और उसका सामान लूट लिया जाए।
- यात्रा करते समय अपने सामान तथा बच्चों की सुरक्षा स्वयं करनी चाहिए, जहाँ तक हो सके आवश्यक और कम सामान लेकर यात्रा करनी चाहिए। रात्रि में सामान को जंजीर से बाँध कर सुरक्षित रखा जा सकता है।

- बोगी या प्लेटफार्म पर पड़ी किसी लावारिस वस्तु को छूना नहीं चाहिए, इस प्रकार की पड़ी लावारिस वस्तु की सूचना रेलवे सुरक्षा बल को देनी चाहिए।

- रेल में कभी भी कोई ज्वलनशील पदार्थ (जिसमें आग लगने की प्रबल सम्भावना हो) जैसे स्टोव या गैस का सिलेन्डर लेकर यात्रा नहीं करनी चाहिए।

स्टोव गैस सिलेण्डर केरोसिन/पेट्रोल

बच्चों, रेल की सम्पत्ति आपकी भी तो है। अगर उसको नुकसान पहुँचाया तो आपका भी तो नुकसान होगा। इसलिये बोगी के अन्दर प्रयुक्त किसी भी सामान जैसे पंखा, ट्यूबलाइट, नल तथा सीट इत्यादि को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए।

आइए, जापान की एक घटना के बारे में जानें-

एक विदेशी पर्यटक ने अपनी जापान यात्रा के संस्मरण सुनाते हुए कहा है कि जब वह जापान में एक ट्रेन से यात्रा कर रहा था तो उसने अच्छी वेशभूषा धारण किए हुए एक जापानी को टेªन की एक फटी हुई सीट सिलते हुए देखा। विदेशी पर्यटक ने उस जापानी से पूछा, ”ट्रेन की सीट की सिलाई का काम आप क्यों कर रहे हैं? यह तो रेलवे विभाग का दायित्व है।“ प्रश्न के उत्तर में जापानी ने सहज रूप में कहा, ”यह सीट और ट्रेन जापान की है तथा जापान मेरा देश है। इस तरह यह सीट भी तो मेरी हुई। इस समय संयोगवश सुई-धागा मेरे पास था, सो मैंने अपनी सीट की सिलाई कर ली तो इसमें बुराई क्या है?“

इसके अतिरिक्त यदि आप यात्रा नहीं कर रहे हैं और रेल गुजरने वाले मार्ग के पास हैं तो ध्यान रखें कि-

- रेलगाड़ी एक सेकेण्ड में 25 मीटर चलती है जबकि आप एक सेकेण्ड में अधिक से अधिक 2.8 मीटर चल सकते हैं। इस प्रकार आपको रेलवे क्रासिंग को पार करने में 6-7

सेकेण्ड लग सकते हैं जबकि इतने ही समय में रेलगाड़ी 150-175 मीटर तक चलकर रेलवे फाटक पर पहुँच सकती है तथा आपके देखते ही देखते गम्भीर दुर्घटना घट सकती है।

रेलवे लाइन पार करने से पहले इन संकेतों पर ध्यान दें

गति अवरोधक

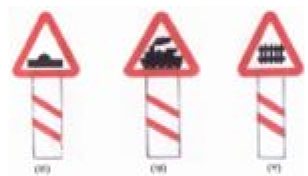

बिना चौकीदार वाला फाटक

चौकीदार वाला फाटक

□रेलवे लाइन वहीं से पार करना चाहिए जहाँ पर फाटक बना होता है।

□यदि फाटक बन्द हो तो स्वयं लाइन पार करने या वाहन पार कराने का प्रयास न करें।

□मानवरहित/बिना गेट की क्रॉसिंग हो तो बहुत अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। लाइन पार करते समय अपने दोनों ओर अवश्य देख लें कि टेªन आ तो नहीं रही है।

□रुकी हुई टेªन के नीचे से दूसरी तरफ जाने की कोशिश न करें।

□रेल पटरियों के साथ बिछे तारों को न छुएं, उसमें विद्युत करेन्ट हो सकता है।

□एक प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफार्म परजाने के लिए ओवरब्रिज का प्रयोग करना चाहिए।

□हमें प्लेटफार्म की सफाई का भी ध्यान रखना चाहिए।

बच्चों, अगर हम थोड़ी सी सावधानी रखेंगे तो राष्ट्र की हानि के साथ-साथ स्वयं के कष्ट से भी बचे रहेंगे।

स्वयं जानिए कि आप सुरक्षा के प्रति कितना सजग हैं, आप जो करते हैं उस पर सही (□) का चिह्न लगाइए-

आप क्या करते हैं ?।ठब्

हमेशाकभी-कभीकभी नहीं

1.साइकिल पर दो या दो से अधिक लोग बैठकर चलते हैं।

2.साइकिल की हैंडिल छोड़कर कलाबाजी करते हुए चलते हैं।

3.भारी व बड़े वाहनों से आगे निकलने की कोशिश करते हैं।

4.बड़े वाहनों को पीछे से पकड़कर साथ चलने की कोशिश करते हैं।

5.सड़क पर मुड़ने से पहले हाथ से इशारा करते हैं।

6.सड़क पार करते समय ध्यान से दाएँ, बाएँ फिर दाएँ देखते हैं।

7.सड़क पर बाएँ से चलते हैं।

8.यदि जेब्रा क्रासिंग है तो पैदल सड़क पार करने के लिए केवल

इसी का उपयोग करते हैं।

9.सड़क पर क्रिकेट खेलते हैं।

10.सड़क के बीच खड़े होकर दोस्तों से बात करते हैं।

11.चलती हुई बस पर चढ़ते और उतरते हैं।

12.बस के पायदान या पीछे बनी सीढ़ी पर लटककर यात्रा करते हैं।

13.रेल-फाटक बन्द होने पर भी रेलवे लाइन पार करने का प्रयास करते हैं।

14.चलती बस से सिर व हाथ बाहर निकालते हैं।

15.जब आप रात में बाहर निकलते हैं तो हल्के रंग के कपड़े पहनते हैं।

16.दिन के समय गहरे/चटक रंग के कपड़े पहनकर बाहर जाते हैं।

उत्तर तालिका से अपने उत्तर का मिलान करें और यह जानें कि आपका उत्तर हमेशा क्या होना चाहिए

१. C	२. C	३. C	४. C	५. A	६. A	७. A	८. A
९. C	१०. C	११. C	१२. C	१३. C	१४. C	१५. A	१६. A

इन्हें भी जानें–

यातायात प्राधिकारी जिन स्थानों को उचित समझते है उन स्थानों पर यातायात संकेतक (Traffic signal) लगाते है। जिनके पालन से हम सड़क पर सुरक्षित चल सकते है। आइए कुछ चिह्न और संकेतों को देखें व समझें–

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –
   - (क) सड़क दुर्घटनाएँ क्यों होती है ?
   - (ख) सड़कों पर यातायात के साधनों की अधिकता के क्या कारण है ?
   - (ग) सड़क दुर्घटना से बचाव के पाँच उपाय लिखिए।
   - (घ) ध्वनि प्रदूषण का कारण लिखिए।
   - (ङ) रेल से यात्रा करते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?
   - (च) सड़क शिष्टाचार से आप क्या समझते है ?
2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –
   - (क) सड़क पर सदैव __________ से चलें।
   - (ख) सड़क दुर्घटना से बचने के लिए __________ का पालन करें।
   - (ग) वाहनों से निष्कासित __________ से वायु प्रदूषण होता है।
   - (घ) चलती बस में __________ से बातें न करें।
   - (ङ) चलती ट्रेन की __________ खींच कर या __________ काट कर व्यवधान उत्पन्न नहीं करना चाहिए।
3. सत्य/असत्य कथन पर निशान लगाइए –
   - (क) बस के पीछे बनी सीढ़ी पर लटक कर यात्रा न करें। (सत्य/असत्य)
   - (ख) सड़क पर अपने दाहिने ओर से चलना चाहिए। (सत्य/असत्य)
   - (ग) सड़क पार करते समय सुरक्षित स्थान चुनें। (सत्य/असत्य)
   - (घ) स्कूटर/मोटर साइकिल पर दो व्यक्ति से अधिक नहीं बैठने चाहिए। (सत्य/असत्य)
   - (ङ) सड़क पर साइकिल मौज-मस्ती के साथ चलाना चाहिए। (सत्य/असत्य)
   - (च) बोगी और प्लेटफार्म पर पड़ी लावारिस वस्तु को छूना चाहिए। (सत्य/असत्य)
   - (छ) रेल फाटक बन्द होने पर लाइन पार नहीं करनी चाहिए। (सत्य/असत्य)

प्रोजेक्ट वर्क

- सड़क पर वाहन चलाते समय 'क्या करें' और 'क्या न करें' पर एक चार्ट बनाएं तथा अपनी कक्षा में उसे प्रदर्शित करें।
- सड़क यातायात चिह्नों के चित्र बनाकर उनकी उपयोगिता के बारे में लिखिए।

Table of Contents

Untitled-18